چو انسان نیست یک لمحه آرام
بود و عمرش چو موج بحر ناکام

ब्रह्मज्ञान विवेकिनोऽमलाधियः कु
र्वन्त्यहो दुष्करं यन्मुंचंत्युप भोग
कांचन धनान्येकांततो निःस्पृहाः
न प्राप्तानि पुरा न संप्रति नच प्रा
प्तौ दृढ प्रत्ययो वाञ्छा मात्र परि
ग्रहाण्यपि परं त्यक्तुं न शक्तावयं
॥१०८॥

به صاحب عقل و انصاف از حق افسوس می آید
زر و زیور زن و پوشش صندل و بستر نازکی
بماند مثل برگ خشک دل در کس نمیدارد
نه حاصل شد کنون یا بعد آینده چه امید است
کنند گفتن تمام گر از ترک دنیا تا چه میباشد

کنند گو ترک هنگام صدق بس افسوس می آید
ز خوشبوی و تنبول و ترک بس افسوس می آید
مرا حاصل شد زینها بس افسوس می آید
همینکه بس گذشتن خویش بس افسوس می آید
وسیله بر ترک اهل عقلان زبس افسوس می آید

व्याघ्रीव तिष्ठति जरा परितर्जयन्ती
रोगाश्च शत्रव इव प्रहरन्ति देह
म् ॥ आयुः परिस्रवति भिन्न घटा
दिवाम्भो लोक स्तथा प्यहितमा
चरतीति चित्रम् ॥१०९॥

چو شیر این پیر سالی هست با غران همی آید
عدو لشکر نما بیماریها بران همی آید

श्लेष दुःखव्याति कर विषमे यौवने विप्रयोगः॥ नारीणा मप्यवज्ञा विलसति नियतं वृद्धभावोऽप्यसाधुः संसारे रे मनुष्या वदति यदि सुखं स्वल्पमप्यस्ति किंचित्॥१०६॥

بجا ناپاک پر بول و بر آزے
کشیده دست و پاگذر روز مشکل
جوانی صدمه از فرقت زنانها
به پیری از زنان محجوب باشد

بماند نطفه در رحم پر آزے
ببین طفلی چه سان گذرد ز مشکل
چه باید وصل نطفه بول آنها
کشیده سر نگون مردود باشد

ببا افسوس جانان سکیے ترا آرام شد حاصل
یعنی فهمی نمی آری تو دل پاکن برب احصل

आयु वर्ष शतं नृणां परिमितं रात्रौ तदर्धं गतं तस्यार्धस्य परस्य चार्द्ध मपरं बालत्व वृद्धत्वयोः॥ शेषं व्याधि वियोग दुःख सहितं सेवादि-भि नीयते जीवे वारि तरंग चञ्चलतरे सौख्यं कुतः प्राणिनां॥१०७॥

عمر انسان صد سال شمردند
بباقی حصه ترکیب داوند
بیازمی طفلی پیری در ضعیفی

و نصف آن بشب در خواب بردند
جوانی طفلی و پیری نخواهند
جوانی رغبت در کار شیفتی

घा॥१०४॥

چو شد پیدا که خوف مرگ آمد
ز خواهش از زر فتنه و دولت صبر
ز خود بینان علم دیگر آنرا
ز صحبت بر به عقل را جگا نرا
به بین یک را زیک باسد جدا شد

جوانی رفت پیری پیش آمد
زنان بر وند چون آتش از گیر
زما را خوش زمین جنگلا نرا
ز تیزی جا بکجے آرام جان را
که نو ده نشان زیک یک را نشان شد

आधि व्याधि शतै र्जनस्य विविधै रा
रोग्य मुन्मूल्यते लक्ष्मी र्यत्र पतन्ति
तत्र विवृत द्वारा इव व्यापदः॥
जातं जात मवश्य माशु विवशं मृ
त्युः करोत्यात्मसा त्तत् किं नाम नि
रंकुशेन विधिना यन्निर्मितं सु-
स्थितम्॥१०५॥

بدل وسواس جسم از خوف بیماری کند جان را
نماند تندرستی زر شود کرتا ملال آنرا
نشد پیدا که او را خوف مرگ از پیش میگذرد
نمیدانم که ان شی چیست کو یکسان همیگذرد

कृच्छ्रेणा मेध्य मध्ये नियमित त
नुभिः स्थीयते गर्भ मध्ये कान्ता वि

ह०॥१०२॥

بدان تو القدر لذات دنیا را که می بینی
همینک مرگ و پیدایش کند مانند همین در کار

بدان فانی همه را جا خوف است آنکه می بینی
نهد دل به شیوه خویش را از نفس پروار

धन्या नां गिरि कन्दरे नि वसतां ज्यो
तिः परं ध्यायता मानन्दा श्रुजलं पि
बन्ति शकुना निःशङ्क मङ्के शया ॥
अस्माकं तु मनो रथो पर चित मा
साद वापी तट क्रीडा कानन केलि
कौतुक जुषा मायुः परि क्षीयत॥
॥१०३॥

غنی مرد آنکه گذراند بغار کوه عمر خویش
نترسد مرغ صحرائی و نوشد آب چشمش را
بدان عمرم خیال و وهم جا هست بس دشوار

تجلی حق به بیند نیز واز هم چون دل ریش
شود پر دست واز او با ودو اند لوده چشمش را
که میگذرد نمیدانند به عیش و شوق بس دشوار

आघ्रातं मरणेन जन्म जरया वि
द्युत्चलं यौवनं सन्तोषो धन लि
प्सया शम सुखं प्रौढां गना विभ्र
मैः॥ लोकैर् मत्सरि भि र्गुणा वन भु
वो व्यालै र्नृपा दुर्जनै रस्थैर्येण वि
भूति रप्यप हता ग्रस्तं न किं केन

چرا تو میکشی اے جان کجا نرا
مبندای زن پے ما تو میان را
ز بوس پاکشیو کوماه را در سر نمیدارد

چه مرغ این خوش گلو دارد گمان را
که بپرویم ہر انچه داری بجان را
عبادت شد و گشتم دل مرا در دل همیدا

कौपीनं शतखण्डजर्जरतरं कन्था
पुनस्तादृशी निश्चिन्तं सुखसाध्यभै
क्ष्यमशनं शय्या श्मशाने वने ॥
मित्रामित्रसमानताति विमला
चिन्ताथ शून्यालये ध्वस्ताशेषमद
प्रमादमुदितो योगी सुखं तिष्ठति ॥
॥१०१॥

زحد بوسیده و کو بین کهنه
ترد و قطع اکل از زمان گدائی
نباشد دوست او را نے ز دشمن
بدان تو این چنین را از خدا دوست

ز دلق بس شکسته نیز کهنه
پے آرام جائے مرده جائی
دلش خالے ز فکر و بیم این
نشیند شاد در جنگل خدا دوست

भोगा भंगुरवृत्तयो बहुविधास्तैरे
व चायं भवस्तत्कस्येह कृते परि
भ्रमत रे लोकाः कृतं चेष्टितैः ॥आ
शापाशशतोपशान्तिविशदं
चेतः समाधीयतां कामोच्छित्ति
वशे स्वधामनि यदि श्रद्धेयमस्म

वा त्पिराडो फल्य मगत्मं कुलालव
भ्रमयति मनो नो जानीमः किमत्र
विधास्यति॥९८॥

بہبین بر ہجا راہ عاشقان عقلس کجا رفتہ
نمیدانم چہ میسازد دلم را او چہ خواہد ساخت

کلال اسا کہ ما را چرخ را بہرم چو گل بستہ
نمیدانند کسی از فعل او یا چہ خواہد ساخت

महेश्वरे वा जगतामधीश्वरे जना
र्दने वा जगदन्तरात्मनि॥ नवस्तु
भेद प्रतिपत्तिरस्ति मे तथापि भक्ति
स्तरुणेन्दुशेखरे॥९९॥

مہیشوری یا جگتا مہیشوری
نہ فرق دارم من جان درین دیو
میان شیو و درپیدا کنندہ
ندانستم نہ فرقی اندرین ست

جنا رونی با جگد نتراتمنی
ولے دل ما بپاے شب شدہ
بہ بخشا نید یا فانی کمندہ
ولے دل ما بپاے شیو ترین ست

रे कंदर्प करं कदर्थयसि किं कोदण्डटं
कारवै रे रे कोकिल कोमलैः कलरवैः
किं त्वं वृथा जल्पसि मुग्धे स्निग्धविदग्ध
क्षेप मधुरै र्लोलैः कटाक्षै रलं चे
तश्चुम्बित चन्द्रचूड चरण ध्याना
मृत वर्तते॥१००॥

वस्त्र मभिनं भिक्षाटनं माहनम्॥
आसन्नं मरणं च मंगल समं यस्यां
समुत्पद्यते तां काशीं परिहृत्य हन्त
विबुधै रन्यत्र किं स्थीयते॥९६॥

قیام بیشه خوردن میوه تازه
یکی کو بین بجاے پیرهن بود
رسیدن مرگ بس راحت افزا
ازین بهتر بنارس را مکان گیر

ریاضت کش ریاضت کیش زاده
گدائی نان سپلے زیبا سے تن بود
نه بد بهتر ازین چیزے سرا فزا
که دانا داند از احوال تفسیر

नायं ते समयो रहस्य मधुना निद्रा
ति नाथो यदि स्थित्वा द्रक्ष्यति कु
प्यति प्रभु रिति द्वारेषु येषां वचः॥
चेत स्तान पहाय याहि भवनं देवस्य
विश्वेशितु र्निर्दौवारिक निर्दयोक्त्य
परुष निःसीम शर्मप्रदं॥९७॥

نخلیه هست اکنون ره کنون است اے دل در آرام
عشرم باید ترا اے دل بنارس رو به بستر شیر

نشستی گر شود ناخوش چو بیند ره تو اے ناکام
که انجا نیست دربانے تو یابی کار را باکام

प्रिय सखि विपद्दाड प्रातप्रताप
परंपरातिं परिचपले चिन्ता चक्रे
निधाय विधिः खलः॥ मूढ मिवव

न भुचितं रसैव विधागता मन्ये ते
परमेश्वराः। सरासि ये च्छान सेवा
ज्वालेः॥९४॥

پے آرام سنگ کوہ غار کوہ خانہ را
زبر اشجار نرم وخوش غذاہی جانفزائی را
باینحالت کہ گذراند اول ادرا تعجب گوییم

زپوشش پوست شجر دوست از اہوی صحرا را
روان ہست خوش زن علم بہر تگسارئی ما
کہ بہتر ہست از گفتار ما ہر آنچہ میگوییم

सत्यामेव त्रिलोकी सरिति हरशि
र श्चुम्बनीच च्छटायां सद्वृत्ति कल्प
यन्त्यां वट विटप भवे र्वल्कलैः सत्
फलैश्च। कोऽयं विद्वान् विपत्ति ज्व
र जनित रुजा तीव्र दुःखासिकानां
वक्त्रं वीक्ष्येत दुःस्थो यदि हि न वि
भृयात्त्वे कुटुम्बे ऽनुकम्पाम् ९५

کنار گنگ سر شیو ہست انجا
خوشا بر پوست اش باشد لبیا خوش
وبہ دل گر پیے پیدا ایش انس
دہد دل کو حسیناں راکہ ہیچ از روضہ برگرد

بماند تا اندر بس بہتر انجا
فقیران راچنان دلکش بسا خوش
کہ می آرد بدنیا الفت انس
ہمین بہتر دہد دل درکنار گنگ جا گیرد

उद्यानेषु विचित्र भोजन विधि स्ती
भाति तीव्र तपः कौपीन चरण सु

मदीये कामाग्नौ सुहृद नरसा स्निग्ध
ति चधू मती कारो व्याधे: सुखमीति
विपर्यस्य तिजन: ॥६२॥

پے تشنگی میخورد آب سرد
بہ شہوت دہد رو سوئے وصل زن
نہ فہمد کہ زین یک دوائے بیکی است

پے گرسنہ خوش غذا سرخ و زرد
ندانند کہ نیک است با عمر کن
ورزین جسم فانی تجسس کسی است

स्नात्वा गाङ्गै: पयोभि: शुचि कुसुम
फलै र्चयित्वा विभो त्वां ध्येये ध्या
ने नियोज्य क्षिति धर कुहर ग्राव
पर्यंक मूले ॥ आत्मा राम: फलाशी
गुरु वचन रत स्त्वत्मा सादा स्मरा
रे दु:खान्मोक्ष्ये कदाहं तव चरण
रतो ध्यानमार्गैकमग्न: ॥६३॥

ز آب گنگ گہ غسل و صندل بدست آرم
نشینم اندرون غاری ز مرشد قول یاد آرم

پرستش شیو کنم ول راز دل دریا شیو دارم
خورم بر رستم از دنیا بیابیت دل حیران دارم

शय्या शैल शिला गृहं गिरि गुहा
वस्त्रं तरूणां त्वच: सारंगा: सुहृ
दो ननु क्षिति रुहां वृत्ति: फलै:
कोमलै: ॥ येषां निर्झर मम्बु पा

ज्ञानं सतां मान मदादि नाशनं केषां
चिदेतन्मद मान कारणम् ॥ स्थानं
विविक्तं यमिनां विमुक्तये कामातु
राणा मति काम कारणम् ॥८०॥

لیاقت در شریفان از پئے خاطر تواضع شد بتنهائی نشستن بهر عقلا سر حق دیدن	همینک در ظریفان از پئے تلخی توابع شد همینک شهوتی را از پئے شهوت توابع شد

जीर्णा एव मनोरथाः स्वहृदये यातं
जरां यौवनं हन्ताङ्गेषु गुणाश्च वंध्य
फलतां याता गुणज्ञैर्विना ॥ किं यु
क्तं सहसा भ्युपैति बलवान् कालः
कृतांतोऽक्षमी ह्या ज्ञातं स्मर शासनां
घ्रि युगलं मुक्त्वास्ति नान्यागतिः ८१

ضعیفی در خیال ما اثر کرد ضعیفی شد برفقا قوت به علم قضا از جا بسی پیش رسیده کنون جز پای قاتل نفس ای جان	جوانی رفت چون پیری اثر کرد ندیدم کس قدر دانای علم شناسنده نه من چیزی شنیده نمی بینم رهائی خویش ای جان

तृषा शुष्यत्यास्ये पिबति सलिलं
स्वादु सुरभि क्षुधार्तः सन् शालीन्
कवलयति शाकादि वलितान् ॥

मदीमे कामाग्नौ सुहृद नरसा श्लिष्य
ति वधू मती कारा व्याधे: सुखमीति
विपर्यस्यतिजन: ।।९२।।

پئے تشنگی میخورد آب سرد
پئے شهوت دهر رو پئے وصل زن
نه فهمد که زین یک دوا ے یکی است

پئے گرسنه خورش غذا میرح ورزد
ندانند که نیک است با عمر کن
وزین جسم فانی تجسس کسی است

स्नात्वा गाङ्गै: पयोभि: शुचि कुसुम
फलै र चि पित्वा विभो त्वा ध्येये ध्या
न नियोज्य क्षिति धर कुहर ग्राव
पर्यंक मूले ।। आत्मा राम: फलाशी
गुरु वचन रत स्त्वत्मा सा दा स्मरा
रे दु: खान्मोक्ष्ये कदाहं तव चरण
रतो ध्यान मार्गैक प्रस्न: ९३

ز آب گنگ گه ده غسل و صندل بدست آرم
نشستم اندرون غارهی ز مرشد قول یاد آرم

پرستش شیو کنم دل را ز دل دریا شیو دارم
خورم بر بستم از دنیا بیابت دل جهان دارم

शय्या शैल शिला गृहं गिरि गुहा
वस्त्रं तरूणां त्वच: सारंगा: सुहृ
दो ननु क्षिति रुहां वृत्ति: फलै:
कोमलै: ।। येषां निर्झर मम्बुपा

ज्ञानं सतां मानमदादि नाशनं केषां
चिदेन स्मद मान कारणम् ॥ स्थानं
विविक्तं यमिनां विमुक्तये कामातु
राणामति काम कारणम् ॥६०॥

بیا قوت وشہریفان از پے خاطر تواضع شد
بہ تنہائی نشستن بہر عقلا سر حق دیدن

ہمینک وز ظریفان از پے تلخی تواضع شد
ہمینک شہوتی را از پے شہوت تواضع شد

जीर्णा एव मनोरथाः स्वहृदये यातं
जरां यौवनं हन्तांगेषु गुणाश्च वंध्य
फलतां याता गुणज्ञै विना ॥ किं यु
क्तं सहसाभ्युपैति बलवान् कालः
कृतांतोऽक्षमी ह्याज्ञातं स्मर शासनां
घ्रि युगलं मुक्त्वास्ति नान्यागतिः ६१

ضعیفی در خیال ما اثر کرد
ضعیفی شد بر فقا و بہ علم
قضا از جا شمی پیشم رسیدہ
کنون جز پای قاتل نفس ای جان

جوانی رفت چون پیری اثر کرد
ندیدم کس قدر دانای علم
شنا نیدہ نہ من چیزے شنیدہ
نمی بینم رہائی خویش ای جان

तृषा शुष्यत्यास्ये पिबति सलिलं
स्वादु सुरभिः क्षुधार्तः सन् शालीन्
कवलयति शाकादि वलितान् ॥

यावत्स्वस्थमिदं कलेवर गृहं यावच्च
दूरे जरा यावच्चेन्द्रिय शक्तिरप्रति
हता यावत् क्षयो नायुषः॥ आत्मश्रे
यसि ताव देव विदुषा कार्यः प्रयत्नो
महान्प्रोद्दीप्ते भवनेच कूप खननं
प्रत्युद्यमः कीदृशः॥८८॥

تو داري تندرستي تا توئي اي نوجوان
ترا عمرت نه کم گشته نه تو گشتي ضعيف
چون شدي مجبور پير و ضيق نفست را گرفت

تا تو در بعدي ز پيري تا توئي از نفس دان
عاقل آنست کو نهد ز حق زار نحيف
نيست ممکن چاره کنديدن کي چه آتش گرفته

नाभ्यस्ता भुवि वादि वृन्द दमनी वि
द्या विनीतो चिता खड्गाग्रैः करिकु
म्भ पीठ दलनै र्नाकं न नीतं यशः॥
कान्ता कोमल पल्लवा धर रसः
पीतो न चन्द्रोदये तारुण्यं गत
मेव निष्फल महो शून्यालये दी
पवत्॥८९॥

پيش دلداري علما خود مي کندن ز دل جهلا
ديران تيغ سر فيلان نبريدم سنے ز دشمن سر
ننوشيدم لب زيبا ز حور نازنين گل بر

نخواندم علم کز وي نام باشد و هم هولا
که باشد هول از تيغ بر آسمان پر تر
گذشته عمرها در خانهٔ خالي چون شمع انور

ग्राम कन्या सखि निर्मोनो निरहंक्र
ति: शम सुखा भोगेक वद्धस्पृह: ॥८६

گدائی سہر خور ماندن بانسان محض بے الفت
نداون نے گرفتن بودن و در خود بلا تکلف
رہیدن اے ز دنیا دل برب دادن دعا کردن
نہ بارہ لتہ چندن سہر پوشش جنبہ اتش دل
نماند نفس روشن دل شود از نور حق انور
ہمی باشد و لیے لبس کم کہ بنید نور حق انور

मातर्भेदिनि तात मारुत सखे तेज: सु
बन्धो जल भ्रात र्व्योम निबद्ध एव भ
वता मेष प्रणामाञ्जलि: ॥ युष्मत्संग
वशोप जात सुकृतो द्रेक स्फुर न्निर्म
ल ज्ञाना पास्त समस्त मोह महिमा
लीये परे ब्रह्मणि ॥८७॥

ای با و پدرم بہ پنج عنصر مادر زمین دوست نور اینک ہست سلام آخر ز ما کز ما کہ شد نیک نور	از ہمسایہ آب ہم فلک را خوانم مرادر و کور بردم نور ز روح خود بتر با دیگر نہ سازم بہ فور

ऐ बाद ए पदरंबं पंज अनसर्मा दर्जमी दोस्त नूर अज़हम्सा यह
आवहम् फलकरा रवाद विरादर वपूर ॥ ईनक हस्त सलाम आरि
रज़ मा कज़ मा कि शद नेक नूर बुर्दं नूर ज़िरूहं खुदर वबा
दीगेर्न साज़म्ब फूर ५॥

जगदपि ॥ इदानीमस्माकं पटुतर वि
वेकाञ्जनजुषां समीभूता दृष्टिस्त्रिभु
वनमपिब्रह्मतनुते ॥८४॥

قیام ما چو بُد در ظلمت نفس ز نور حق چو در دل ما اثر کرد	جهان در شکل زن بُد پیش ما نفس نماند نقش زن نے ظلمت نفس

रम्याश्चन्द्रमरीचयस्तृणवती रम्या व
नान्तस्थली ॥ रम्यः साधुसमागमः श
मसुखं काव्येषु रम्याः कथाः ॥ कोपो
पाहितबाष्पबिन्दुतरलं रम्यं प्रियाया
मुखं सर्वं रम्यमनित्यतामुपगते चित्ते
न किंचित्पुनः ॥८५॥

بباد لطیف یارا فقیرے بود بماہ لطیفے رفقا نمودم بہ تلخی رنج اُو ای روے زیبا چو ثابت شد جہان فانی بہ نظرم	زمرد فرش در صحرا خوشنا بود حکایت عشق ما از بس شمردیم لبیا خوش بود دامن از زر دنیا خدا را از خودی خود دادو نظرم

भिक्षाशी जनमध्यसंगरहितः स्वा
यत्तचेष्टः सदा दानादानविरक्तमा
र्ग निरतः कश्चित्तपस्वी स्थितः ॥ र
थ्याक्षीणविशीर्णजीर्णवसनैः सं

چه حاصل کردن زین کارها یان
نسازی نور حق را گیر تما یان

همینک کارها بی نور مولا
چو بقا آمند دیرین اهدا دلا

आयु कल्लोल लोले काति पय दिवस
स्थायिनी यौवन श्री रर्था: संकल्प
कल्पा घन समय तडिद्विभ्रमा भोग
पूरा: ॥ कण्ठाश्लेषो प गूढं तदपि
च न चिरं यत्प्रियाभि: प्रणीतं ब्रह्म
ण्या सक्त चित्ता भवत भव भया म्भो
धि पारं तरीतुम् ॥८२॥

چو موج بحر این عمرم روان ست
جوانی برق سان در تن نهان ست

چو سوسم برشگال این وصل دولت
وصال نازنین را نیست مهلت

بباید بس که دل در رب بداری
که به باشد برا ید دین داری

ब्रह्माण्ड मण्डली मात्रं किं लोभा
य मन स्विन: ॥ शफरी स्फुरितेनाब्धे:
क्षुब्धता जातु जायते ॥८३॥

به بنید نور حق کان را چه حکمن و رغلانیدن
که موج بحر را ماهی تو اند نے طپانیدن

यदा सीद ज्ञानं स्मरति मिरसंस्कार
जनितं तदा दृष्टं नारी मय मिद मशेषं

پی نازک بنر بر سبز زمین بستر لب بهتر
به عیش و فصل باد کش این با صحرا سکنه ماه نور
میسر نیست این آن رام شاه دهر را اینجا

پیے ہم کہ شد این آسمان دلکش خوشنما
بجائے زنی زیبا و عفت یا درب سپہر صفا در طور
که دارد یار دنیا را اسیر چون یار دهر اینجا

त्रैलोक्याधिपतित्वमेव विरसं यस्मि
न्महाशासने तल्लब्ध्वासन वस्त्रमान
घटिते भोगे रतिं मा कृथाः॥ भोगः को
पि स एक एव परमो नित्योदितो जृ
म्भते यत्स्वादाद्विरसा भवन्ति विषया
स्त्रैलोक्यराज्यादयः॥८०॥

چو بینی نور حق باطل شود همه سلطنت دنیا
همین را راست دان تن وصل و الفت بحقه دل

بیان و جان خود بینی مبر تو ذلت دنیا
چشی گر جا فشنی ربا تو دانی ذلت دنیا

किं वेदैः स्मृतिभिः पुराणपठनैः शा
स्त्रैर्महाविस्तरैः स्वर्गग्रामकुटीनि
वासफलदैः कर्मक्रियाविभ्रमैः।
मुक्त्वैकं भवबन्धदुःखरचनाविध्वं
सकालानलं स्वात्मानन्दपदप्रवेश
कलनं शेषा वणिग्वृत्तयः॥८१॥

چه از بید و چه از علم ریاضی
قصص متبرک و یا علم مجالس

چو از منطق چه شد از علم قاضی
نتیجه حاصل چنین شد لهو و بس

कथमात्मनीनं तद्बुद्ध न स्मरासि नि
हंति मोषि येन ॥७७॥

زیور بر زمین یا بر فلک هشتم نمی بردی تکان نکیدم تو مل رحق نمیدانی	بهم ابدی حیات و زیر بحر و تیزبت کم نیست لبل ابل که قدسی باشی یا پی تو او نور حق ایسے دل

रात्रि: सैव पुन: स एव दिवसो मत्वा
बुधा जनवो धावन्त्युद्यमिन स्तथै
व निभृतप्रारब्धतत्क्रिया: ॥ व्या
पारै: पुनरुक्त भुक्त विषये रेवं विधे
ना मुना संसारेण कदर्थिता: कथ
महो मोहान्न लज्जा महे ॥७८॥

همین لیل و نهار از صاحب عقلا نمیگذرد همان کار و همانان گفتنی زینها چه شان باشد	همان خواهش همان ورد و روش یکسان نمیگذرد همین نافهم انسان را اگر اشهرمش نمیگردد

मही रम्या शय्या विपुल मुप धानं
भुजलता ॥ वितानं चाकाशं व्यजन
मनुकूलोऽयमनिल ॥ स्फुरद्दीपश्च
न्द्रो विरति वनिता सङ्गमुदित: सुखं
शान्त: शेते मुनि रतनु भूति र्नृप इव
॥७९॥

ز نعمت ها خوری گر تو و یا از جو قوت شام	نه بینی نور حق در دل چه از شاه و یا پیاده

भक्तिर्भवे मरणजन्मभयं हृदिस्थं
स्नेहो न बन्धुषु न मन्मथजा विकाराः।
संसर्गदोषरहिता विजना वनान्ता-
वैराग्यमस्ति किमतः परमार्थनीयम् ॥७५

و هر دل گر به تشویش باشد هویدا	نه وحشت مرگ نی فرحت زبیدا
محبت از محب نی نفس در دل	رهائی از همه داری تو در دل
نشستن در بیابان زان لب به	فقیری را همین باشد بیا به
دعا کردن از این زاید پی چیست	که بهتر لطف هست این از پی زیست

तस्मादनन्तमजरं परमं विकासि
तद्ब्रह्म चिन्तय किमेभिरसद्विक
ल्पैः॥ यस्यानुषङ्गिण इमे भुवना-
धिपत्यभोगादयः कृपणलोकम
ता भवन्ति॥७६॥

مثال نور ز نور حق بیاید در دولت ایجان	بدانی مثل خرمهره تماقی سلطنت ایجان
چه حاصل دادن دل در خرافات جهان فانی	ریاضت کن که یابی نور حق را در دولت ایجان

पातालमाविशसि यासि नभो वि
लंघ्य दिङ्मण्डलं भ्रमसि मानस
चापलेन ॥ भ्रान्त्यापि जातु विमलं

एकाकी निःस्पृहः शान्तः पाणिपा
त्रो दिगम्बरः ॥ कदा शम्भो भविष्या
मि कर्म निर्मूलन क्षमः ॥७२॥

به تنهائی بلا خواهش و آزاد
چسان اے شمبو مرا آید میسر

ظروف از دست سهر پوششم سواد
که کندن بیخ کارے دیر نگیر

प्राप्ता श्रियः सकल कामदुघास्ततः
किं दत्तं पदं शिरसि विद्विषतां ततः
किम् ॥ सम्मानिताः प्रणयिनो विभ
वैस्ततः किं कल्पं स्थितं तनुभृतां त
नुभिस्ततः किम् ॥७३॥

چو زر یابی مراد آور چه حاصل میشود از وے
کسی گر سر دشمن رفقا زر تا هم چه می شاید

مینی گر پا تو بر دشمن چه حاصل میشود از وے
بمانے زنده تا فجر چه میشود از وے

जीर्णा कन्था ततः किं सितममलप
टं पट्टसूत्रं ततः किं एका भार्या ततः
किं हयकरिसुगणैरावृतो वा ततः किं
भक्तं भुक्तं ततः किं कदशनमथवावा
सरान्ते ततः किं व्यक्तज्योतिर्न वान्त
र्मथितभवभयं वैभवं वा ततः किम् ॥७४

تو پوشی جبه با غلطان و یا از پینه ساده || ابداری زن و یا از نهار ستم فیل نر ساده

چه از پوست اشجیر نماند عزیز — به خرقی بدرید پیشان زرنجی تمیز
سگی کو ز مفلس تو نگر بود — روان ابر و آتش مثل خنجر بود
آزان به بیلین روی دنیا درون — فقیری به صحرا ز صبر و سکون

गङ्गा तरङ्ग कणशीकर शीतलानि
विद्या धरा ध्युषित चारु शिला त
लानि ॥ स्थानानि किं हिमवतः प्र
लयं गतानि यत्साव मान परपिण्ड
रता मनुष्याः ॥७०॥

ز موج گنگ در افشار آبش — چو هیچ باشد نماند تیز تابش
نشستن جا بجا رضوان سبوحی — بیاد رب علیحده از قبوحی
قیامت شد چه همرا با چنین جاه — سخواری میخوری یک لقمه در راه

यदा मेरुः श्रीमान्निपतति युगान्ताग्नि
निहतः समुद्राः शुष्यन्ति प्रचुर नक्
र ग्राह निलयाः ॥ धरा गच्छत्यन्त-
धरणिधर पादैरपि धृता शरीरे का
वार्ता करि कलभ कर्णाग्र चपले ॥७१॥

قیامت روز قیامت کوه بر از آتش شعله — به سوزانند سنگان را و آبی بحر را بهوله
فنا باشد زمین و کوه بیجا آتش فنا باشند — چه ذکر از جسم کو چون گوشت بچه فیل میباشند

کهانزار گل تیز آتش شعله نهان او	شده چون سرو بسحجا صحت کت این زالی

रम्यं हर्म्यतलं न किं वसतये श्राव्यं
न गेयादिकं किंवा प्राणसमासमा
गमसुखं नैवाधिकं प्रीतये ॥ किं तु
भ्रान्तपतत्पतङ्गपवनव्यालोलदीपा
ङ्कुरच्छायाचंचलमाकलय्य सकलं
संतो वनान्तं गताः ॥ ६६॥

خدا دوستان را چه قصر نبود	زخنبان و قوال حسن نبود
دلارام جان زن و یا وصل او	همه بود لیکن نه بد اصل او
بدانست این دیر را النفس آب	که رفته به صحرا عبادت تاب
چه انسان که غارت کند جسم را	چو کرمی به شمع کو دهد جسم را

किं कन्दाः कन्दरेभ्यः प्रलयमुपगता
निर्झरा वा गिरिभ्यः प्रध्वस्ता वा त
रुभ्यः सरसफलभृतो वल्कलेभ्यश्च
शाखाः ॥ वीक्ष्यन्ते यन्मुखानि प्र
सभमुपगतप्रश्रयाणां खलानां दुः
खोपात्ताल्पवित्तस्मयवशपवना
नर्तितभ्रूलतानि ॥ ६७॥

چه کندند از زمین وردان آب کوه	نمانده چه پر میوه شاخ ستوه

چه فرق افتاد اکنون اسپے عزیزم
شدي تو در خودي صاحب تمیزم

बाले लीला मुकुलित ममी मन्थरा-
दृष्टि पाता: किं क्षिप्यन्ते विरम वि
रम व्यर्थ एष श्रमस्ते ॥ संप्रत्यन्ये व
यमुपरतं बाल्यमास्था वनान्ते क्षीणो
मोहस्तृण मिव जगज्जाल मालोकया
मः ॥६६॥

چرا بر سیدهي ابرو کمان تیر نظر بر من
نماند وقت بازي شد مرا الفت ز دنیا دون

گر بمن پوشیده ام جلئه فقیري خود حق در تن
همین فهمم هم خس این ویر را هم حرکت اکنون

ایضًا دیگر

چرا از بند و اکردن ز چشمانت سنان باري
برفته وقت طفلي اي کنون خواهش بصحرا شد

که نازو بازي و در دل جا باید ترا غواري
قطع کردم محبت هم خوجسق نیا و دلداري

इयं बाला मां प्रत्यनवरत मिन्दी वर
दल प्रभाचोरं चक्षुः क्षिपति किम
भिप्रेत मनया ॥ गतो मोहोऽस्माकं
स्मर कुसुम वाण व्यतिकरज्वलज्ज्वा
लाशान्ता तदपि न वराकी विरमति॥
॥६७॥

به بلبت ای چشم نیلوفر چرا با ما شب و روز با سیے
نمي فهمي که کردم ترک اکنون من نیم نا ریے

نگون ترک زبان کیشی ای عزیز
نه گفتن بچیز راستی نیک دان
شنیدن قصص از زبان نیست به
هم بر همه ترک و حرص و هوا
جواب ای همین بهترست داده ام

تظلم پی زر نه صاحب تمیز
و خیرات تا حد هم نیک دان
به بندی لب و گوش از نسبت به
تو یکسان بدان قول پیشین روا
گدا ای ز خاصان حق خوانده ام

मात लक्ष्मि भजस्व कंचिद परं मत्कां
क्षिणीमास्मभू भोगेभ्यः स्पृहयाल
वोनहिं वयंकानिः स्पृहाणामसि ।
सद्यः पूतपलाशपत्र पुटिका पात्रेप
वित्री कृते भिक्षा सक्तु भिरेव संप्राति
वयं वृत्तीं समीहा महे ॥६४॥

تو ای یاورم گلشنی رو کنون
کسی دیگر برا تلاشی بکن
که بیند ترا از نگاهی حقیر
نصیبی برم بر لاسی برسی

که قابل نه ام پروریت را کنون
محبت ز خواهان عقبی بکن
خدا دوستی کو که باشد فقیر
سوی تو که آرم گدایی سری

यूयं वयं वयं यूयमित्यासीन्मतिरा
वयोः ॥ किंजातमधुना मित्र येन
यूयं वयं वयम ॥६५॥

میان من و تو فرق نمی بود

برابر بود بس فرق نمی بود

ستینان زنان درپس مغرق سلسلہ سیارہ
مگمار رو چو ر دست ناز کش زن زن کند یارا
مکن غارت تو خود را اگر بیا بی انقدر حشمت
وگرنہ دل برب درده که نه باشد پی جہت

विरमत बुधा योषित्संगात्सुखात् क्ष
णभंगुरात्कुरुत करुणामैत्रीप्रज्ञा व
धूजन संगमम् ॥ नखलु नरके हाराक्रांत
घन स्तन मण्डलं शरण मथवा श्रो
णी बिम्बं रणन्मणि मेखलम् ॥ ६२॥

رمہ عاقل ز صحبت زن که یک لحظہ خوش باشد
بیابد صحبت خاصان که در جنت بہ خوش باشد
کشی چون رنج در دوزخ نباشد همرا نت زن
نہ روی زن نہ پستان زن نہ زیور زن نہ جسم زن

प्राणाघातान्निवृत्तिः परधनहरणे
संयमः सत्यवाक्यं काले शक्त्या प्र
दानं युवति जन कथा मूक भाव परे
षाम् ॥ तृष्णा स्रोतो विभङ्गो गुरुषु
च विनयः सर्वभूतानु कम्पा सामा
न्यः सर्व शास्त्रे ष्वनुप हत विधिः श्रे
यसा मेष पन्थाः ॥ ६३॥

मोहं मार्जय तामुपार्जय रतिं चंद्रार्ध
चूडामणौ चेतः स्वर्गतरंगिणीतटभु
वामासङ्ग मङ्गीकुरु ॥ कोवा वीचिषु
बुद्बुदेषु च तडिल्लेखासु च स्त्रीषु च
ज्वालाग्रेषु च पन्नगेषु च सरिद्वेगेषु
च प्रत्ययः ॥६०॥

مکن الفت بہ ترک ای دل بپای شبو بہار ای جان
که دارد در سر خود ماه او دل را نشان ای جان
کنار گنگ زیر اشجار پاک آرام کن آنجا
نباشد زن که از زن مغفرت مشکل شود آنجا
که زن چون آتش شعله و یا چون جوش بحر است این
و دل چون برق یا سیماب بیتہر و وردارست این

अग्रे गीतं सरसकवयः पार्श्वतो दा
क्षिणात्याः पृष्ठे लीलावलयरणि
तं चामरग्राहिणीनाम् ॥ यद्यस्त्ये
वं कुरु भवरसास्वादने लंपटत्वं ।
नोचेच्चेतः प्रविश सहसा निर्विक
ल्पे समाधौ ॥६१॥

چو کم عقلان شہان یابی تو عیش و عشرت آرام
که قوالان بپشت راست و چپ شعرا جنوب آسا

زمین و آسمان شفاف گردد قید دنیا را
برارد از دل خود هیبت و شهوت و خنیا را

यतस्मा हिरमोद्दियार्थ गहना दाया
सकाश भया च्छेयो मार्ग मशोष
दुःख शमन व्यापार दक्ष क्षणात् ॥
शान्तं भाव सुपैहि मे स्वज निजां क
ल्लोल लोलां गतिं मा भूयो भज भंगु
रां भवरतिं चेतः प्रसीदा धुना ॥५८॥

مبادا رنجیده ام ای دل تو ترک این نفس را اکنون
کنون کن کو کند بیخ این و آرامی براه راست
ز شهوت نفس بردم عمر آخر نیست تا اکنون
جهان چون برق دل را گو بیارا آید نجود اکنون

पुण्यैः मूल फलैः प्रिये प्रणयिनी प्री
तिं कुरुष्वा धुना भू शय्या नव वल्क
लैर करुणैरुत्तिष्ठ यामो वनम् ॥ क्ष
द्राणाम विवेक मूढ मनसा यत्रैश्व
राणां सदा चित्त व्याध्य विवेक वि
ह्वल गिरां नामापि न श्रूयते ॥५९॥

تو هم برخیز اینک می روم صحرا تو دیگر دل را
بکن صحرا نشینی اکل از میوه تر و تازه
که انجا از الی بیکار و سنگ دنیا نمی باشد
همینک دست بسته عرض ما از عقل ما دل ما
زمین بستر خوش ادهر پوشش پوست تازه
همین باشد ریاضت کس دنیا کس نمی باشد

بدر ہا نیک اشخاصان که آتش معوم میکرده
رو و ہر روز تا ہم نیست کلفت در دل ایشان
نه آن بهتر که پر کردن شکم از دونان برده

चाण्डालः किमयं द्विजाति रथवा शू
द्रोऽथ किं तापसः किंवा तत्त्व निवे
शपेशल मति योगीश्वरः कोऽपि
किम् ॥ इत्युत्पन्न विकल्प जल्प मु
खरैः सम्भाष्य माणा जनै र्न क्रु
द्धाः पथि नैव तुष्टमनसो यान्ति स्व
यंयोगिनः ॥५६॥

گر گوید بهتر و که بهتر که سگ گوید حقیر این سست
ستند در راه دل در رب به گفتن شان نه دارد

برهمن یا برپا فهمی عالم ذره حقیر است
ضمیر سنجد نه آزاد بد و یکسان فقیر است

सर्वे धन्याः केचित् चुदिन भव
बन्ध व्याति करा बनान्ते चितान्त वि
षम विषयाशी विषगताः ॥ शर
च्चन्द्रज्योत्स्ना धवल गगना भोग सु
भगां नयन्ते ये रात्रिं सुकृत चय चि
त्तैक शरणाः ॥५७॥

بدان صبا بغیبان را که در شب ها گذراند

زیا ضدت کشتن کنند خوراند نشینند که آزادند

ازین باید وست ستہر مبسب کا بین ال ای حقداری | کہ علما زاہد و فاضل حقداری حقداری

भोगा मेघ वितान मध्य विलसत्सौदा
मिनी चञ्चला आयुर्वायु विघट्टिता
भ्र पटली लीनाम्बु वद्भङ्गुरम् ॥ ली
लायौवन लालना तनुभृता मित्या
कलय्य द्रुत योगे धैर्य समाधि सि
द्धि सुलभ बुद्धिं विधद्ध्वं बुधाः ॥५४॥

در ابر برق سان انسان را این وصل دولت ہست
چو صرصر می برد او را چنان دم زندگی این ہست
نمی ماند جوانی نیز حسن و نیز شہور زور
بباید کرد خدمت رب کہ اینک راست دولت ہست

पुण्ये ग्रामे वने वा महति सित पट
च्छन्न पाली कपाली मादाय न्या
य गर्भ द्विज मुख हुत भुग्धूम धूम्रो
प कण्ठम् ॥ द्वार द्वार प्रवृत्तो वर मु
दर दरी पूरणाय क्षुधार्तो मानी प्रा
णी सधन्यो न पुनरनु दिनं तुल्य कु
ल्येषु दीनः ॥५५॥

بشہر و جنگل و کاسہ گدائی را بکف بردہ

گدائی نیک شد از وے پدیدار   کہ بگذارد چنان در نیک کردار

पाणिपात्रं पवित्रं भ्रमण परि गतं
भैक्ष्य मक्ष य्य मन्नं विस्तीर्णं वस्त्र
माशा मुदशक ममलं तल्प म स्वल्प
मुर्वी ॥ येषां निः संग ताङ्गी करण प
रिणतिः स्वात्म संतो षिण स्ते धन्याः
संन्य स्त दैन्य व्यति कर निकराः कर्म
निर्मूलयन्ति ॥५२॥

کند کو پاک دست خویش را ظرف   گدائی جز ندارد دیگری حرف
جہات از سہر پوشش بر زمین رام   کند گوشہ نشینی با خدا کام
نہ خواہش ماند باقی سے زر دنیا   ہمہ در دور زکار زکار دنیا

दुरा राध्यः स्वामी तुरग चल चित्ताः
क्षिति भुजो वयं तु स्थूलेच्छा मह
ति च पदे बद्ध मनसः ॥ जरा देहं मृ
त्यु हरति सकलं जीवित मिदं सखे
नान्यच्छ्रेयो जगति विदुषोऽन्यत्र त
पसः ॥५३॥

بسا مشکل بود در خدمت شاہان گذر کردن   دل شاہان مثل سیماب است بس مشکل بسر بردن
زمایان عقل فربستہ دل و رحق کجا باشد   کہ خوف مرگ پیش آمد چراغ جسم میباشد

ستو ترک همه محظوظ دل درحق تصور ما
تصور صبر را دها کر شن درجنگل چو بندر این

که بگذارم شب ما ها به تنهایی کنار ما
نیاید آید ز دنیا دون نشینم از بدیم آسن

वयमिह परितुष्टा वल्कलैस्त्वं च
लक्ष्म्या सम इह परितोषो निर्विशे
षो विशेषः॥ स तु भवति दरिद्रो य
स्य तृष्णा विशाला मनसि च परि
तुष्टे कोर्थवान् को दरिद्रः॥५०॥

ترا از زر مرا از پوست اشجار
بباید صبر رفته حرص بیرون
به همابر نیک و زر زیور برابر

چو شد همسر نماند بار شش چار
حریص آنست گو دارد دل دون
چه از بینه چه از ریشم برابر

यदेतत्स्वाच्छन्द्यं विहरणमकार्पण्य
मशनं सहार्यैः संवासः श्रुतमुपश
मैकव्रतफलम्॥ मनो मन्दस्पन्दं
बहिरपि चिरस्यापि विमृशन्न जा
ने कस्यैषा परिणतिरुदारस्य त
पसः॥५१॥

روش آزاد اکل از بی سوالی
چنان گفتن شنودن مثل سالک
اگر باشد هوا و حرص پیدا

به سایه عاطفت بودن حوالی
که باشد از خرد همه بالک
خدا مدد ول کند در حق شیدا

بلندی با بدان روزی گزو امید دارد کس
شود دست نگر از صاحب زر باز ماند پس
نماید روز کم کانرا که شهوت گم شد از جنبش
همی ترسد که شب آمد چنان سازم من از جنبش
نه بینم از تبسم هر دو را بر سنگ بنشینم
نمی باشد فقیری در نصیبم تا نشینم

विद्या नाधिगता कलंक रहिता वित्तंच
नो पार्जितं शुश्रूषापि समाहितेन म
नसा पित्रोर्न सम्पादिता आलोलाय
त लोचना युवतय: स्वप्नेपि नालिंगि
ता: कालोयं पर पिण्डलोलुपतया
काकैरिव प्रेरित: ॥४८॥

نه گشتم عالم و فاضل نه صاحب زر گنجینه
نه بردم خواب هم از وصل محبوبان آهو چشم

نه کردم خدمت ابوین کی دلشاد و کینه
به لقمه غیر مثل زاغ بردم عمر بی حد دنیا

विलीर्णे सर्वस्वे तरुण करुणा पूर्ण
हृदया: स्मरन्त: संसारे विगुण परि
णामा वधि गती: ॥ वयं पुण्या रण्ये
परिणत शरच्चन्द्र किरणो स्त्रिया
मां ने ष्यामी हर चरण चितेक श
रणा: ॥४९॥

رود کو پاک از وی جز خدا دوست	فقیری را که باشد دشمن و دوست

आसं सारं त्रिभुवन मिदं चिन्वतां ता
त ताहङ्नैवास्माकं नयन पदवीं श्रो
त्र वर्त्मागतो वा ॥ योऽयं धत्ते विष
य कारिणी गाढ गूढा भि मानः क्षीब
स्यान्तः करण करिणः संयमालान-
लीलां ॥४६॥

ز آغاز جهان تا حال اینجان کسی نشد پیدا از زن چون مخنثه کام اسیر کسی که بزلف عنبرین شد	نمی بینم نمی شنوم ز دیگران بیارد خویش را بر نیک انجام مگر تا تاب رهائی کرده نشد

सांप्रतं निर्वेदनाया: स्वरूपमाह
ये वर्द्धन्ते धन पति पुरः प्रार्थना दुः
ख भाजो ये चाल्पत्वं दधति विषया
क्षेप पर्यस्त बुद्धेः ॥ तेषा मन्तः स्फु
रित हसितं वासराणां स्मरेयं ध्या
न च्छेदे शिखरि कुहर ग्राव शय्या-
निषण्णः ॥४७॥

शिवः शार्वे स्वर्गात् पशुपति शिरस्तः
क्षिति धरं मही आदुत्तुंगा दवनि मव
ने आपि जलधिम् ॥ अधो गंगा सेयं
पद मुप गता स्तोक मथवा विवेक
भ्रष्टानां भवति विनि पातः शतमु
खः ॥४४॥

ز جنت سر نشار ہم فتد از سر شیو بر زمین — ز کوہستان رفتہ ز دل و دریا شد در زمین
بہ بین این گنگا را کہ بدر ضلوا فی سبیل گجا — بدہ گم گشتہ تنہا شود نزل الشیان لیبکہن

जिजन्नतसि शार्वे फितद् अर्जासि शिव्वर ज़मी ॥ जिकोहिस्तारसे जिदिल
दरयाशुद्दरजमी, विवी नीगंगा रा कि वुदारजवानो पस कुजावर हगुंगश्तो
हा शवद नुजलेशावसहमी ॥ २ ॥

आशा नाम नदी मनो रथ जला तृष्णा
तरंगा कुला राग ग्राह वती वितर्क
विहगा धैर्य द्रुम ध्वंसिनी ॥ मोहा
वर्त सु दुस्तराऽति गहना प्रोत्तुङ्ग चि
न्ता नदी तस्याः पार गता विशुद्ध म
नसो नन्दन्ति योगी श्वराः ॥५॥

ز خواہش سیل اخیال اندر دریا ، — چہ خوش گرداب پر شد اندر انجا ،
نہنگان زمان از جہالت — بے کندن زنجیر استقامت
محبت بجر رفتن بر وے دشوار — لبیش از فکر بیرون فکر دشوار

سر آنکه من لب گنگا به تنگ کوه سیم نه نشیم
خمار آید حقیقی آن کجا باشد نصیب ما

نشین نیلوفری بنشیم نصوالتر کی بهم بنیاد جیپنها
که سود بر شاخ آهو دقیقی از جسم من بنشیم

स्फुरस्फारज्योत्स्नाधवलितनले क्वा
पि पुलिने सुखासीनाः शान्तिध्वनि
षु रजनीषु द्युसरितः ॥ भवाभोगोद्वि
ग्नाः शिव शिव शिवेत्यार्तवचसः क
दा स्यामानन्दोद्गतबहुलबाष्पप्लुत
दृशः ॥४२॥

خوشا قیصر خوشا ماه و خوشا جا
نه آواز سے کسی در شب بدل سوز

لب گنگا تفکر در کس تنها
به شیو شیو شیو گم جیشمان دل دوز

تصور سپهر بختا لیستش ز خوف از کار دنیا ها
روان آب از دیده کس نشیم محو زنیبان ها

महादेवो देवः सरिदपि च सैषा सुर
सरि द्गुहा एवागारं वसन मपि ता ए
व हरितः ॥ सुहृद्वा कालोऽयं व्रत मि
द मदैन्यव्रत मिदं कियद्वा वक्ष्या
मो वट विटप एवास्तु दयिता ॥४३॥

خدا یک شیو ز گنگا سیل عار انیست خانه ما
بگوییم تا کجا این بر شجر باشد دلا را خم

پئے پوشش جہات از دوست یک ترک سوال ما
که حق باشد ز ما خدمت ز ما بہر خدائے ما

بیک خانه که یک کس بود آباد
ز دل شادان نمی بینم کسی را
قضا را آن همه لقمهٔ اجل شد
اجل را باز سی ایشان خوش آمد

نه یک خانه که بود دل شاد
ز یک آبادی شد خانه ها را
چه چه سر باز ور آخر خجل شد
تعجب گو نفهمد زین خوش آمد

तपस्यन्तः सन्तः किमधिनिवसामः
सुरनदीं गुणोदारान् दारानुत परि
चरामः सविनयम् ॥ पिबामः शास्त्रौ
घान् उत विविधकाव्यामृतरसान्न
विद्मः किं कुर्मः कतिपयनिमेषायुषि
जने ॥४१॥

نکردم آتش پرستی بر لب گنگ
نه نوشتم علم از صحبت هنردان
همین عمرم که روز پنج باقی ست

نه با وصل حسینان دلان سنگ
و یا از شاعران بی نقط خوان
چرا فهمم که ما را کردنی چیست

गंगातीरे हिमगिरिशिलाबद्धपद्मा
सनस्य ब्रह्मध्यानाभ्यसनविधिना
योगिनिद्रां गतस्य किं तैर्भाव्यं मम
सुदिवसैर्यत्र ते निर्विशंकाः संप्रा
प्स्यन्ते जरठहरिणाः शृंगकंडूविनो
दं ॥४२॥

بسا فرزند نیک اختر هنرمند
ز قوالان رقاصان هنرخوان
به بین اکنون نشان شان نمانده

گروهی عاملان هر داد و پند
جنان زهنیده بد چون شاه رضوان
تکن تسلیم سپهر آنکه رانده

पुनः कामसुहृद्दृश्पाह ॥
वयं येभ्यो जाता श्चिर परि गता एव
खलु ते समं यैः संवृद्धाः स्मृति वि
षयतां तेऽपि गमिताः ॥ इदानीमे
तेस्मः प्रति दिवसमासन्नपतना ग्र
तास्तुल्या वस्थां सिकतिलनदी तीर
तरुभिः ॥ ३५ ॥

کسی کو همه هم پیدا شده بود
بیا زی طفلها با ما به بازی
کنون سرما ز پیری پیچ نما شد

صفیر مرگ او را زود در بود
قضا با او بکرده ترکتازی
چو دریا شجری را او سر باشد

यात्रानेकःक्वाचिदपि गृहे तत्रातिष्ठ
स्थथैको यत्राप्येकस्तदनु बहव
स्तत्र चान्ते न चैकः इत्थं चेमौ रजनि
दिवसौ दोलयन्द्वा पिचाक्षौ का
लः काल्या सह बहुकलः क्रीडति प्रा
णसारैः ॥ ३६ ॥

بعلم از بحث نکته چنین هنر را
چو دیدم خوف یک را از یکی هست

ز مرگ این جسم فانی شد ترس ما
ولیکن بی خوف در دنیا فقیرست

अमीषां प्राणानां तुलित बिसिनी प
त्र पयसां कृते किन्नास्माभिर्विगलि
त विवेकैर्व्यवसितम् ॥ यदाढ्यानाम
ग्रे द्रविण मद निःशंक मनसां कृ
तं वीत व्रीडैर्निज गुण कथापालक
मपि ॥३६॥

ببر شیلوفری چون قطره آب
بگردیدم بسا بر خواهش دل
حیا را پیش کس عرض نمودم

روان مانند باران لولوی شان تاب
وظایف ورد کردم ترک از دل
نفهمیدم کجا بودم که بودم

भ्रान्तः कष्टमहो महान्स नृपतिः सा
मन्त चक्रं च तत्पार्श्वे तस्य च सापि
राज परिषत्ताश्चन्द्र बिम्बाननाः ॥
उद्रिक्तः स च राजपुत्र निवहस्ते ब
न्दिनस्ताः कथाः सर्वं यस्य वशाद
गात्स्मृतिपदं कालाय तस्मै नमः ३७

چه سان عادل درینجا بود شاهی
بسا درباریان نیک فرجام

شهر آباد خرمش خنیان نگاهی
حسینان جهان مجلس سرانجام

برادر زن و پور همسایگان
خوش آنکس رود در بیابان و کوه
جدائی نمارفته از تن نهان
گذارد بدامان گنگا ستوه

परेषां चेतांसि प्रति दिवस माराध्य
बहुधा प्रसादं किं नेतु विशसि हृद
य क्लेश कलितम् ॥ प्रसन्ने त्वय्य
न्तः स्वय मुदित चिन्ता मणि गुणे-
विमुक्तः संकल्पः किमभिलषितं
पुष्यति न ते ॥३४॥

چرا دلداری اغیار را ادبی بدل بدل
بمن یکسو حق را بین که دل وحق اوحق در دل

अथ भोगपद्धतिः ॥
भोगे रोग भयं कुले च्युति भयं वि
त्ते नृपाल्ला द्भयं मोने दैन्य भयं ब
ले रिपु भयं रूपे जरा या भयम् ॥
शास्त्रे वाद भयं गुणे खल भयं का
ये कृतान्ता द्भयं सर्वं वस्तु भयान्वि
तं भुविनृणां वैराग्य मेवा भयं ॥३५

به عیش و وصل خوف از مرض پیدا
بزر از شاه فاموشی زجاهل
زپیری حسن را رنج چنان شد
به صاحب نسل بد اصلی هویدا
بپهلوانان ز دشمن رنج حائل
چو لرزان بید خوش جسمی نشان شد

غرورم چون بخار از جسم رفته لشکله بیست آمد

निर्ममतास्वरूपमाह

भ्रान्तं देशमनेकदुर्गविषमं ...

ब्राति क्रान्तः कालो लटभ ललना भो
ग सुभगो भ्रमन्तः श्रान्ताः स्मः सुचि
र मिह संसार सरणौ ॥ इदानीं स्वः
सिन्धोस्तट भुवि समा क्रन्दन गिरः सु
तारैः फूत्कारैः शिव शिव शिवेति मत
नुमः ॥३२॥

به عیش و وصل محبوبان جوانی خوش زما رفته
روان در دیر فانی عمر ما آخر بپا گشته
کنون خواهش به بد گفتن زنان را بر کنار گنگ
همین کافی ست در دما زبان شیو شیو شیو بسته

माने म्लायिनि खण्डिते च वसुनि
व्यर्थप्रयाते र्थिनि क्षीणे बन्धुजने
गते परिजने नष्टे शनैर्यौवने ॥ युक्तं
केवलमेतदेव सुधियां यज्जन्हुक
न्यापयः पूतग्रावगिरीन्द्रकन्दरदरी
कुञ्जे निवासः क्वचित् ॥३३॥

گدایان سبی بوزه رفته غریب		تنفر وزر و رفت شد بی نصیب

अर्थानामी शिषेत्वं वयमपिच गिरा
मीश्महे याव दित्थं शूरस्त्वं वादिद-
र्प ज्वर शमन विधा वक्षयं पाटवंनः
सेवन्ते त्वां धनाढ्या मति मल हतये
मामपि श्रोतु कामा मय्यप्या स्थान
चेत त्वयिमम सुत रामेष राज नान।
स्मि ॥३०॥

تو ئی مالک ملک گنج و گهر
تو ئی مشت زن بر سر دشمنان
ترا از طمع نیک فاجر مرید
ببین گر ترا نیست رغبت زما

منم مالک ملک علم و هنر
کنم حل معماء علما جهان
بما علم خواهان هزاران مرید
همی میروم دور تر از شما

यदा किंचिज्ज्ञोऽहं द्विप इव मदा
न्धः समभवं तदा सर्वज्ञोऽस्मीत्यभ
वदवलिप्तं मम मनः॥ यदा किंचि
त् किंचिद् बुधजन सकाशादव
गतं तदा मूर्खोऽस्मीति ज्वर इव मदो
मे व्यपगतः॥३१॥

زیکم علمی تکبر در سرم چون فیل مست آمد
بفهمیدم که مثلم در جهان نیست هست آمد
چو آمد هوش رفته در سرم از صحبت علما

पुरा विद्वत्तासी दुपसमवतां क्लेशहत
ये गता कालेनाशो विषय सुख सिद्धे
विषायिणाम् ॥ इदानीं तु प्रेक्ष्य क्षि
ति तलभुजः शास्त्र विमुखा नहो क
ष्टं सापि प्राति दिन मधोधः प्रविश
ति॥२८॥

به اول این هنر بهر ضیا بود
چو بی علمی به شاهان روبرو شد

وزان پس از پی شاهان خوشا بود
هنر را ورجه اوی فزون شد

साहंकारंपुरुषमुद्दिश्याह

सज्ञानः कोप्यासन्मिदन रिपुणा मू
र्ध्नि धवलं कपालं यश्यो चै र्विनिहि
त मलंकार विषये ॥ न्वभिः प्राण
त्राण प्रवण मतिभि कैश्चिद धुना-
न मद्भिः कः पुंसा मय मतुल दर्प ज्व
रभरः॥२९॥

گذشتند انچنان زہد اکہ اسما پاک می گفتند
کہ از سر پاک شان قدسی رب تسبیح می سفتند
کنون زاہد نما کا نرا کہ چیند اشخاص را جمع شد
تکبر بر سر شان از زمین بالاہی رفتند

بروبین نا زحمقا خویش را چه همی گفتند

मृत्पिण्डो जलरेखया वलयितः सर्वोऽप्ययं नन्वणुः स्वीकृत्य स एव संयुग शते राज्ञां गणैर्भुज्यते तद्दद्युर्ददतेऽथवा न किमपि क्षुद्रा दरिद्रा भृशं धिक् धिक् धिक् तान्पुरुषाधमान्धनकणं वाञ्छन्ति तेभ्योऽपि ये ॥२६॥

زمین یک گرد گان گل زحق بر آب شد پیدا
زبس یه مختصر بر وی دل شاهان شد شیدا
چو شد تقسیم پس یکحصه حصه ما بیا گفتند
بدان لعنت بران کانرا کاین خواهش شود پیدا

दुर्भगसेवकस्य वाक्यमाह
न नटा न विटा न गायना न परद्रोह निबद्ध बुद्धयः ॥ नृप सद्मनि नाम के वयं कुच भारा नमिता न योषितः ॥२७॥

نه جاهل نه ضنیان نه راوی منم	نه ام دار باز و نه زانیے منم
که پیسد مراد رشهان رو برو	نه ام زن خوش با سینه و خو برو

निःस्पृहाणामधिकारमाह

त्वं राजा वयमप्युपासितगुरुप्रज्ञा
भिमानोन्नताः ख्यातस्त्वं विभवैर्य-
शांसि कवयो दिक्षु प्रतन्वन्ति नः इ
त्थं मानद नातिदूरमुभयोरप्या व
योरन्तरं यद्यस्मासु पराङ्मुखो ऽ
सि वयमप्येकान्ततो निःस्पृहाः २४

تو بی راجا و من بر خدمت مرشد همی نازم
ترا جاه و حشم ما را خزینه علم میبازم
برین هم گر ترا از من تنفر می شود پیدا
مرا هم گوشه تنهائیست کافی دل نمی بازم

अभुक्तायां यस्यां क्षणमपि न या
तं नृपशतैर्भुविस्तस्या लाभे कइ
व बहुमानः क्षितिभुजाम् ॥ तदं
शस्याप्यंशे तदवयवलेशेऽपि प
तयो विषादे कर्तव्ये विदधति जडाः
प्रत्युत मुदम् ॥ २५॥

هزاران راجگان این دیر را فهمیده خود رفتند
ترا حاصل شود اکنون بر وچه نازی سفتند
چو شد او پاره پاره پاره او حاصل شود تا چه

सी च ॥ नव धनमधु पान भ्रान्त सर्वे
न्द्रियाणा मावि नय मनु मन्तुं नोत्सह
दुर्जना नाम ॥ २२॥

خوش بر طعم ہاے ذائقہ دار آنجم — خسپ زمین بشتی پوست سنجاب وشین
نوزنشہ در سر گشتہ ہر عضو و ر درد — کہ شنداز دہان تلخ گفتار الشیان

खुशवरतुमहायाज़ायकादारआंवं खुसपज़मिनपुश्ते पोस्तसं
ज्जारपोशीं नवज़रनशादरसगिश्तहरउज़्वदर्द किशनद
अज़दहानतल्खगुफ्तारएशां ॥

मानिनामुद्दिश्याह
विपुल हृदये र्धन्यैः कैश्चिज्जगज्ज
न्नित पुरा विधृत मपरै र्दत्तं चान्यै
र्विजित्य तृणं यथा ॥ इह हि भुव
नान्यन्ये धीराश्चतुर्दश भुञ्जते-
कति पय पुरस्वाम्ये पुंसां क एष
मदज्वरः ॥२३॥

شدہ انسان کسی کو کرد بنیاد — زمین و آسمان را جا بیہ بنہاد
کہ شد پیدا بروا این دیر فانی — کہ بعضی کردہ خود را بروی قانی
کسی کو در ریاضت دل چنان داد — گذشتہ زین سحق پیوستہ دل داد
کسی کو پرورش کون و مکان کرد — ہوا و حرص را فہمید چون گرد
ببین آنرا کہ دارد حصہ ارضی — تکبر بر نبی فہمد ز فرضی

विस्युप मितौ मुखं श्लेष्मा गारं तदपि
च शशांकेन तुलितम् ॥ स्रवन्मूत्र
क्लिन्नं करवर कर स्पर्श जघन म
हो निन्द्यं रूपं कवि जन विशेषै गुरु
कृतम् ॥२०॥

دو پستان سفته طی را مثال کوزهٔ زر گفتند
چگان ابهمی ازران مثال بینی فیلان

سنجانه تف و دهن تشبیه از مهٔ چارده سفتند
چنان بی لطف جسمی را ز شعرا مثل در سفتند

अजानन् माहात्म्यं पततु शलभो
दीप दहने समीनो प्यज्ञाना द्वडि
शयुत मश्नातु पिशितम् ॥ विजान
न्तोऽप्येते वय मिह विप ज्जाल जटि
लान्न मुञ्चा मः कामान हह गह
नो मोह महिमा ॥२१॥

به بین کرمی که در شمع جا نگذارد
از زیبا لیکه از جا نبازی خویش
ز نیک و بد که انسان واقف حال

و ماهی بهر لقمه جان ببازد
نمیداند راز خفیه را بیش
نه سازد ترک گر افسوس بر حال

दुर्जन मुंह स्याह ॥
विस मलम शनाय स्वादु पानाय तो
यं शयन मवनि पृष्ठे वल्कले वास

कुल चिते रा वृत तनुः॥ क्षुधा क्षामो
जीर्णः पिठ रज कपाला र्पित गलः
शुनी मन्वेति श्वा हत मपि च हन्त्ये
व मदनः॥१८॥

ضعیف دو احد العین و پا لنگ	بریده گوش و دم زخمی و بی ننگ
زبس ریشی ز کرمی گرسنه نیز	گلوئے خم شکسته طوق شد نیز
بدین حالت رود دنبال ماده	کند کشته را کشته نفس زاده

विषयाणामधिकारमाह
भिक्षाशनं तदपि नीर समेक वारं
शय्या च भूः परिजनो निज देह मा
त्रम्॥ वस्त्रं च जीर्ण शत खण्ड म
लीन कन्था हा हा तथा पि विषया
न परित्यजन्ति॥१९॥

گدائی کرده اکل در شب و روز	کثیف و بے مزه چون خورده بسوز
زمین و بستر آرام هر دو	نه فهمیده همه را در تن او
ژلته پاره پاره لته بسته	ضعیف بار و نقش پشته گشته
وسلے در غوره ویان خویے بسته	باید گریز این نفس گره بسته

रूपतिरस्कारमाह
स्तनौ मांस ग्रन्थी कनक कलशा

ति न जनो यस्त्वय ममून् ॥ प्रजन्त :
स्वातन्त्र्या दतुल परता पाय मनस :
स्वयं त्यक्ता ह्येते शम सुख मनन्तं -
विदधति ॥१६॥

روو دیگر وزاین لذات فانی
ازان بهتر که سازی ترک لذات
چو آمد وقت آخر پیش از مرگ
وگر از خود تو تارک نفس باشی

چه گذرانی به عیش جاودانی
که او خود ترک میسازند بد ذات
دهد رنج و تعب از حد در مرگ
مسرت یابی و در روضه باشی

तृष्णाधिकारमाह

विवेक व्या कोशे विदधति शमे शा
म्यति तृषा परिष्वङ्गे तुङ्गे प्रसरति
तरां सा परिणति: ॥ जरा जीर्णैश्व
र्य ग्रसन गहना क्षेप कृपण स्तृषा पा
त्रे यस्यां भवति मरुता मप्यधिपति ७

شود هر گه که روشن روشنی نور
اگر دل در دهد در عیش نسوان

روو در دم طمع مانند کافور
نه ممکن ترک او از شاه رضوان

मदनविडंबनमाह

कृश: काण: खञ्ज: श्रवण रहित: पु
च्छ विकलो व्रणी पूति क्लिन्न: कृमि

भिस्नैस्ते: फलेर्धचिनम् ॥१३॥

نکردم ترک من آرام خانه
زخوف باد و آتش و یخ بکردم
بماندہ روز و شب در زر خیالم
چه کردم آنچه ناکردن زنا بود

گزو یا ہم امید جاودانہ
فقیری را پئے حق رہ نبردم
خیال حق شدہ از حد محالم
خیالِ عابدان برعکس ما بود

वलिभिर्मुखमाक्रान्तं पलितैरंकि
तं शिर: ॥ गात्राणि शिथिलायन्ते
तृष्णैका तरुणायते ॥१४॥

ز نقشا نقش پیری رو نمایان
خمیدہ جسم از پیری بیابد

سپیدی مثل یخ سر را کشایان
جوانی حرص را اکنون فزاید

ये नैवाम्बर खंडेन सम्वीतो निशि
चन्द्रमा: ॥ तेनैव च दिवा भानुर
होदोर्गत्यमेतयो: ॥१५॥

کند سایہ بجاہ و مہر ابرے
ذلت مید ہد یکبارہ ابرے

بجز گردش نہ حاصل ہیچ از شے
تعجب مرگ را ہم نیست ...

अवश्यं यातार श्चिर तर मुषित्वा
पि विषया वियोगे को भेद: स्त्यज

नारी पीन पयो धरोरु युगलं स्वप्ने ऽ
पि नालिङ्गितं मातुः केवल मेव यो
वन घन च्छेदे कुठारा वयम् ॥११॥

نه کردم بندگی حق را سپاسی
نه خیر اسپے کرده آسان شود دشوار
نه کردم عیش با پستان سیمی
نه ساقی حور را کردم کمر من
چه کردم تلخ نو عمرے مادر

نشنوم تارک از دون دنیا به پاسی
به جنبت سهر ما باشد بدو شتار
نه دیدم خواب از حوران جبینی
نه سینه را به سینه در برم من
که زاده شل ما فاسخ و فاجر

भोगा न भुक्ता वय मेव भुक्ता स्तपो
न तप्तं वय मेव तप्ताः ॥ कालो न
यातो वय मेव याता स्तृष्णा न जी
र्णा वयमेव जीर्णाः १२

نه خواهش وصل رفته میروم من
نه رفته بجل ما رفتیم آخر

نه آتش را پرستم سوختم من
نه رفته وقت ما رفتیم آخر

क्षान्तं न क्षमया गृहोचित सुखं त्य
क्तं न संतोषतः सोढा दुःसह शीत
वात तपनाः क्लेशान्न तप्तं तपः ॥ ध्या
तं वित्त महर्निशं नियमितं प्राणैर्न
शंभो पदं नतत्कर्म क्षतं यदेव मुनि

छ्यो स्थानं घन तिमिर रुद्धे च नयने
अहो धृष्टः कायस्तदपि मरणा पाय
चकितः ॥९॥

نه خواهش ماند باقی سینے ز یاران
نه چشم و گوش و هوش از عقل باقی

زپیری ریخته شد در جسم باران
و لیے از مرگ خوف اکنون هست باقی

हिंसा शून्यमयत्नलभ्यमशनं धा
त्रा मरुत्कल्पितं व्यालानां पशव
स्तृणांकुरभुजः सृष्टाः स्थलीशायि
नः ॥ संसारार्णवलंघनक्षमधियां
वृत्तिः कृता सा नृणां यामन्वेषय
तां प्रयान्ति सततं सर्वे समाप्तिं गु
णाः ॥१०॥

نه خوف جان کشی بی رنج حاصل
به حیوان گاه خوردن بر زمین رام
عبور دیر فانی ترک لذات
به انسان داد خدمت حق پرستی

به ماران باد حق کرده محاصل
به انسان داد خدمت حق را کام
و طالیف و در روزه ترک بد ذات
که حق بود انچه حق کرد حق پرستی

न ध्यातं पदमीश्वरस्य विधिवत्
संसारविच्छित्तये ॥ स्वर्गद्वारकपा
टपाटनपटुर्धर्मोऽपि नोपार्जितः ॥

जन्म जरा विपत्ति मरणं त्रासश्च नोत्प
द्यते पीत्वा मोहमयीं प्रमाद मदिरा
मुन्मत्त भूतं जगत् ॥७॥

ز رفتار قمر در روز و شبها کم میشود عمر نبود و مرگ پیری خوف هم در دل نمی آید		ز بار دیر فانی سینه را کم فتد خبر عجب نوشیده الفت دیر گردی میشود عمر

दीना दीनमुखैः सदैव शिशुकैरा
कृष्ट जीर्णाम्बरा क्रोशद्भिः क्षुधि
तैर्नरैर्न विधुरा दृश्येत चेद्गेहिनी
याच्ञा भङ्ग भयेन गद्गद लसत्त्रु
ट्यद्विलीना क्षरं को देहीति वदे
त्स्व दग्ध जठरस्यार्थे मनस्वी जनः ८

ز بس مفلس انسان گشته و نقش طفل گریان ز خوف دریاها بدر رفته شد خواهش کنان		ز گرسنگی عاجز زنان فریادی شد با که باشد کو گوید بجز عریان مفلس زنان

ज़ि बस्कि मुफ़लिस इन्सां कशद दल के शाति फ़ल गिरियां ज़ि गुर्सनगी
या ज़िज़ ज़िज़न फ़रयादी शुदवसा ज़िख़ौफ़े दरयां हा बदर दर शुद ख़्वा
हश कुनां किवा शद को गोयद बजुज़ गुरबां मुफ़लिस ज़िनान्

निवृत्ता भोगेच्छा पुरुष बहुमानो
विगलितः समानाः स्वर्याताः सप
दि सुहृदो जीवित समाः ॥ शनैर्य

कथा काकवत्तृष्णे दुर्नीति पापकर्म
निरते नाद्यापि संतुष्यसि ॥ ५॥

گردیدم قلعه‌ها و کوه و دریا حاصل نشد یک درم خوردم دشنام لئیمان دیگر با خوف چون زاغها	کردم ترک ز خود و نفس خود را شد بندگی بی‌حاصل حرص کم بخت گناه شدی اکنون صبر را بگیر

गर्दीदं क़िलह्राव कोह दरयाह हासिल न शुद यक दिरम कर्दं तर्क ज़ि ख़ुद
व नफ़्स ख़ुदरा शुद बन्दगी बे हासिल ख़ुर्दं दुश्नाम लईमां दीगर बा ख़ौफ़
चूं ज़ाग़हा हिर्स कम बख़्त गुनाह शुद ईं दम सबरा बगीर ॥ १॥

खलोल्का पा: सोढा कथमपि तदारा
धन परै र्निगृह्यान्तर्बाष्पं हसित
मपि शून्येन मनसा ॥ कृत श्चित्तस्त
म्भ: प्रहसितं धियामञ्जलिरपि –
त्वमाशे मोघाशे किम परमतो नर्त
यसि माम् ॥ ६॥

بود و نان بندگی سپهر دونان بود درونم پر ز اشک و از روی شادان نشد حاصل مرا بی نقش چیزی	کشیدم خنده شان سپهر دونان بود گزیدم تا گزیدیم با ز نادان کجا رقصانی از سپهر پیشتری

आदित्यस्य गतागतै रहरहः संक्षी
यते जीवितं व्यापारै र्बहु कार्य भार
गुरुभिः कालोन विज्ञायते ॥ दृष्ट्वा

نشد پیدا کسی در دور فانی
کند کو کارهای نیک فرجام
بهشتی حور را باشد وران سیر
لهذا ترک دنیا واجب آمد

اگر گذراند به عیش جاودانی
که شرش می برد در جنت انجام
چو شد آخر بیارد باز در دیر
که بهر راه حق این فاجر آمد

उत्खातं निधि शंकया क्षिति तलं
ध्माता गिरे र्धातवो निस्तीर्णः सरि
तां पति र्नृपतयो यत्नेन सन्तोषिताः
॥ मन्त्रा राधन तत्परेण मनसा नीताः
श्मशाने निशाः प्राप्तः काण वराट
को ऽपि न मया तृष्णेऽधुना मुञ्च
माम् ॥४॥

ز بهر زر زمین را چاک کردم
به دریا گشت و شهر را تازداری
شب دیجور را چون روز دیدم
کنون خواهش که این در ما نیاید
کنون خواهش ز خواهش میکنم ما را رهائی ده

بکوه و دشت کان را راه بردم
وظایف را قبوران جای تازی
ولیکن یک حبه از قسمت نه چیدم
که درمان به ازین از ما نیاید
که از بند توسن پیر آمدم ما را رهائی ده

भ्रान्तं देश मनेक दुर्ग विषमं प्राप्तं
न किञ्चित्फलं त्यक्त्वा जाति कुला
भिमान मुचितं सेवा कृता निष्फला
भुक्तं मान विवर्जितं परि गृहे साशं

श्रीगणेशायनमः॥

अथ वैराग्यशतकं

दिक्कालाद्यनवच्छिन्नाऽनन्त चिन्मात्र
मूर्तये ॥ स्वानुभूत्येक मानाय नमः शा
न्तायतेजसे ॥१॥

کنم من سجده بهر خالق داوار و داور را
نه پوشیده نه پوشیده از جهات نور حق انور

که یکسان نزد او ظاهر و باطن نیک و فاجر را
قدیر و کبریا و قادر و ستار و ناصر را

बोद्धारो मत्सरग्रस्ताः प्रभवः स्मयदू
षिताः ॥ अबोधोपहताश्चान्ये जीर्ण
मङ्गे सुभाषितम् ॥२॥

عقلمندان به خوبی تونگر را توانائی

جهالت جاهلان را داد ورزان ناتوانائی

न संसारोत्पन्नं चरितमनु पश्यामि कु
शलं विपाकः पुण्यानां जनयति भ
यं मे विमृशतः ॥ महद्भिः पुण्यौघै
श्चिर परिगृहीताश्च विषया महा
न्तो जायन्ते व्यसन मिव दातुं विष
यिणाम् ॥३॥

अथवैराग्यश
तकं

वैराग्ये सचरत्येको नीतौ भ्रमति चापरः ॥ शृंगारे रमते कश्चिद्भुवि भेदाः परस्परम् ॥९९॥

یکی انصاف گیرد کس فقیری
بدنیا یک ز یک نقشیست دیگر

یکی در عشق میماند ظهیری
شناسیدن خدا بس نو دیگر

यद्यस्य नास्ति रुचिरं नास्मिंस्तस्य स्पृहा मनज्ञोपि ॥ रमणीयेऽपि सुधांशो नमनः कामः सरोजिन्याः ॥१००॥

بآن کس دل نخواهد عشق کردن
نیلوفر شگفتد در شب ماه

نه بیند وصل از بیدا و بردن
که دارد در قمر دل بسته را راه

इति शृंगारशतकम्

किंकंदर्प करं कदर्थयसि किं कोदंड
टंकारितै रे रे कोकिल कोमलं कल
रवं किं त्वं वृथा वल्गसे ॥ मुग्धे स्निग्ध
विदग्ध मुग्ध मधुरैर्लोलैः कटाक्षैर
लम् चेतश्चुम्बित चंद्रचूड चरणध्या
नामृतं वर्जते ॥६७॥

چرا تر ساقی ای نفسم زآواز
چرا ای خوش گلو کوکل سرائی
چرا ای زن کنی ناز و کرشمه
بپای شب ز دل آویختم دل

کمان خویش را تو ده به پرواز
زمهر ما مکن کاین نغمه رائی
میفکن ناوک از سهرم زچشمه
نهادم لطف و عیش دیر و رنگل

यदासीदज्ञानं स्मरतिमिरसंचारज
नितम् तदा सर्वं नारीमयमिदमशे
षंजगदभूत् ॥ इदानीमस्माकं पटु
तरविवेकांजनदृशाम् समीभूता-
दृष्टिस्त्रिभुवनमपि ब्रह्म मनुते ॥६८

به شهوت نفس تا یکه باند جسم
کنون از نفس چون برداشتم دل
چو نظرم بست در معبود مطلق

نمایان شد جهان چون زن بچشم
مجازی را حقیقی کرد در رنگل
نمانده جز حقیقی حق مطلق

सुभ्रं सद्य सविभ्रमा युवतय: श्वेनात
पत्रोज्वला लक्ष्मी रित्यनुभूयते स्थिर
मिव स्फीते शुभे कर्मणि ॥ विछिन्ने नि
तरा मनग कूल ह चोड़ा त्रुटन्नु कम
मुक्ता जाल मिव प्रयाति भ्राटिति भ्रश्य
द्दिशो दृश्यताम् ॥६५॥

مکان صاف آراسته ریخته
زن خوبرو ناز و عشوه گذار
چو زر مشتعل عیش سازد مدام
زبونی کند درد می عیش گرد

دل عاشقان در وی آویخته
سر پر خوش و شبنمی استوار
به ایام نیکی شود شاد و کام
شکسته چو بالای پیر مرده مرد

सदा योगाभ्यास व्यसन वशयो रात्म
मनसो रविच्छिन्ना मैत्री स्फुरति यमि
नस्तस्य किमुतैः ॥ प्रियाणामालाा
पैरधरमधुभिर्वक्त्र विधुभिः सनि
श्वासामोदैः सकुचकलशाश्लेषसु
रतैः ॥६६॥

بلاغرش چو دل درحق نهاده وی
چهره الفتش به غنیا گرد هر رو
نخواهد وصل سینه مالش به پستان

محبت در دل و جان شد زیاد وی
تکلم خوبرویان خوش و دلربا
شود کانرا که خواهش سوی رضوان

نداره دل بزن هر کس فهیم است ‏ ‏ ‏ بدان بر او خدا از بس رحیم است

चाले लीला मुकुलितममी सुन्दरा दृष्टि
याता: किं क्षिप्यन्ते विरम विरमध्य थे।
य श्रमस्ते।। सुम्प्र त्यन्ये वयमुप रतं बाल्य
मास्था वनान्ते क्षीणोमोह स्तृण मिव जा।
ज्ज्वलमालोकयाम:।।९३।।

شنوا بے زن چرا این نظر بازی ‏ ‏ ‏ شوي شرمنده از این ترک تازی
که دل بر داشتم از سیر این دیر ‏ ‏ ‏ نهادم دل براه حق پے سیر
روم صحرا نه خواهش دیگر بے ما ‏ ‏ ‏ که دنیا دون چو خس شد در نظر ما
بکن آرام سبهرم دل میازار ‏ ‏ ‏ که بس گشتم ز دیدار تو بیزار

इयं बालानां मत्यन वरन मिन्दीवर दल
प्रभा चोरं चक्षु: क्षिपति किम भिप्रेतम
नया गतो मोहो ऽस्माकं स्मर शबर बाण
व्यति कर ज्वल ज्वाला: शान्ता स्तद
पि नवराकी विरमति।।९४।।

بناز و غمزه بر ما چون فدا ئے ‏ ‏ ‏ چرا تیر نگهه بر ما رها ئے
چه حاصل خواهی از ما تا رکم من ‏ ‏ ‏ شده بیخ نفس آتش تارکم من
چرا این بے وقوفی از پئے ما ‏ ‏ ‏ گذشتم من زحد از سیر دنیا

वेश्यासौ मदनज्वाला रूपेन्धन समे
धिता ॥ कामभिर्यत्र हूयन्ते यौवना
निधनानि च ८०॥

طوائف خوبرو انبوه همه بسوزاند جوانی را و زر را	درو آتش نهان از نفس خیمه شهد گو اندرو یک نفس یارا

कश्चुम्बति कुलपुरुषो वेश्याधर
पल्लवं मनोज्ञमपि ॥ चारभटचोरचे
टकनटविटनिष्ठीवनशरावं ॥८१॥

طوائف سیمبر خوش رو حریفان زناکاران و مجرد سپاهت و دزدان چلبچی رو طوائف شهر اینهاست	نگیرند از لبش بوسه ظریفان زخنیان ناقل و ساحر نوردان لبیا شتر سندگی بوسه زشترفاست

धन्यास्त एव तरलायतलोचनाना
म् तारुण्य रूप घन पीन पयोधरा
णाम् ॥ क्षामोदरो परिलसत्त्रिवली
लतानाम् दृष्ट्वा कृतिं विकृतिमेति
मनो न येषाम् ८२॥

دو چشمان صعوه یا آهو غزاله کمر باریک شکمش بشکل قاقم	جوان و سینه چون سرخاب ژاله خوشا نقشی است افتاده به قاقم

न गम्यो मन्त्राणां नच भवति भैषज्य
विषयो नचापि प्रध्वंसं व्रजति विवि
धैः शान्तिक शतैः ॥ भ्रमा वेशा दंगे
किमपि विद धद्भंग्य मसमम् स्मरोऽप
स्मा रोयं भ्रमयति दृशं घूर्णयति च ८८

نه قابل سحر و نه لایق دواسے
بهر گونه پرده بوده در ره حق
شود هر کس که تابع شهوت و نفس

چه از خواندن وظایف بهاسے
نماید خویشتن را خورده دق
نبیند در نظر هر وقت یک نقش

जात्यंधाय च दुर्मुखाय च जरा जीर्ण
खिलांगाय च ग्रामीणाय च दुष्कुला
य च गलत्कुष्ठा भिभूताय च ॥ यच्छ
न्तीषु मनो हरं निज वपुर्लक्ष्मी लव
श्रद्धया पण्य स्त्रीषु विवेक कल्पल
तिका शास्त्रीषु रज्येत कः ॥८९॥

بجا در زاد نابینا و بدشکل
شده هر عضو و پریش چون دوک
خدایے برصی و کرم افتاده
بشر در راه خبثت بسیر نار
به جسم نار یاد عیش ساز د

زهیری ضعف شد در شرب همراکل
به کمتر ذات دیهاتی و چون خوک
طوایف بهر زر دل را نهاده
طوایف را ده دل گوئے نار
بشر فاکوست گویاد بیا زد

مرو در وسے کہ بد باشد بانجام	کہ ماند از رو غارت گر کام

व्यादीर्घेण चलेन वक्रगतिना तेज
स्विना भोगिना नीलाब्ज द्युति नाहि
ना परमहं दष्टो न तच्चक्षुषा ॥ दष्टे
संति चिकित्सका दिशि दिशि प्राय
ण धर्मार्थिनो मुग्धाक्षी क्षण वी
क्षितस्य नहि मे वैद्यो न चाप्यौषधं ६६

کلان سر تیز رفتارش گره دار همان به از گزندش دور بودن اطبا اهل یونانی و از هند وسیکان راگزد زن توجانے	کبودی مثل نیلوفر کلان مار گزد گر سهر آتش تریاق سودن دوا دارند و هم مرهم و هم پند نباشد دار و اش درد و جهانی

इह हि मधुर गीतं न्नृत्य मेतद्रसोय
म् स्फुरति परिमलोऽसौ स्पर्श एष
स्तनानाम् ॥ इत हत परमार्थै रिन्द्र
यैर्भ्राम्यमाणो स्वहित करण दक्षैः
पंच भिर्वंचितोऽस्मि ॥६७॥

به دنیا شهوت و غنیان ج رقاص ازینها تو شدی نا رسی و شادی همین نفس از بیت دشمن شده ست	مساس سینه و خوش بوی و نخاس تو ناری از حق و در رنج تمادی گنهکار دجا بجا دشمن شده است

पथे ऽध्वतुर वनिता भोगि ग्रस्तं त्यज न्ति हिम त्रिण: ॥८३॥

تو ناوک جسم را دان مثل اژگر
ادا و ناز را دان چون سر مار
ز افسون ورد و از مار خورده
ولیکن کان راکه زن افعی گزیده

نهاده دل درو چون تیز خنجر
اگر دانشوری دل باز بردار
رساند سود تهبر رنج برده
گریزد گر طبیعت عالم گزیده

विस्तारितं मकर केतन धीवरेण- स्त्री संज्ञितं बडिशमत्र भवाम्बु राशौ येनाचिरात्तद धरामिष लोल मर्त्य मत्स्यान् विकृष्य पचती त्यनु राग वन्हौ ॥८४॥

ز صیاد نفس در بابی این دیر
در و از لب نهاده طعمۂ خام
کشیده پوست او را امید در دبس

نهاده حبل زن پر عشوه و سحر
چو ماهی آمده انسان در دام
به آتش عشق او را می پزد بس

कामिनी काय कांतारे कुच पर्वत दुर्गमे ॥ मास चर मन: पान्थ तत्रा स्ते स्मर तस्कर: ॥८५॥

شنو ای دل که جسم نازنینان

چو دشت ابزوه پستان کوه نبیان

بباسش لب لبش رسیدن بفهم اول اگر عزتی تو دروسیے اگر خواهی تو ترک دیر دریا	شہنگان را درو بالیست دیدن رسی در سحر برائے نہ ازو سیے زجو آسان زنان تو دور درآ

जल्पन्ति सार्द्धमन्येन पश्यंत्यन्यंस
विभ्रमा: ॥ हृदये चिन्तयन्त्यन्यंप्रि
य: को नाम योषिताम् ॥९१॥

بہ یک کس گفتگو با دیگرے ناز وفا از فرقہ نسوان نباشد	بہ الفت دیگرے را میکند ساز اگر باشد ز فرقہ زن نباشد

मधु तिष्ठति वाचि योषितां हृदि हा
ला हलमेव केवलं ॥ अत एव नि पी
यते ऽधरो हृदयं मुष्टिभि रेव ताड्य
ते ॥९२॥

زبان زنان پر ز آب حیات بکند از زبان زنان مست حال	دل ایشان پر از سم قاتل صفات بہ سینہ زنان میکند مشت بال

अपसर सखे दूरा दस्मात्कटाक्षवि
षा नलात् प्रकृति विषमा द्योषि
त्सर्पा द्विलास फणा भृत: इतर फ
णिना दष्टा: शक्या श्चिकित्सितु मौ

گل نیلوفری را بو چنان داد | که گردد گرد او ششپا زبیداد

यदे नस्पूर्णेंदु घ्काति हर दुदा रा कृति
वरम् मुरवाब्जं तन्वंग्या: किल वसति
तत्रा धर मधु ॥ इदं ताव त्स्याक दु
म फल मिवा तीव विरसम् व्यतीते
ऽस्मि न्काले विष मिव भविष्य त्यसु
खदं ॥७९॥

زنان خوبرویان ماه پاره | لبانش را چه پا به بدر یا را
شنیدستم حیات آب در لب | رسیده بر که دارد ذایقه لب
گذشته از رسیدن را برود ور | زنان را چون زحیمش ور شد نور
نماند از رو جز شور و تلخی | بران هم زال را چون مار تلخی

उन्मील त्रिवली तरंग निलया प्रोत्तु
ग पीन स्तन द्वन्द्व नोघत चक्र वाक
मिथुना वक्रां बुजो द्भासिनी कांता
कारे धरा नदी यम भित: क्रूरासपा-
ने ष्यते संसारार्णव मज्जनं यदि ततो
दूरेण संत्यज्य नाम ॥८०॥

بران فرج زنان را شان تالاب | در و پستان چو یک جفت سرخاب
در و در و نیش چه نیلوفر شگفته | جوئی در شکل زن آمد نهفته

حزاین سبے ادب جابیے شکوکات
بہ صد ہا مکروریب بگدہ جنبت
نہ قابل اعتبار و بیےیقین بس
فریب ودیح تیرا از امرت و زہر
چنان نقیضیےکہ سر زد در جہانی

محل تعجیل ہم مخزن گناہات
بدوزخ بیے بردے بیے فکر و منت
یقین کن را لبارت می بردلیس
فریبندہ بالس از مہر و از قہر
چہ نامش وا زن اندر جہانی

सत्यत्वेन शशांक एष वदनी भूतो न
चेंदी वर द्वन्द्व लोचन तां गतं न क
नके रप्यंगयाष्टि: कृता॥ किंत्वे के
कविभि: प्रतारित मन स्तत्वं विजा
नन्नापि त्वं मांसा स्थि मयं वपु र्मृ
ग दृशां मन्दोजन: सेवते ॥७७॥

نہ روچون مہ نہ چشمش ہم چو خلزاد
شریفان شاعران تشبیہ گفتند
بہ عقل دانش و گم کردگان راہ

نہ جسمش ہمچو زر بس گفتگو زاد
بہ فانی جسم در معنی شنفتند
بہ تعریف زنان مشغول شداہ

लीला वतीनां सहजा विलासास्
न एव मूढस्य हृदि स्फुरंति ॥ रागो
नलिन्याहि निसर्ग सिद्धस् तत्र
भ्रमत्येव मुदा षडांघ्रि: ॥७८॥

صفت ذاتی زن آنست عشوہ ناز

بجوش آرد دل نادان طناز

اگر بوسہ گشتند در یک نفس بس	چرا نام زنان دنیا نہد کس

तावदेवामृतमयी यावल्लोचनगो
चरा ॥ चक्षुः पथादपगता विषादप्य
प्यतिरिच्यते ॥७४॥

بہ پیش چشم چون آب حیات است	بدوری سم قاتل جان خراش است

नामृतं न विषं किंचिदेकां मुक्त्वा नि
तम्बिनीम् ॥ सैवामृतलता रक्ता वि
रक्ता विषवल्लरी ॥७५॥

نہ آب حیات است و نے سم قاتل بہ الفت و ہر جان بہ آب حیاتے	بہر و سبزہ و ہر دو از راست باطل بہ نفرت سم سبہر جان خراشی

आवर्तः संशयानाम विनयभवनं प
त्तनं साहसानाम् दोषाणां सन्निधा
नं कपटशतमयं क्षेत्रमप्रत्यया ना
म् ॥ स्वर्गद्वारस्य विघ्नो नरकपुर
मुखं सर्वमाया करण्डम् स्त्रीयन्त्रं
केन सृष्टं विषममृतमयं प्राणिनां
मोहपाशः ॥७६

تا دگر جوان با چنین تنها و هم خنیا
چه گویم من با و بهتر که بهتر شده زین دنیا

अथ कामिनी गर्हण प्रशंसा

कान्तेत्युत्पल लोचनेति विपुल श्रो
णी भरेत्युत्सुकः पीनो तुंग पयोधरेति
सुमुखाम्भोजेति सुभ्रूरिति ॥ दृष्ट्वा मा
द्यति मोदतेऽति रमते प्रस्तौति जानन्न
पि प्रत्यक्षाशुचि पुत्रिकां स्त्रियमहो
मोहस्य दुश्चेष्टितम् ॥७२॥

اگر عاشق به بیند نقش محبوب
شود دل اندر و چون وصل مرغوب
چو شد غلط سازد با دل و جان
کند تحسین حسنش با دل و جان
تو نی مهر و تو نی نیلوفری چشم
خوشا باریک پهن و در میان جسم
دو پستان تو سرخاب اند یا کوه
خوشا خلنز اندر و ابرو کمان زده
به بیند خوش بود تعریف سازد
تعجب تا کجا دل بر گمارد

स्मृता भवति तापाय दृष्टा चोन्माद
वर्द्धिनी ॥ स्पृष्टा भवति मोहाय सा
नाम दयिता कथम् ॥७३॥

इति यौवन प्रशंसा समाप्ता

شنیدن سوز در دل سی فزاید
ز دیدن شوق و شهوت می درآید

रागस्यागारमेकं नरकशतमहादुःख
संप्राप्तिहेतुर् मोहस्योत्पत्तिबीजं जल
धर पटलं ज्ञानताराधिपस्य ॥ कन्द
र्पस्यैकमित्रं प्रकटितविविधस्पष्टदो
षप्रबन्धम् लोकेऽस्मिन्न ह्यनर्थव्र
जकुलदहनं यौवनादन्यदस्ति ॥७०॥

جوانی هست یک گنجینهٔ عیب
جوانی هست خانهٔ خواهشان را
وهد تکلیف تخم حرص هست این
وزیر شهوت و شاه تکالیف
بدیها در جوانی میدهد رو

شود روشن نفس از عالم الغیب
جوانی هست خانهٔ دوزخان را
پئے شمع نور ابر سیاه هست این
نجوشد نسلان بدی میکرد تالیف
بگوییم راست سیئے فرق سر شو

शृंगारद्रुमनीरदे प्रसृमरः क्रीडारस-
स्रोतसि प्रद्युम्नप्रियबान्धवे चतुरता
मुक्ताफलोदन्वति ॥ तन्वीनेत्रचको
र पारण विधौ सौभाग्यलक्ष्मीनिधौ-
धन्यः कोऽपि न विक्रियां कलयति प्रा
प्ते नवे यौवने ॥७१॥

پئے دادن بسبر و حسن آب او منبع ستان بوده
پر لو شهوت و هم سرشیاری پُر از گوهر
شنده او گنجینه زر از گلشنی سویا گنجینه ظاهر گرد

پئے بهست کردن معدن شد سیر دل توده
ندید و چشم محبوبان نماید رسان جوهر
بگوییم زن از وگر تا چه باشد حی نماید فرد

بکوهستان شفاف شده سنگ
زهجوم شاخ بر در کوه گنجان
به کوهستان نه بودی مسکن زهد
نبودی زن نه کردی سجده از فکر

گرمی شوید دامن آب از گنگ
نمایان مثل نیندی گاو ذی شان
نه سر سودی بگوشه عابد از زهد
ز زن ترسا رود در سجدهٔ و ذکر

संसार तव निस्तार पदवी न दवी
यसी ॥ अन्तरादुस्तरानस्युर्यदि
रे मदिरेक्षणा: ॥ ६८ ॥

نه بودی زن اگر در دیر فانی
ندیدی آسان سیاره جاودانی

अथ यौवन प्रशंसा

राजन्स्तृष्णांबुराशेर्नहि जगति गत:
कश्चिदेवावसानं कोवार्थोर्थै: प्रभू-
तै: स्ववपुषि गलिते यौवने सानुरागे।
गच्छाम: सद्म तावद्विकसितनयने-
न्दीवरालोकनानाम् यावच्चाक्रम्य-
रूपं झटिति न जरया लुप्यते प्रेयसी-
नाम ॥ ६९ ॥

ندیدم ترک کو کرده هوس را
شده عادی به نظاره چشمان
وسی تا کی که ماند نور در حسن

جوانی رفت و پیری شد هوس را
رود از شوق در ره سیم جسمان
به پیری کس نمی پرسد پی حسن

اگر شهوت آن کس نه کند بس ‖ رود کوه گران بر آب چون خس

संसारेऽस्मिन्नसारे कुनृपतिभुवन
द्वारसेवावलम्ब व्यासंगव्यस्त धैर्यं
कथममलधियोमानसं संविदध्यु:
यद्येता: प्रोद्यदिन्दुद्युतिनिचयभृतो
न स्युरम्भोजनेत्रा: प्रेंखत्कांचीक
लापा: स्तनभरविनमन्मध्यभाजस्त
रुण्य: ॥६६॥

ز بس تابان چون صد بدر یکجا
خمیده شد ز بار سینه جسمش
نبودی زن اگر در دیر فانی
جوانان عقلمندان صاحب حال

خوشا رو خوش گلو در دیر یکتا
چو گل نیلوفری از خم چشمش
نکردی کس خلاف حکمرانی
نبودی پیش شاهان عجز و پامال

सिद्धाध्यासितकन्दरे हरवृषस्कंधा
वरुग्णद्रुमे गंगाधौतशिलातले हिम
वत: स्थाने स्थिते श्रेयसि ॥ क: कु
र्वीत शिर: प्रणाममलिनं म्लानं मन
स्वीजनो यद्वित्रस्तकुरंगशावनयना
नस्यु:स्मरास्त्रं स्त्रिय: ॥६७॥

صلاح نفس اماره بگیهان ‖ زبانِ چشم نیلوفر و جیهان

स्त्रीमुद्रां भषकेतनस्य जननीं सर्वा
र्थसम्पत्तिकरीम् येमूढा प्रविहाय यां
ति कुधियो मिथ्याफलान्वेषिणः ॥
तेतेनैव निहत्य निर्दयतरं नग्नी कृता
मुण्डिताः केचित्पंचशिखीकृताश्च
जटिलाः कापालिकाश्चापरे ॥ ६४ ॥

نقاب خورده پس هر کس دیده رو
نکشته نفس اماره ازان پیش
بآخر میشود کشته ز شهوت
کسی اصلاح سر خود میکناند
جٹا در سر کسی پا دست کرده

شود بی عقل کم فهم و قسم خو
کند ترک زنان بی حکمت خویش
به بی رحمی کند عریان ز شهوت
کسی پنج جعد در سر میکناند
کسی پالنگ کس از شوق کرده

विश्वामित्र पराशर प्रभृतयो वाता
म्बुपर्णाशना स्तेऽपि स्त्री मुखपंकज
सुललितं दृष्ट्वैव मोहं गताः ॥ शाल्य
न्नं सघृतं पयो दधि युतं भुंजन्ति ये
मानवा स्तेषामिन्द्रिय निग्रहो यदि भ
वेद्विंध्य स्तरेत्सागरम् ॥ ६५ ॥

ز برگ و آب باد و در بیابان
وسیلے خوش رود زن حور بهشتی
کنند هر کس غذا از روغن و شیر

غذا کرده ز شوا متی تا بان
بدیدن غرق شد دریا چو کشتی
ز جغرات و برنج و طعام تدبیر

शास्त्रज्ञोऽपि प्रथित विनयोऽप्यात्म
बोधोऽपि बाढम् संसारेऽस्मिन् भव
ति विरलो भाजनं सद्गतीनाम् ॥ येनै
तस्मिन् निरय नगर द्वारमुद्घाटयन्ती
वामाक्षीणां भवति कुटिला भ्रूलता कु
ञ्चिकेव ॥६२॥

بہ صرف و نحو شاغل و واقف علم
بہ مشکل میرسد کس عاقبت خویش
بلا براین جسم انسان ہست یک شہر
سنان تیر و کمان و خنجر و تیغ

و یا زاہد کہ دارو حد در حلم
نہ سازد خویشتن را از ہوا ریش
اگر حملہ بزن باشد بعید قہر
بیکدم میگذارد برق چون میغ

कृशः काणः खञ्जः श्रवण रहितः
पुच्छ विकलो व्रणी पूय क्लिन्नः
कृमि कुल शतैरावृत तनुः ॥ क्षुधा
क्षामो जीर्णो मृन्मय कपालार्पित
गलः शुनीमन्वेति श्वा हतमपि च
हन्त्येव मदनः ॥६३॥

بیبالاغر و صم و بکم یا لنگ
کرم افتاد از حد گرسنہ ہم
بانیحالت رسیدہ سگ ز شہوت
کند این نفس ما را اینچنان خوار

بہ یک چشم و زخم ریم سیلے بنگ
رسیدہ عمر طوق از گلو خم
رود دنبالہ سگ مادہ ز شہوت
کہ گردانہ مرا از نیک کردار

देवेन्द्रियाणां लज्जांतावद्धिधत्तेविनय
मपिसमालम्बतेतावदेव ॥ भ्रूचापा
कृष्टमुक्ताः श्रवणपथिगतानीलपक्ष्मा
ल: णाएते यावल्लीलावतीनांनहृदिधृतिमुषो
दृष्टिबाणाःपतन्ति ॥५९॥

بماند راستی در راست بازان
دگر مه رو کشد ابرو کمان را
نباشد کس گزو یابد رهائی

حیا و شرم ماند تا به انسان
دہد سر تیر مژگان صید جان را
کہ داند خویشتن را در خدائی

उन्मत्तप्रेमसंरम्भा दारभन्तेयदंगनाः
तत्र प्रत्यूहमाधातुं ब्रह्मापिखलुका
तरः ॥६०॥

کند وصل گر بوالہوسین بے حجاب
کرا دل که دل بر نہد از رحش

کند ناز و غمزه ادا در شباب
چه طاقت که بر جہا شود باز پس

तावन्महत्त्वंपाण्डित्यंकुलीनत्वंवि
वेकिता ॥ यावज्ज्वलतिनांगेषु हतः
पंचेषुपावकः ॥६१॥

لیاقت علمیت خوش خاندانی
بماند تا نگرد دستا نجل عیش

تحمل عور و ہمت جا و دانی
که مار پنج سر آر دبر و طیش

ण्डितानां ॥ जघनमरुण रत्न ग्रंथिका
ञ्ची कलापम् कुवलय नयनानां कोवि
हातुं समर्थः ॥५६॥

زحافظ صاحب تقریر حاصل ولے مشکل کہ ترک مہ جبینان	نباید ترک گیر از بہر چہ کامل کند گیرد رہِ گوشہ نشینان

स्वपर प्रतारकोऽसौ निन्दति यो लीक
पण्डितो युवतीः यस्मात्तपसोऽपि फलं
स्वर्गस्तस्यापि फलं तथा प्सरसः ॥५७

کند ہر کس مذمت ماہرویان چرا از فقر و زہد است حاصل نور	چہ حاصل گفتنِ بد ماہرویان بہشتِ ہست و آنجا حاصل حور

मत्तेभकुम्भदलने भुवि सन्ति शूराः
केचित्प्रचण्डमृगराजवधेऽपि दक्षाः
किन्तु ब्रवीमि बलिनां पुरतः प्रसह्य
कन्दर्पदर्पदलने विरला मनुष्याः ॥५८

توان فیل را کرد قابو جوان ولے بس کہ مشکل کشتہ نفس را	توان کشتنِ شیر در یک زمان کہ نام آور در جہان مرد را

सन्मार्गे तावदास्ते प्रभवति स नरस्ताव

بگویم بشنو اینجا تا ان من این	که باند اندرین دنیا وبا دین
یکی باید زن خوش روجوان نو	شود از صحبت خود همچو با نو
ویا باید کند گوشه نشینی	نه بیند از چه نا بینی و بینی

सत्यं जना वच्मि न पक्षपातात् लोके
षु सर्वेषु च तथ्यमेतत् ॥ नान्यन्मनो
हारि नितम्बिनीभ्यो दुःखैक हेतुर्न
च कश्चिदन्यः ॥५४॥

بگویم راست بشنوای عزیزم	نه جانب داری ونی از فریبم
درین دنیا بجز زن نیست زیرک	بغارت می برد از ذکر کردن
کسی کو طالب حق راست باز نیست	نه بیند زن که درزن حیله بسیار نیست

अथ दुर्विवेक प्रशंसा

तावदेव कृतिनामपि स्फुरत्येष नि
र्मल विवेक दीपकः ॥ यावदेव न कु
रंग चक्षुषां ताड्यते चपल लोचना
चलैः ॥५५॥

شود روشن چراغ زاهدان حد	نراند تیغ آهو چشم از کد

वचसि भवति संगत्याग मुद्दिश्य वा
र्ता श्रुति मुखर मुखानां केवलं प

नाख्येय: स्फुरति हृदये कोऽपि महिमा
॥५१॥

بمطلب پاکی مطلب درین دیر
براند لغو دل وز روی نه بندد
نفوذ عامل کند تسخیر دل را

براند فانی وهر جا کند سیر
وگر بندد دل از حق در به بندد
نه طاقت گفتن حالت زبان را

भवन्तो वेदांतप्रणिहितधियामाप्त
गुरवो विदग्धालापानां वयमपिक
वीनामनुचरा: ॥ तथाप्येतद्ब्रूमो न
हि परहितात्पुण्यमधिकं नचास्मि
न्संसारे कुवलयदृशो रम्यमपरम्
॥५२॥

شمایان واقفان علم جاوید
برآرد کار را از امید واری
نباشد به ز زن آرام دیگر

و مایان پیر شعرا علم از وید
ازان شتر سک عید بندی گذاری
که وصلش شیء نماید لطف دیگر

किमिह बहुभिरुक्तैर्युक्तिशून्यै: प्रला
पैर् द्वयमिह पुरुषाणां सर्वदा सेवनी
यम् ॥ अभिनवमदलीलालालसं सु
न्दरीणाम् स्तनभरपरिखिन्नं यौवनं
वा वनं वा ॥५३॥

کند حرکات شهوت خود چو با زن
ز تیزی خویش خشا (؟) ند چو زلفش
بوقت شوق سسکاری بگیرد
چو قشقه بیره به پستانش نمودار
خوشا زانکش برو لرزان ز سردی
زنانرا میدهد کسل از لب خویش

همان حرکات از باد است از زن
بگیرد بوسه از رخ ان زن زلفش
همان از کثرت سردی بگیرد
ازین مالش به پستانش بد سکار
دهد مالش به لقش یا می شکلی
به شستر است این هوا لقال لرزش

केशानाकलयन्दृशोमुकलयन्वासो
बलादाक्षिपन् आनन्वन्पुलकोद्गमं
प्रकटयन्नालिंगयकम्पञ्छनैः वारं
वारमुदारसीत्कृतकृतोदन्तच्छदान्
पीडयन्प्रायःशैशिरएषसम्प्रतिमरु
त्कान्तासुकान्तायते ॥५०॥

هوا استشری ز لبس بیے باک باشد
کشد گیسو کند پستانش را تنگ
دهد قشقه بیره گیرد دربرا زبر
دهد دندان بدندان برلبان لب

چو مالک خانه با زن جفت باشد
بگیرد پارچه از جبر بیے ننگ
دهد لرزانی و سسکاری برابر
نماید حرکتے بیے خوف بیے دب

आसाराःसन्त्वेतेविरतिविरसायामः
विषयाजुगुप्सन्तांयद्वाननुसकल-
दोषास्पदमिति ॥ तथाप्यन्तस्तत्त्वे-
प्रणिहितधियामप्यतिबलस्तदीयो

چو بر لب آب تشنه میگذارند | نه نوشد گرچه بر قسمت شمارند

हेमन्ते दधिदुग्धसर्पिरशना मांजिष्ठ
वासोभृतः काश्मीरद्रवसान्द्रदिग्ध
वपुषः खिन्ना विचित्रै रतैः॥ पीनो
रुस्थलकामिनीजनकृताश्लेषा गृहा
भ्यन्तरम् ताम्बूलीदलपूगपूरितमु
खा धन्याः सुखं शेरते॥ ४८॥

غذا از روغن و از شیر و جغرات
ز قشقه زعفرانی زیب بر سر
دهن پر از تنبول و بوئے مرغوب
کنند عیش و طرب دایم بخانه

ز رنگ قرمزی پوشاک آراست
ز انواع جماع شد کسل ور به
به قسمت ور شود این جمله شه خوب
نه خوف راقب و بینے از بیگانه

अथ शिशिरः

चुम्बन्तो गंडभित्तीरलकवति मुखे
सीत्कृतान्यादधाना वक्षःसूत्कंचुके
षु स्तनभरपुलकोद्भेदमापादयन्तः॥
ऊरूनाकंपयन्तः पृथुजघनतटास्रंस
यन्तोंशुकानि व्यक्तं कांताजनानां वि
टचरितकृतः शैशिरा वान्ति वाताः
॥४९॥

हृशागाढं समालिंग्यते जाता: शीतल
शीकराश्चमरुतो वान्त्यनु खेदच्छि
दो धन्यानां वतदुर्दिनं सुदिनतां या
ति प्रिया संगमे ॥४६॥

بِبالاخانه باد افتاده بارش
نه طاقت خیزد تاب جدائی
شود چپان ز بنِ خویش رو بصد شوق
به طالع ور رسید میشود این

بخواب شوق باشود در کنارش
ز باد و سرد چون یابد رهائی
رفع سردی شود هم لطف هم ذوق
که یابد لطف از دنیا و هم دین

अथ शरत्

अर्द्धनीत्वा निशाया: सरभससुरता
यासखिन्नश्लथांग: प्रोद्भूतासह्य-
तृष्णो मधुमदनिरतो हर्म्यपृष्ठे वि
विक्ते ॥ संभोगक्लान्तकान्ता शिथिल
भुजलतातर्जितं कर्करीतो ज्योत्स्ना
भिन्नाच्छधारापिबति न सलिलं शा
रदं मन्दभाग्य: ॥४७॥

گذشته نصف شب بر بالا خانه
به شوق وصل و مل از شوق دل برد
ز بس از تشنگی با مرد مخمور
ز لت البتن چو شد رنجور آخر

به تنهائی به همسر و اهل خانه
ز حدِ کسل شد در جسم پژمرد
که شد از شهوت و مستی چو رنجور
نیابد یار دار سینه او به آخر

इतो विघहल्ली विलुसितमित: केत
किनरो: स्फुरक्रन्ध: प्रोघजलदनिन
दस्फूजितमित: ॥ इत: कोकिक्रीडा
कलकलरव: पक्ष्मलदृशाम् कथं
यास्यन्त्येते विरहदिवसा: संभृतर
सा: ॥४४॥

بہ گیسوا بر برق انگن نمو دار
نہ زیور خوش تیغ بود و لیے ز آواز
زن کش سنو بود و در رہ نوردی

بہ گیسو بود کہ در گل رعد خونخوار
نہ از طاوس قاصدان پرواز
نہ ار آمد چہ از گرمی و سردی

असूची संसारे नमसि नभसि प्रोद
जलद ध्वनि प्राप्ते तस्मिन् पतितदृ
षदो नीर निचये ॥ इदं सौदामिन्या:
कनक कमनीयं विलसितं मुदंच
म्ला निंचप्रथयाति पथि ध्वेच सुहृ
रां ॥४५॥

بماہ تیرا بر تیرہ در دیر
خوشا مہر دگر کہ در بر عاشق خویش

فغان رعد و برق و بارش تیر
بر و قیمت و دور افتادہ دلریش

आसारेण न हर्म्यत: प्रियतमै यातुं
बहि: शक्यते शीतोत्कम्प निमित्तमायत

हर्षम्॥४१॥

زخواهش طبع پر شهوت زن خوش
نباشد کس بهوسم برسگالی

دو پستان گرازش قمقمه وش
نه چینید گل زمار بی مثالی

वियदुपचितमेघं भूमय: कन्दलिन्यो
नवकुटजकदंबामोदिनो गन्धवाहा:
शिखिकुलकलकेकारावरम्या: वना
न्ता: सुखिनमसुखिनं वा सर्वमुत्कंठ
यन्ति॥४२॥

ابر بر آسمان و در زمین خل
وید خوبی و هم تازه کند دل
بسا خوش مست طاوسان رقاص

کو تنج باد قدم خوشبوئی صندل
کند اندوه از فرحت مبدل
برد آخر غریبان را به نخاس

उपरि घनं घनपटलं तिर्यग्गिरयोऽपि
नर्तितमयूरा:॥ वसुधा कंदलधवला
तुष्टिं पाथिक: कयातु संचत्त:॥४३॥

ز تار ابر شد بر آسمان تار
زمین شد با خلابه لیک در دل
خوشا هر چیز لیکن شهوت انگیز

به جید کوه طاوسان نمودار
مسافر را فلد چون پای در گل
بدور افتادگان خالد بدل نیز

किरणा: पराग: कासारे मलयजरज:
सीधुविशदम् शुचि: सौधोत्संग: प्र
तनु वसनं पंकज दृशो निदाघेतूर्णं
तत्सुख मुख लभन्ते सुकृतिन: ३९॥

زگل مالا و باد خوش شب ماه
بڑہ ادہ صندل و بہتر مکان صاف
بہ تابستان ز قسمت میرسد عیش

زنیلوفر و خشبگیہا و درراہ
خوشا ہم مہ جبین آراستہ صاف
چہ داند مفلس از کردن عیش

सुधाशुभ्रं धाम स्फुरदमलरश्मि: शशधर: प्रियावक्त्राम्भोज मलयजरजश्चातिसुरभि॥ स्रजो हृद्यामोदास्त
दिदं सर्वं रागिणि जने करोत्यन्त:
क्षोभं नतु विषयसंसर्गविमुखे॥४०॥

مکان شفاف روشن و رشب ماہ
بڑادہ صندل و خوشبوز اقسام
کنند کو ترک او را چون خدا این

بخوشبو دار مالا مہ رو ہمراہ
بہ سوز اندر ز ناکامان اجسام
کہ بینند ز حق دنیا و ہم دین

अथ वर्षा समय:
तरुणी वेषा दीपित कामा विकसि
त जाती पुष्प सुगन्धि: उन्नत पीन
पयोधर भारा प्रावृट्कुरुते कस्य न

رفع سردی شد و آمد بهاری
خزان را برد چون دزدان زر را

نمایان در جهان باد بهاری
برو صرصر چو کهنه بر شجر را

महकार कुसुम केसर निकर भरामो
द मूर्छित दिगन्ते ॥ मधुर मधु विधुर
मधुपे मधौ भवेत्कस्य नोत्कण्ठा ॥३७

ز گل هوا معطر یک جهانی
بنفشه با پشت از زردی نشانی
به این موسم نباشد کس درین دیر

خشب شیرین گل نو شد نهانی
نمایان داغ از خشم کمانی
که ناید شهوتش از کردن سیم

अथग्रीष्मवर्णनं
अच्छाच्छ चन्दन रसार्द्र करा मृगा
क्ष्यो धारा गृहाणि कुसुमानि च कौ
मुदी च ॥ मन्दो मरुत्सुमनसः शु
चि हर्म्य पृष्ठम् ग्रीष्मे मदं च मदनं
च विवर्द्धयन्ति ॥३८॥

ز صندل صاف سوده دست تر او
بیا خوشبو ز عطر و گل بهر سو
شود بر سقف بیند این چنین سیر

فواره در مکان آراسته او
لتاؤ ماه شب هم باد موزو
نه تابد بر شهوت کیست در دیر

स्रजो हृद्यामोदा व्यजन पवनश्चन्द्र

आवास: किल किंच देव दयिता पा
र्श्वे विलासालस: कर्णे कोकिल का
कलीक लख: स्मेरो लता मराहप:
गोष्ठी सत्कविभि: समं कतिपये:
सेव्या: सितांशो: करा: केषांचित्सु
खयन्ति नेत्र हृदये चैत्रे विचित्रा:
स्मया:॥३५॥

دہد آرام در بر تا ز سینے
ز کویل خوش بود آواز مرغوب
خوشا موسم بہار و ماہ شب چیت
نماید خوش بہ جسم و دل و جان را

کہ داند ناز و عشوہ مہہ جبینی
و یا صحبت بہ ذی علمان بود خوب
بماہ چیت از جنت برد بہشتے
ویلیے تکلیف دور افتادگان را

पान्थस्त्री विरहानलाहुति कलामा
तन्वती मंजरी माकन्देषु पिकांगना
भिर धुना सोत्कंठमालोक्यते ॥ अप्य
ते नव पाटला परिमला: प्राग्भार पाट
च्चरा वान्ति क्लान्ति वितान तानव क्र
त: श्रीखण्ड शैलानिला:॥३६॥

زن رہرو را در موسم بہاری
درختان را ز نو برگ و زرین گل
ز باد پاٹل و خوشبو معطر

شود رنج و تعب با ہم گریہ زاری
سبز و کویل برد چون لالہ گل
بسنت آمد ہوا شد خوب خوشتر

شمیم صندل آورا تا دہباز	زنِ نورا با آن حد می سنز و ناز

ऽथ ऋतु वर्णनम्
तत्रादौ वसंतस्य

परिमल भृतो वाताः शाखा नवांकुर
कोटयो मधुर विरतोत्कराठ वाचः
प्रियाः पिक पक्षिणाम् ॥ विरल सु
रत स्वेदोद्गारा वधू वदनेन्दवः प्रस
रति मधौ राज्यां जातो न कस्य गुणोद
यः ॥३३॥

بہ ساخ نوگل و برگ شجر بود عرق ہم رخ ز گرمی حسن افزود نباشد کس کہ دل از وی گمارد	بہ خوشبو معتدل بادِ سحر بود خوشا کویل خوش آرو مہ جبین بود بہار آمد بشہوت شہوت آرد

मधुरयं मधुरै रपि कोकिला कल
कलै र्मलयस्य च वायुभिः ॥ विर
हिणः प्रणिहन्ति शरीरिणो विप
दि हन्त सुधापि विषायते ॥३४॥

ہلاکت مید ہد از ترک و تازیے نمیرد لیکہ ماند پا سیے در گلِ حیاتِ آب گردد آب ماریے	بہ صاحب شہوتان موسم بہاری ز بادِ صندل و آواز کوئل چہ باک کس این کہ در موسم بہاریے

دو یکدل را عجب لطف و وصال است | به بالعکس این بیهوده اتصال است

प्रणय मधुरा: प्रेमोद्गाढा रसा दलसा
स्तथा भणिति मधुरा मुग्ध प्राया: प्र
काशित सम्मदा:॥ प्रकृति सुभगा वि
स्रम्भार्हा: स्मरोदय दायिनो रहसि कि
मपि स्वैरालापा हरन्ति मृगी दृशाम् ३०

با آهو چشم معشوق به تنها
صفاتش را چه گویم خوبتر از خوب
به شیرین گفتگو واقف ز اسرار
تکلف بر طرف از راز نهان

به شیرین لهجه و ناز و ادا ها
به پیران هم دهد شهوت ز مرغوب
به ناکامان رسد از شهوتش بار
کرا طاقت که آرد بر لب از آن

आवास: क्रियतां गाङ्गे पापवारिणि
वारिणि ॥ स्तनमध्ये तरुण्या वा म
नो हारिणि हारिणि ॥३१॥

به آب گنگ بودن بس که بهتر
و یا با دلربای نوجوانی

تبیر واز گنه بهتر و مهتر
درون درمیان او نهانی

प्रिय पुरतो युवतीनां तावत्पद मात
नोतु हृदि मान:॥ भवति न यावच्चन्दन
तरु सुरभिर्मधु सुनिर्मल: पवन:॥३२॥

نمایان عرق بر رخ شاهد تکانش	به قسمت ور رسد لب از لبانش

आमीलितनयनानांय:सुरतरसोऽनु
संविदंकुरुते मिथुनेमिथोवधारि
तमवितथमिदमेवकामनिवर्हणम् २७

خمار آلوده وش چشمانش در شوق	وصالش میدهد صد گونه صد ذوق
وصال او بنداق او با خوب	کند سیری بعاشق خوب مرغوب
مذاق او دو سو آب حیات است	حیات از این بهتن آب حیات است

इदमनु चितमकमस्य पुंसो यदि
हजरास्यापिमान्मथो विकारः ॥ तद
पिचनुकृतं नितम्बिनीनाम् स्तनपत
नावधिजीवितं रतंवा ॥२८॥

به پیری پیر را شهوت نه زیبد	وگر زیبد زن از وی کی فریبد
به شهوت مرد باید قادر انسان	فرو دانید پستانش خزان سان
چو مردا و قبل از لطف وصالش	بفهمد فهمدان از راز این بس

एतत्काम फलं लोके यद्वयो चित्त
ऐकता ॥ अन्य चित्त कृते कामे शव
यो रिव संगमः ॥२९॥

माड्भामेलिमनागमानितपुणंजातामि
लाषंततः सम्रीडंतदनुश्रथोद्यतमनु
प्रत्यस्तधैर्यंपुनः॥ प्रेमार्द्रस्पृहणीयनि
र्भररहः क्रीडाप्रगल्भाततो निःशंका
गविकर्षणादिकसुखरम्यंकुलस्त्री
रतम्॥२५॥

بجوشش نسلان زبان وصلت لبش خوب
که در برما بیاید خوب محبوب

چو آید پیش خوف از وصل او دل
وهم در جنبش بود چندین مقفل

بشوق عشق او صبر سست در کار
دل بیزار بالاخر بردکار

زلبس شرم و ادا و خواهش دل
بداند هر که داند خواهش دل

بسینه سینه از لب لب بسته
کمرساقش ز دستش دست بسته

چو شد مشغول در وصالش به آخر
گره بسته گشاید هم به آخر

حجاب نوعروسی چون به برخاست
بحسن یکدگر مشغول پرداخت

उरसिनिपतितानांस्त्रस्तधम्मिल्लका
नां मुकलितनयनानांकिंचिदुन्मील
तानाम्॥सुरतजनितखेदस्वाईगण्ड
स्थलीना मधरमधुवधूनांभाग्यवंतः
पिबंति॥२६॥

به سینه عاشق خود او فتاده
خوشا مهرو که گیسویش گشاده

به چشم مست او دل عاشق ربوده
نشان از خواهش وصلش فزوده

रयन्तीयाशिनोमयूखान् ॥२२॥

کسی تو عمر طالب عاشق خویش
نشیند ایستد بیند رخ ماه
شعاع ماه را اندر جیب آور

بزیر شجر نوبسته دل خویش
زجا در سینه کفا زدست و از آه
دلش بی تاب چون لی آتش آذر

स्पर्शने दर्शने मानः कामा दृष्टापरि
ध्यंगरसे कलोभाः ॥ आलिंगितायां पु
नरायतास्या माशास्महे विग्रह योर
भेदम् ॥२३॥

ندیده خواهش دیدار دارد
چو وصلش شد باید در دل این

چو دیدش روز وصل راشمارد
جدا مکنا دیا رب ما از این تن

मालती शिरसि जृंभणोन्मुखी ॥ चन्द
नं वपुषि कुंकुमान्वितम् ॥ वक्षसि -
प्रियतमा मनोहरा स्वर्गराय परिशिष्ट
आगतः ॥२४॥

سر از مالتی گلها سبک بود
بسوده زعفران و عطر و صندل
سزد گویم که حوران بهشت اند

بزلف عنبرین یار دو سر بود
زپستانش معطر خار در دل
نشان آرام جنت در جهان اند

چو نقش پای آهو درج سیمینی
ولی باید که لالِ تر گران بار
ز دستِ خویش بر درجش بدارد

کلیدش لال تر از کان جبینی
که تا مهرو بر و آید ز دل یاره
که لطفِ اندرونی بر ندارد

मुखेन चंद्र कान्तेन महा नीले शि
रो रुहैः ॥ पाणिभ्यां पद्मरागाभ्यां रे
जे रत्नमयीव सा ॥२०॥

رخش چون ماه جعدش عنبری بود
نمایان بود چون حوران به جنت

کف پایش چو گل نیلوفری بود
بگویم سان جواهر تا چه سنت

संमोहयन्ति मदयन्ति विडम्बयन्ति
निर्भर्त्सयन्ति रमयन्ति विषाद यन्ति।
एता प्रविश्य सदय हृदयं नराणाम्
किं नाम वाम नयनान समाचरन्ति २१

کند غافل و هم بد مست سازد
به شادی شاد و در سختی برد ننگ
رود در دل کند ناکردنیها

کند خوش بعد تفریحش نساید
کمان چشمش به خالد در دل تنگ
زنان کردار سازد کردنیها

विभ्रम्य विभ्रम्य वन द्रुमाणाम् ॥
छाया सुतन्वी विचचार काचित् ॥
स्तनो त्तरीयेण करो द्धृतेन निवा

و اگر خواهش پستان ہمین
تو داری خواہش نرخ خوردن را
تو یابی از ریاست خواهش دل

و ور انش کیلہ سان با خاصہ ہمین
زیادت کن شکر یابی حاصلش را
ز نیکی میرسد بر خواہش دل

मात्सर्यमुत्सार्य विचार्य कार्यमार्याः
समर्यादमिदं वदन्तु ॥ सेव्या नित
म्बाः किल भूधराणां मुत स्मर स्मेर
विलासिनीनाम् ॥१८॥

بلا ریب و ریا از کاملان ہند
شوم عارف کنم گوشہ نشینی

ہمی پرسم ز انصاف پے ہند
و یا با ماہرو بوسہ گزینی

संसारेऽस्मिन्नसारे परिणतितरले
द्वे गती पण्डितानाम् तत्त्वज्ञानामृ
ताम्भः प्लुतललितधियां यातु कालः
कदाचित् ॥ नोचेन्मुग्धाङ्गनानां
स्तनजघनभराभोगसंभोगिनीनाम्
स्थूलोपस्थस्थलीषु स्थगितकर
तलस्पर्शलोलोद्यतानाम् ॥१९॥

درین تا یابد ار دیر و دیر ہین
شناشد حق و یابد حاصل او
دگر حاصل نه باشد این ز تقدیر

بیاب از عاقلان و دیاد گار این
ز صحبت نیک باشد عاسل او
شود یابل بپستان زان و تدبیر

पमधिकं रोमावलीकेनसा ॥१५॥

ز پستان مدور بار در بر
لبان چون غنچه گل سرخ ست و باریک
ز شوق عشق تو مارا چو مار اندر
وسیلے بر تو کماند ار گل تر
نمایان نقش پا ز آهوے چین ست
ازین رو هیچ ناید کار از من

روان چشمانش بر و مثل خنجر
کند شرمنده گیسو لیل تاریک
چه باشد پاک ما هم جان نثار ند
نوشته بر جبینت عصمتی بر
که بر برگ سمن چون عنبرین ست
نمیدانم چرا رنجیدی از من

गुरुणा स्तनभारेण मुखचंद्रेण भास्वता ॥ शनेश्वराभ्यां पादाभ्यां रेजेग्रहमयीवसा ॥१६॥

ز بار سینه در شد مشتری شید
چو فیل مست یا چون زحل رفتار

نمایان بدر رخ بهتر ز لس پر
وهدر رونق به این هر سه ز گفتار

तस्याः स्तनौ यदि घनौ जघनं विहारि वक्रं च चारु तव चिंतकिमाकुलत्वम् ॥ पुरायं कुरूष्व यदि तेषु तवाभिवाञ्छा पुण्यैर्विना नहि भवन्ति समीहितार्थाः ॥१७॥

कुंभ द्वय मिथं तन्विवपुः प्रशांत मपि
नैक्षोभं करोत्येव नः ॥१२॥

بہ خوش بندی گیسو چشم غلنزاد
پیچ است از کوزہ بپستان

ز دندان سالک شرمندہ بہزاد
ہمیگیرد دل انسان نادان

मुग्धे धानुष्कता केय मपूर्वा त्वयि
दृश्यते ॥ यथा हरसि चेतांसि गुणै
रेव न सायकैः ॥१३॥

کمان ابرو را گفتہ کای دل افروز

کہ می گیری دل انسان چہ بی سوز

सति प्रदीपे सत्यग्नौ सत्सु तारा रवीं
दुषु ॥ विना मे मृग शावा क्ष्या तमो
भूतमिदं जगत् ॥१४॥

بمانند شمع یا آتش و یا ماہ

ہمہ تاریک بی معشوق رخ ماہ

यद्वृत्तः स्तन भार एष तरले नेत्रे चले
भ्रूलते रागान्धेषु तदोष्ट पल्लव मि
दं कुर्वन्ति ना मव्यथां ॥ सौभाग्या
क्षर पंक्ति रेव लिखिता पुष्पा यु
धेन स्वयम् मध्यस्यापि करोति ना

زسوده زعفران مالیده تن او دو پستانش چو سیمین خام زیبا فغان خلخال و دل عاشق ربوده	فتاده بر طرف تیر نظر او به لرزان هار زیر بر کفه دیبا نه بوده هر کرا بوده ربوده

नूनं हिते कवि वरा विपरीत बोधा ये
नित्य माहुर बला इति कामिनी नाम्
॥ याभि र्विलोल नर तारक दृष्टि पातैः
शक्रा दयोपि विजिता स्त्व बलाः क
थंता ॥१७॥

سزد گویم اگر بر شاعران هند چه نسبت پهلوان ز عارف انسان	که گوید زن را ابلا چون خردمند کند تسخیر در یکدم ز دیوان

नूनं माज्ञा कर स्तस्याः सुभ्रुवो मक
र ध्वजः ॥ यत स्स न्नेत्र संचार सूचि
तेषु प्रवर्तते ॥१८॥

خدنگ ناز کشش را تیز باشد	غلام او به دل گل نیز باشد

केशाः संयमिनः श्रुते रपि परं पारं
गते लोचने अन्तर्वक्त्र मपि स्वभाव
शुचिभिः कीर्णं द्विजानां गणैः मुक्ता
ना सनता धि वास रुचिरं वक्षोज -

स्वाद्येषु नदोष्ठ पल्लव रस: स्पृश्येषु किं नतनु: ध्येयं किं नवयौवनं सुहृदये: सर्वत्र तद्विभ्रम: ॥७॥

نگاہے عاشقاں را چیست مرغوب بہ بوسیدن بود خوش با دلبر او مذاق و لمس از بوس و مساسش	رخ معشوق خوش ہم چشم مرغوب بہ بشنیدن بود خوش نغمہ او تصور از جوانی لہو و لعبش

राना: स्वल द्वलय संह्वातिमेखलो
त्थ झंकार नूपुर रवा हृत राजहंस्य:
कुर्वन्ति कस्य न मनो विवशं तरु
णयो विवस्त मुग्ध हरिणी सदृशै:
कटाक्षै: ॥८॥

زنان را ہم صدای زیور و بازو کنند شرمندہ بادہ راج ہنساں نباشد کس کہ ناید در کمندش	بجنبش آوازئے خلخال نازو ز چشم نازآ ہوئے نیستاں ز ذرہ تا قمر گیرد کمندش

कुंकुम पंक कलंकित देहा गौर पयोधर कम्पित हारा ॥ नूपुर हंस रणत्पद पद्मा कं न वशीकुरुते भुवि रामा ॥९॥

यः ॥ वक्षोजा इभ कुम्भ सम्भ्रम हरौ
गुर्वी नितम्ब स्थली वाचा हारिच मा
दैव युवति षु स्वाभा विक मण्डनं ॥५॥

بهر رو جسم نازک چشم غلزاد
چه نسبت نار وکشش پا را ز کاکل
چه نسبت نار جبل او از سر فیل
سر نیش را به ترحی از که گویم
نماید در جوانی در تن خویش

بلاحش همچو زر یل بهتر وزراد
شده شر مسنده در باغات سنبل
نخواهد گر ز سینه خویش تمثیل
مثالش نیست شلی از که گویم
نشکر خارا کجا گردد دل ریش

स्मितं किञ्चिद्वक्त्रे सरल तरलो दृष्टि
विभवः परिस्पन्दो वाचा माभिनव
विलासोक्ति सरसः ॥ गतीना मारम्भः
किसलयित लीला परि करः स्पृशन्त्या
स्तारुण्यं किमिह न हि रम्यं मृग दृ
शः ॥६॥

جوانی خورده را شیرین بیانی
بود مشتاق بر گیرد دل فرد

ادا و ناز و هم لطف نهانی
نماید خویشتن را در جهان فرد

द्रष्टव्येषु किमुत्तमं मृगदृशां प्रेम प्र
सन्नं मुखं घ्रातव्ये ष्वपि किं तदास्य
पवनः श्राव्येषु किं तद्वचः ॥ कि-

भ्रूचातुर्यात्कुंचिताक्षाः कटाक्षाः स्नि
ग्धा वाचो लज्जितान्ताश्च हासाः ॥ ली
लामन्दं प्रस्थितं च स्थितं च स्त्रीणा
मेतद्भूषणं चायुधं च ॥ ३ ॥

ز ابرو کمان چون نگه کرد تیز	ز تیر ازل گشت عشاق بیز
تبسم شکر لب ز شرم و ادا	برفتار رشد عاشق از دل فدا
نشستن و رفتار چون شیر زن	زنان را سلاح اندر از ناز و فن

कचित्सुभ्रूभंगैः काचिदपि च लज्जा
परिणतैः कचिद्भीतित्रस्तैः कचिद
पि च लीलाविलसितैः ॥ नवोढाना
मेभिर्वदनकमलैर्नेत्रचलितैः स्फु
रन्नीलाब्जानां प्रकरपरिपूर्णा इव
दिशः ॥४॥

عروس نو ز چه شرم انداز	نماید خویشتن را افسون انداز
چنین مه جبین رخشان چون بدر	ز چشمانش به عشوه یا فتنه قدر
خوشا روی و خوشا ناز و ادایش	خوشا باشد عروس نوشابش

वक्त्रं चन्द्रविकासि पङ्कजपरीहा
सक्षमे लोचने वर्णः स्वर्णमपाक
रिष्णुरलिनीजिष्णुः कचानां च

श्री गणेशाय नमः ॥

अथ श्रृंगार शतकं प्रारभ्यते

शंभुस्वयंभुहरयोहरिणेक्षणा नाम् ॥
येना क्रियन्त सततं गृह कर्म दासाः ॥
वाचाम गोचर चरित्र विचित्रताय ॥
तस्मै नमो भगवते कुसुमायुधाय ॥१॥

چو بر ہالش شب شد تابع کام
بہ غیر از زن نہ زیبد خانہ داری
بہ زن گویند صاحب خانہ خویش
بہ شیرین گفتگو ناز و ادا ہا
کنم سجدہ بآن دادار دل ہا

چہ ذکر از گفتن انسان تا کام
کہ دارد لب شنو بر ہا ہم پو راری
پذیرفتن بود فرمان او بیش
ربا ید دل ز دست پارسا ہا
ز گل دارد سخان تسخیر دل ہا

स्मितेन भावेन च लज्जया भिया पराङ्
मुखैरर्द्धकटाक्षवीक्षणैः ॥ वचोभिरी
र्ष्याकलहेन लीलया समस्त भावैः ख
लु बन्धनं स्त्रियः ॥२॥
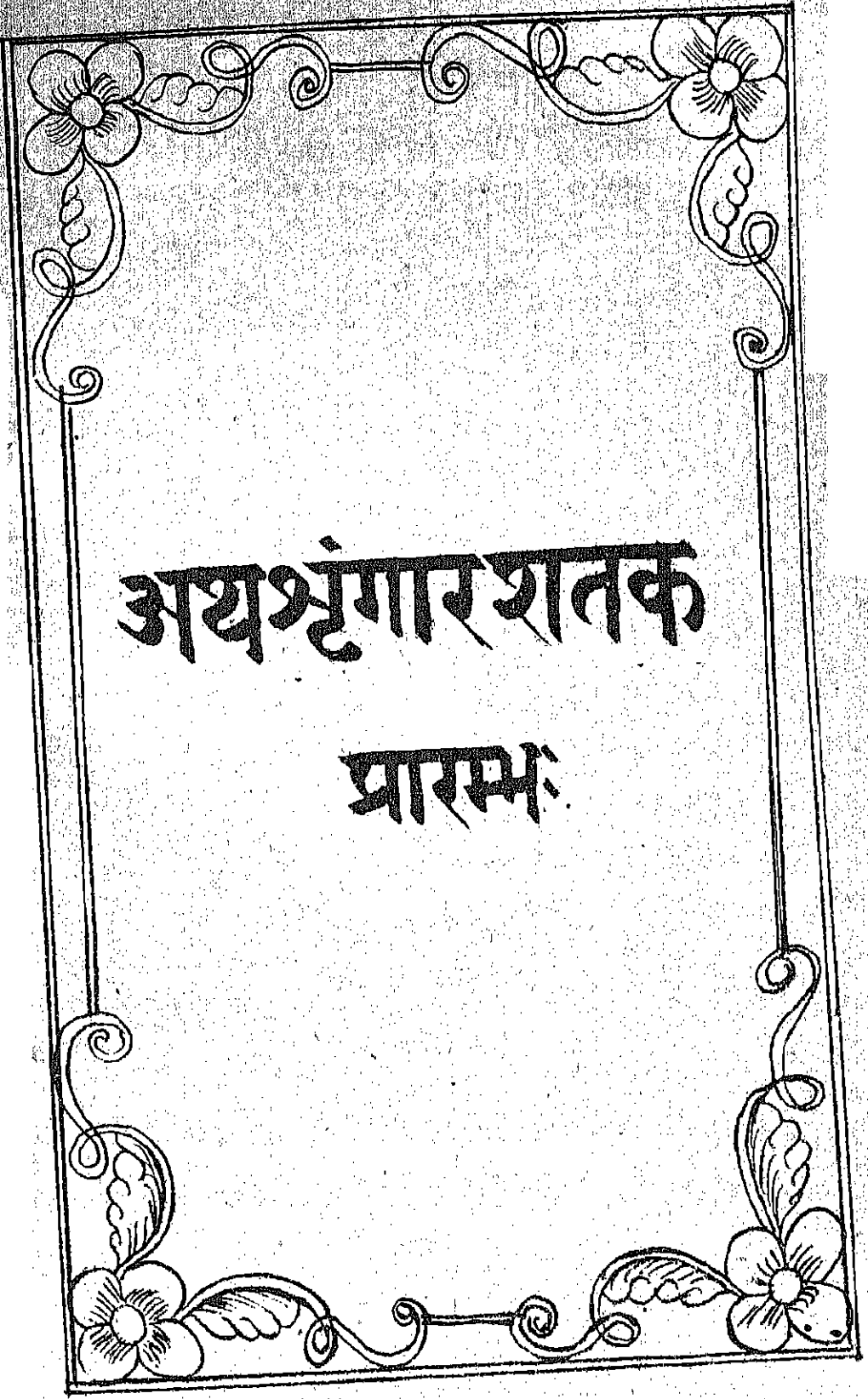
ز ناز و ادا و شکر خندگی
ز گوہر فشانی و شرم و حیا
بہ لب و بغضب دلربا بفریب

چو ترسان غزالہ نظر بندگی
خمیدہ نظر ترش رو دلربا
رباید دل تابداں را ز جیب ہا

अथश्रृंगारशतक

प्रारम्भः

स्यायतेनत्क्षणात् मेरु: स्वल्पाशि
लायते मृगपति: सद्य: कुरंगायते
॥ व्यालो माल्यगुणायते विष रस:
पीयूष वर्षायते यस्यांगेऽखिल लो
क वल्लभतमं शीलं समुन्मीलाति ११०॥

خوشا جسمی که پر از خصلت نیک — به گرد پیش او آتش چو گل نیک
شود دریا چو آب خورده جوی — شود کوه گران چون ریزه کوهی
شود شیر دمان آهوی صحرا — شود مار چو گل تسبیح صحرا
شود زهر هلاهل چون حیات آب — شود انیها همه در پیش اصحاب

लज्जागुणौघजननीं जननीमिव
स्वा मत्यंत शुद्ध हृदया मनुवर्त
मानाम् ॥ तेजस्विन: सुखमसून
पि संत्यजंति सत्यव्रत व्यसनिनो
न पुन: प्रतिज्ञाम् ॥१११॥

صفات شرم را کوهی فزاید — چو مادر مهربان کوهی نزاید
کند وعده وفا سازد همان دم — ز دریا کی سپیر و جان به یکدم
بااین اوصاف کم باشد درین دیر — رساند وعده را از مهر و از قهر

इति नीत शतकम्

स्वायातिकदाचिदेव ॥१०७॥

چو افتد به رنج و الم حق‌شناس
چو آتش گدا را به زیرین نهند

نگردد ز نیکی کسے حق‌شناس
ولے شعلہ سر بہ پروین برند

कान्ताकटाक्षविशिखा न दहन्ति
यस्य चित्तेन निर्दहति कोप कृशा
नुताप:॥ कर्षति भूरिविषयाश्च न
लोभपाशै लोकत्रयंजयति कृत्स्न
मिदं सधीर:॥१०८॥

دلے کو ز تیر نگہ نازنین
نہ سوزد با آتش خشم تیز
شود عابد و زاہد و پارسا

چو بسمل نہ افتد بر روئے زمین
نہ گیرد ہوا و ہوس خشم تیز
بگیرد جہان زہست پارسا

एकेनापि हि शूरेण पादाक्रान्तंम
हीतलम्॥ क्रियते भास्करेणेव परि
स्फुरिततेजसा ॥१०९॥

چو اقبال یاور بہ شاہی بود
چو خورکو بہ یکسرہ بہ بیند جہان

بہ فرمان از ماہ و ماہی بود
ز اقبال گردد بہ شاہی نشان

वन्हिस्तस्य जलायते जलनिधिः कु

عزیز از جان چه باشد اندرین جو
چه دولت در جهان از علم بهتر
به شاهی چیست فوراً حکم تعمیل

زن کو جان نثارد از پے شو
چه آرام ست ترک از سفر بهتر
که سازد هر کس و ناکس به تعجیل

मालतीकुसुमस्येव द्वेगतीह मनस्वि
नः ॥ मूर्ध्निवा सर्वलोकस्य शीर्यते
वनराघवा ॥१०५॥

به گرد و بر دو رو خود سر درین دیر
بدارد خاصیت چون مالتی گل

بیفتد در بیابان پا بسر دیر
به فرقِ مردمان یا پاے در گل

अप्रियवचनदरिद्रैः प्रियवचना
ढ्यैः स्वदारपरतुष्टैः ॥ परपरिवाद
निहत्तैः काचित्काचिन्मंडिता वसुधाः
॥१६॥

شود هر که از تلخ گوے نفور
بگفتار شیرین دل خلق سنج
تو مشکل زرکس گفتن بد کسے

و دارد به شکر فشانی وفور
به صحبت زن خویش و هم نکته سنج
به مشکل بیابی باین خو کسے

कदर्थितस्यापिहि धैर्यवृत्ते र्नश
क्यते धैर्यगुणः प्रमार्ष्टुम् ॥ अधो
मुखस्यापि कृतस्य वह्नेनाधः शि

کند غواصی یا بر کوه برود
تجارت هر قسم یا علم یا فن
نشود ممکن وسے از کلک تقدیر

سپے فتح عدو در جنگ برود
به پیمان بر فلک از پا و بیرون
نه گردد بیش و کم از کلک تقدیر

भीमंवनंभवतितस्यपुरंप्रधानंसर्वो
जनःसुजननासुपयातितस्य कृत्स्ना
चभूर्भवतिसन्निधिरत्नपूर्णा यस्या
स्तिपूर्वसुकृतंविपुलंनरस्य ॥१०३॥

به جسم اول او شد نیک کردار
زمین شور باو گلزار گردد
به چشم عالمان ممتاز گردد

شود جنگل باو شهر گهر بار
به بیند هر کرا جان باز گردد
نشنید هر کجا دربار گردد

कोलाभोगुणसंगमःकिमुसुखंप्राज्ञेतु
रैःसंगतिः काहानिःसमयच्युतिर्नि
पुणताकाधर्म्मतत्वेरतिः॥कःभूरो
विजितेंद्रियःप्रियतमाकानुव्रताकिं
धनंविद्याकिंसुखमप्रवासगमनं
राज्यंकिमाज्ञाफलम्॥१०४॥

صحبت علماست دولت در جهان
چه نقصان است وقت رایگان صرف
دلاور کیست کو دارد به خود ضبط

صحبت جهلاست رنج در جهان
عقل مند نیست دیدن حق به حق حرف
ز نفس بد کند دریا و حق ربط

بدانا سزد وقت افتتاح کار کند گر زنا فہمے خویشتن	که از نیک و بد فهمد انجام کار خلد خار نا مرگ در زیستن

स्थाल्यांवैदूर्यमय्यांपचतिचलशु
नंचंदनैरिंधनौघैः सौवर्णैर्लांगला
ग्रैर्विलिखतिवसुधामर्कमूलस्य हे
तोः॥ छित्वा कर्पूरखंडान्वृतिमिह
कुरुतेकोद्रवाणांसमंतात् प्राप्ये
मांकर्म्मभूमिंनचरतिमनुजोयस्तपो
मन्दभाग्यः॥१०१॥

نه تاب مرصع دهد طبخ سیر ز قلبه طلائی نشان بر زمین حفاظت کند کودرم را ازو نه دریا دحق و نه محنت ریاض	ز صندل کند هیمه ها سوخت نیز کند شجر کافور را از زمین نه داند ز احوال اصلی به او چه از جسم انسان تازه نیاز

मज्जत्वंभसियातुमेरुशिखरंशत्रू
न्जयत्वाहवे वाणिज्यंकृषिसेव
नादिसकलाविद्याःकलाःशिक्षतु।
आकाशंविपुलंप्रयातुखगवत्कृ
त्वाप्रयत्नंपरं नाभाव्यंभवतीह क
र्मवशतोभाव्यस्यनाशःकुतः॥
॥१०२॥

به جنگ و به صحرا و در آب نیز
جهنده جبد کوه گران
محافظ شود نیک کردار او

به دشمن به اخگر به دریای تیز
پئے حفظ از داربازان جهان
نگه کرد دست درا ولین باداو

यासाधूंर्त्तखलान्करोति विदुषोमू
र्खान्हितान्द्वेषिण : प्रत्यक्षंकुरुते
परोक्षममृत हाला हलं तत्क्षणा
त् ॥ तामाराधय सत्क्रियां भगव
तीं भोक्तुं फल वांछितं हे साधो व्य
सनैर्गुणेषु विपुलेष्व स्थां वृथा मा
कृथा ॥९९॥

گرفتن رهی نیک دارد اثر
به جهلا و به صحبت عالمان
اگر زهر باشند با آب حیات
ز اسرار مخفی کند آشکار
اگر طالبی راستی صادقی

بدان را رساند ز نیکی ثمر
که دشمن شود دوستان در جهان
شود دردمی همچو آب حیات
کند خواهش نیک انجام کار
ز صحبت رسد راستی صادقی

गुणवदगुणवद्वा कुर्वता कार्य्यमा
दौ परिणतिरवधार्य्या यत्नत : पंडि
तेन ॥ अतिरभसकृतानां कर्म्मणामा
विपत्ते र्भवति हृदय दाही शल्य तुल्यो
विपाक: ॥१००॥

सूर्य्योभ्रम्यातिनित्यमेवगगनेतस्मैन म:कर्मणे ॥९६॥

زکردار بیجا بہ شد چون کلال — بہ داد او بشنوے صاحب جلال
کہ جلوہ بگیرد ندہ شکل خویش — ترحم کند بر دل خلق ریش
چہا داد تکلیف او بشن را — گدائی بہ شیو کرد او بیشہ را
تعین سپے گردش مہر و ماہ — زما سجدہ کردار را سال و ماہ

नैवाकृति: फलति नैव कुलं न शीलं
विद्यापि नैव नचयत्नकृताच सेवा।
भाग्यानि पूर्वतपसा खलु संचितानि
काले फलंति पुरुषस्य यथैव वृक्षा:
॥९७॥

نہ صورت وہ ہر نہ ذات نجیب — نہ علم و نہ خوش خونہ وصف عجیب
نہ خدمت ز مرشد ریاضت نہ جسم — وہ ہر کہ در سالقین و مشتاق چشم
و زختیکہ برمیدہ ہر در بہار — ز قسمت رسد مرد را ہم بکار

वने रणे शत्रुजलाग्निमध्ये महार्ण
वे पर्वतमस्तके वा ॥ सुप्तं प्रमत्तं वि
षमास्थितं वा रक्षति पुण्यानि पुरा
कृतानि ॥९८॥

نہالے را ز نیارد ببرگ گل
نه بیند اگر بوم در روز چشم
چو سیر آب نشد در جهان بر سگال
گناهی چه باشد از اینها به میغ
چو کلک قضا کرد ترقیم حرف

که بے برگ شد اصلیت او دلیل
گناهی چه از خور چه از نور چشم
نه آید بسوی سپیچه قطرهٔ زلال
که بارش بقضا نداد او بیدریغ
نگردد کم و بیش از نکته حرف

अथ कर्मप्रशंसा ॥

नमस्यामो देवान्ननु हत विधेस्तेपि व
शगाः विधिर्वंद्यः सोपि प्रतिनियतक
र्म्मैकफलदः ॥ फलंकर्म्मायत्तं किम
मरगणैः किंच विधिना नमस्तत्कर्म्म
भ्यो विधिरपि न येभ्यः प्रभवति ॥ ९४ ॥

به پیغمبران سجده باشد زما
بخود طاقت بخشش و حکم نیست
اگر سجده واجب به برهما شود
وبد او ثمر حسب کردار ما
از آن رو بما واجب آمد یقین

چو اینها شوند تابع رهنما
عبث سجدهٔ ما یا دستان هست
ولی او نه خود رهنما باشود
تلافی شود حسب کردار ما
تکبر دار سجود دهیم سر بر زمین

ब्रह्मा येन कुलालवन्नियमितो ब्रह्मां
डभांडोदरे विष्णुर्येन दशावतारग
हने क्षिप्तो महासंकटे ॥ रुद्रो येनक
पालपाणिपुटके भिक्षाटनं कारितः

शशिदिवाकरयोर्ग्रहपीडनं गजभुजंगमयोरपिबंधनम् ॥ मतिमतांच विलोक्यदरिद्रतां विधिरहो बलवानितिमेमति:॥९२॥

همی بینم مار و فیل را در قید انسانی
کسوف و خسوف مهر و مه را خوف ترسانی

به دانا عالم و فاضل ز گرسنگی پریشانی
همی خواهد کند هر اینچه ربا کار ربانی

सृजतितावदशेषगुणाकरं पुरुषरत्नमलंकरणंभुवः ॥ तदपितत्क्षणभंगिकरोतिचेदहहकष्टमपंडितताविधे:॥९३॥

چو جان آفرین جان پیدا کند
به انسان هنر عقل پیدا کند

فسو و نقش در بساط زمین
ولی میرسد از قضا بر زمین

تعجب چرا این فضیلت بداد
که در دم بباد فنا رد بداد

पत्रंनैवयदाकरीरविटपेदोषोवसंतस्यकिं नोलूकोऽप्यवलोकतेयदिदिवासूर्य्यस्यकिंदूषणं धारानैवपततिचातकमुखेमेघस्यकिंदूषणं यत्पूर्वंविधिनाललाटलिखितंतन्मार्जितुंक:क्षम:॥९४॥

سپاه و فوج او از دیو خاصان | نه گذرد در حصار او کس آسان
بهشتی مسکن او فیل براق | بدولت طاقت یکتایی اوراق
چو راجه بل عداوت ساخت با او | به بین در لمحه قابو ساخت با او
به این مضبوطی و سامان لعنت | به این خوبی و اسباب لعنت
ازین رو قدرت حق شد نمودار | که سازد انچه میخواهد به یکبار
بخدمت رب باید شاد بودن | کنز و هر وقت ممکن شاد بودن

कर्मायत्तं फलं पुंसां बुद्धि· कर्मानुसा
रिणी ॥ तथापि सुधिया भाव्यं सुवि
चार्य्यैव कुर्वता ॥९०॥

اگرچه رسد حسب اعمال اجر | و هم عقل باید از و نیک مجر
و لے دل پئے نیک اعمال به | که از کار نیک است اعمال به

खल्वाटो दिवसेश्वरस्य किरणै:
संतापितो मस्तके ॥ वाञ्छन्देशमना
तपं विधिवसात्तालस्य मूलं गत:
तत्राप्यस्य महाफलेन पतता भ
ग्नं सशब्दं शिर: । प्रायो गच्छति यत्र
भाग्यरहितस्तत्रैव यान्त्यापद: ॥९१

چو گل از تاب قمری میرود دیبایه شجری | ز بد قسمت گلہ کل فتد ثمری سلطان شجری
ببین گل زپئے تسکین دل فتد بزیر او | و لے بد قسمتی کل را سر کل میدهد اجری

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो म
हान् रिपुः। नास्त्युद्यमसमो बन्धुर्यं
कृत्वा नावसीदति ॥८७॥

همین کاهل وجودی دشمنت در تن نهان تو
میان بستن پی ازقت برادر به نهان تو

छिन्नोपि रोहति तरुः क्षीणोप्यु
पुनः पचीयते चन्द्रः॥ इति विमृशन्तः स
न्तः सन्तप्यन्ते न विप्लुता लोके ॥८८॥

درو شد شجر باز آرد ثمر
و ماهی کم و بیش گردد مدام
ولی رحمتی حق شناسش جهان
به مفلس شبینه رسد کیسه زر
ازین نقل گیرند ذی احترام
ندانند ز تکلیف راحت بجان

अथ दैवप्रशंसा॥

नेता यस्य बृहस्पतिः प्रहरणं वज्रं
सुराः सैनिकाः स्वर्गो दुर्गमनुग्रहः कि
ल हरेरैरावतो वारणः इत्यैश्वर्यब
लान्वितोपि बलिभिर्भग्नः परैः सङ्गरे
तद्व्यक्तं वरमेव दैवशरणं धिग्धिग्वृ
था पौरुषम् ॥८९॥

به اندر آنکه باشد راز دانی
بهیبت مرشد دگر زر گرانی

کسی کو صاحب انصاف باشد
و بد او را اگر قارون خزینه
تحفه با بر سر رسد یا زنده ماند

بر و کس نیک یا بد تمام باشد
و یا محتاج از نان شبینه
و لی پا از حد انصاف نه نه راند

भग्नाशस्य करंड पीडित तनो र्म्लानें
द्रियस्य क्षुधा कृत्वाखु र्विवरं
स्वयं निपतितो नक्तं मुखे भोगिनः
तृप्तस्तत्पिशितेन सत्वरमसौ तेनैव
यातः यथा लोकाः पश्यत दैव
मेवाहि न्तृणां वृद्धौ क्षये कारणम्॥
॥९५॥

چو مار گرسنه در قید باشد
بگردد نا توان کم زور از حد
تر است شد موش بند او که نادان
همان ره باشد کش آزاد بودن

و بند او بجانه بید باشد
و لی رازق و بد روزی به بند و بد
همون ز قیمت بهر گرسنه آن
بدست کبر یا کم زیاد بودن

पतितोपि कराघातैरुत्पतत्येव
कंदुकः॥ प्रायेण साधुवृत्तानाम
स्थायिन्यो विपत्तयः॥९६॥

ز دستیکه افگند گو بر زمین
کسانیکه نیک اند نیکی شمار

به جنبد سپی رفتن بر ترین
نه رنجند از آفت روزگار

گہے برگ شجر گاہے برنج و طعامہا خورشتہ
گہے پوشم ز جبّہ یا لباس زر چو شاہانہ
گذارم رنج و راحت را بدل یکسان نہایتہ

ऐश्वर्य्यस्यविभूषणंसुजनताशौ
र्यस्यवाक्संयमोज्ञानस्योपशमः
श्रुतस्यविनयोवित्तस्यपात्रेव्ययः
श्क्रोधस्तपसः क्षमाप्रभवितुर्ध
र्मस्यनिर्व्याजतासर्वेषामपिसर्व
कारणमिदंशीलंपरंभूषणम्
॥८३॥

تواضع بہ شاہان نزیبد مدام
بہ علماست جوہر ز طبع سلیم
بہ خیرات از مرد باید شناخت
بحاکم سزد خوبی انصاف راست
بہ پابندِ مذہب استوار

بمردان نہ گفتن ز خود در کلام
بہ نیکان جوہر بہ طبع حلیم
فقیران را غصہ بباید گذاشت
بہ پاکان سزد صاف نیت برست
اگر عاقلی انکساری مدار

निंदंतुनीतिनिपुणायदिवास्तुवंतु
लक्ष्मीसमाविशतुगच्छतुवायथे
ष्टम् ॥ अद्यैववामरणमस्तुयुगांत
रेवा न्याय्यात्पथः प्रविचलंति प
दंनधीराः ॥८४॥

زنب وکچول و مفیل و ہمہ بہ خاصان حق خوابود این مرام	گرا بور سد صندل این شد ہمہ کہ سازد چو خود در دسمے لا کلام

॥अथ धैर्य प्रशंसा

रत्नै महार्हैस्तुतुषुर्न देवा नभेजिरेभी
मविषेणभीतिं ॥ सुधां विनान प्रययु
र्विरामं न निश्चितार्थाद्विरमन्ति धीरा:
॥८१॥

نہ کردہ ترک سودن بہر حاصل جواہر و زر
نہ کردہ ترک از ہیبت ہلاہل بود کو جان بر
میان بستہ چو بہر یافتن آب حیات از وے
گرفت آب حیاتے را میان بستہ فزدن برتر

क्वचिद्भूमौ शय्या क्वचिदपि च प
र्यंक शयनं क्वचिच्छाकाहार:
क्वचिदपि च शाल्योदनरुचि: ॥
क्वचित्कंथाधारी क्वचिदपि च दि
व्यांबरधरो मनस्वी कार्यार्थी न
गणयति दु:खं न च सुखम् ॥८२॥

گہے عریان نہ جسیم بر زمین یا بر پلنگ بستر

نکو راست خدمت به خاصان کن
بخدمت به حلمان مدارا عدو
ترحم به غربا به جود و سخا

بخدمت بزرگان دل شاد کن
نما خویشتن را اطاعت به خو
بدین خو بود نام از تو بقا

मनसि वचसि काये पुण्यपीयूष पू
र्णास्त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्री
णयंतः परगुणपरमाणून्पर्वतीकृ
त्य नित्यं निजहृदि विकसंतः संति सं
तः कियंतः ॥७८॥

زبان و دل و جسم آن بزرگ نخبه
به بهبودئ خلق کن شاد دل
به سیرت همین حق شناسان کم اند

کند خوی خود را سراپای عنبر
بوصف کسان باش آزاد دل
چو هستند بسیار کم از کم اند

किं तेन हेमगिरिणा रजताद्रिणा वा
यत्राश्रिताश्च तरवस्तरवस्त एव ॥
मन्यामहे मलयमेव यदाश्रयेण ॥
कंकोलनिंबकुटजाऽपि चंदना
स्युः ॥८१॥

سمیر است یک کوه زر بر زمین
نباشد نزدیش شجر هم ز زر
به ملیاگر این خوی ذاتی بود

و کیلاش از نقره شد بر زمین
نروید شجر سیم از دست شر
که از بوی او زار صندل شود

چو و اندیشه شد خیالم از و آب بپا شستند بر سر شیر آب آندم	برون آرد سر خود را ز بی تاب نشیند همنشین بیند چو ماهم

इन: स्वापिति केशव: कुलमित स्तदी
यद्विषामितस्त्व शरणार्थिन: शिखरि
णांगणा: शेरते ।। इतोपि वडवान
ल: सहसमस्त सम्वर्तकै रहो वित
तमूर्जितं भर सहंच सिंधो र्वपु: ७७॥

همی خسپد به یکسو بشن بر شیش به یکسو از گروهی کوه دارد بجوشاند آب بحر یکدم بشیر فا دل شود چون بحر در دیر	شیاطین سوی دیگر جنس بدکیش قیامت آتشی یکسو به دارد ولی در دل نیارد رنج یکدم نه رنجد نی رمد از جهر یا قهر

तृष्णां छिंधि भज क्षमां जहि मदं पा
पे रतिमाकृथा: सत्यं ब्रूह्यनुयाहि
साधुपदवीं सेवस्व विद्वज्जनम् ।।
मान्यान्मानय विद्विषोऽप्यनुनय
प्रख्यापय स्वान्गुणान् कीर्तिं पा
लय दु:खिते कुरु दयामेतत्सतां ल
क्षणम् ।।७८।।

بکن ترک از حرص و نیکی بگیر	بکن ترک از نفس بدکار نیز

کہ خواہند بہبود ستے برزمین	خاصان حق خود بود این چنین

एके सत्पुरुषाः परार्थघटकाः स्वार्थंपरित्यज्यये सामान्यास्तु परार्थमुद्यमभृतः स्वार्थाविरोधेनये ॥ तेऽमी मानुषराक्षसाः परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति ये ये निघ्नन्ति निरर्थकं परहितं ते के न जानीमहे ॥७५॥

خدا دوست باشند و صاحب ہنر شود در میانسے در ایام خلق بادشتم گویند محتاج درنش ندانم چہ گویم باو در جہان	کنند ہیچ خود در فلاحے دگر کنند کار خود ہم سرانجام خلق کنند ہیچ دیگرپئے کار خویش رسانند ضرر بے سبب بر کسان

क्षीरेणात्मगतोदकाय हि गुणा दत्ताः पुरा तेऽखिलाः क्षीरे तापमवेक्ष्य तेन पयसा ह्यात्मा कृशानौ हुतः ॥ गन्तुं पावकमुन्मनस्तदभवद्दृष्ट्वा तु मित्रापदं युक्तं तेन जलेन शाम्यति सतां मैत्री पुनस्त्वीदृशी ॥७६॥

جدائی او باو کے تاب گردد بسوزد آب حافظ از پئے شیر	چو امیزش بشیر و آب گردد پئے گرمی چو بر آتش نہد شیر

ز حلقه نیز زیبد بنا گوش مرد — که زیبد چو علم ز حق گوش کرد
زیاره نه زیبد بسر مرد را — که زیبد ز جود و سخا مرد را
ز صندل نیز زیبد صفا دے به بر — که زیبد ریاضت حقیقی ببر

पापान्निवारयतियोजयतेहिताय
गुह्यंचगूहतिगुणान्प्रकटीकरोति
आपद्गतंचनजहातिददातिका
लेसन्मित्रलक्षणमिदंप्रवदन्तिस
न्तः॥७३॥

ز کارے بدی منع سازد بدوست — نماید رہے راستی را بدوست
گناهان بپوشد ثنا یہ ہنر — با خفاے کوشش کند بیشتر
مددگار در وقت بد در زوال — کند صرف زر تا بجید کمال
نشانیست از دوست صاحب کمال — مددگار باشد بحال و زوال

पद्माकरंदिनकरोविकचीकरोति
चन्द्रोविकाशयतिकैरवचक्रवा
लं।नाभ्यर्थितोजलधरोपिजलं
ददातिसन्तःस्वयंपरहितेसुकृता
भियोगाः॥७४॥

بشگفد چو خلفر او از آفتاب — همین طور نیلوفر از ماهتاب
همه نیز مردگان ما رسانند میغ — که بارد سهر جا خوشا بید ر میغ

स्वरसुखानुद्ज्ञेनान्दूषयन्तः सन्तः
साश्चर्य्यचर्य्याजगति बहुमताः क
स्यनाभ्यर्च्यनीयाः ७०

بلندی را از انکساری بگیر
بپهلوی دیگران خو سکن
ز نرمی و گرمی جهان شاد باش
بگویند خلقت ترا با تمیز

به تعریف نیکان خود خود بگیر
و ز خویشتن را فراموش مکن
بدان را مدارا کن از آه باش
به سجده رسد مرد و زن ای عزیز

भवन्तिनम्रास्तरवः फलोद्गमैः॥नै
वांबुभिर्भूरिविलंविनोघनाः अनु
द्धताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिःस्वभावए
वैषपरोपकारिणाम्॥७१॥

شجر با ثمر سر نهد بر زمین
بنجاصان حق خو بود این چنین
ز جان و زر و زیور و ملک و مال
نه این شد ز تعلیم حاصل باو

چو پر آب ابری که بوسد زمین
بکار دگر خود بسوید جبین
کند صرف جان را ز حد کمال
که ذاتی شود این صفاتی باو

श्रोत्रंश्रुतेनैवनकुंडलेनदानेनपा
णिर्नतुकंकणेन॥विभातिकायः
करुणापराणांपरोपकारैर्नतुचंद
नेन॥७२॥

به بین آب را بر سر حالت رسید	نه فهمد گر از دوست باید کشید

य:प्रीणयेत्सुचरितै:पितरंसपुत्रोयद्भ
र्तुरेवहितमिच्छतितत्कलत्रम्॥तन्मि
त्रमापदिसुखेचसमक्रियंयदेतत्त्रयं
जगतिपुण्यकृतोलभंते॥
॥९८॥

زن نیک فرزند طاعت پذیر	شود دوست در وقت بد دستگیر
چنین سر ز قسمت میسّر شود	گر طالع در دهر بر تر شود

एकोदेव:केशवोवाशिवोवाएकं
मित्रंभूपतिर्वायतिर्वा॥एकोवास:
पत्तनेवावनेवाएकानारीसुन्दरी
वादरीवा॥९९॥

ز شیو کیشو یکے را سجده کن تو	گدا یا شاه یک را دوست کن تو
به خانه یا به جنگل جاے کن تو	ز زن یا غار کوهے زوجه کن تو

नम्रत्वेनोन्नमंत:परगुणकथनै:
स्वान्गुणान्ख्यापयंत:स्वार्थान्
संपादयंतोविततप्रियतरारंभयत्ना:
परार्थेक्षांत्येवाक्षेपरूक्षाक्षरमु-

तांमंडनमिदम् ॥६४॥

خوشا دستی مخیر قابل وصف	ز سر در سجدہ خاصان قابل صف
دہان زیبد گفتن راست بازی	بیا زور وز زیبد فتح یابی
سزد دل را باستقبال بودن	زہ گوش از علم راز حق شنودن
نزیبد از زر و زیور بہ خاصان	کہ زیبد خوی خوش در حق شناسان

संपत्सु महतां चित्तं भवत्युत्पलकोम
लम् ॥ आपत्सु च महाशैल शिलासं
घात कर्कशम् ॥६६॥

لب نرم طبیعت بوقت فلاح	بوقت زبونی بجو کوہ کلاح

संतप्तायसि संस्थितस्य पयसो नामा
पि न ज्ञायते मुक्ताकारतया तदेव न
लिनीपत्रस्थितं राजते ॥ स्वात्यां सा-
गरशुक्तिमध्यपतितं तन्मौक्तिकं जाय
तेप्रायेणाधममध्यमोत्तमगुणाः संसर्गतोदे हिनाम्॥

با آہن گرم آب پاشند اگر ہا	نماند از و قطرہ ہم در نظر
ہمان قطرہ بر برگ نیلوفری	نماید چو لولوی صافی گہری
ہمان در صدف گر بگیرد قرار	شود بے بہا لولوی شاہوار

चाभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ प्रकृतिसिद्ध
मिदं हि महात्मनाम् ॥६३॥

بہ قایم مزاجی بوقت زوال	نہ خود بینی خویش وقت کمال
شکیب بمحفل مهتور بہ جنگ	بہ نیکان محبت ہنرہا بہ جنگ
چنین خو بہ نیکان ذاتی بود	نہ در رنج و راحت صفائی بود

प्रदानं प्रच्छन्नं गृहमुपगते सम्भ्रमवि
धिः प्रियं कृत्वा मौनं सदसि कथनं चा
प्युपकृतेः अनुत्सेको लक्ष्म्यां निरभि
भवसाराः परकथाः सतां केनोद्दिष्टं वि
षममसिधाराव्रतमिदं ॥६४॥

بہ خیرات مخفی تواضع غریب	نہ گفتن ز نیکی خود از عجیب
ز نیکی دیگر کند آشکار	نہ مغرور از خود کند آشکار
بہ مجلس نشیند گر حقارت دگر	نہ چینند نیکان از و بد شمر
بر فتن بہ شمشیر بس مشکل است	بہ نیکان چنین خوئی لبس مشکل است

करे श्लाघ्यस्त्यागः शिरसि गुरुपाद
प्रणयिता मुखे सत्या वाणी विजयिभु
जयोर्वीर्यमतुलम् ॥ हृदि स्वस्था-
वृत्तिः श्रुतमधिगतैकव्रत फ
लम् ॥ विनाप्यैश्वर्येण प्रकृतिमह

मृगमीनसज्जनानां तृणजलसंतोष
विहितवृत्तीनाम् ॥ लुब्धकधीव
रपिशुना निष्कारणवैरिणो जग
ति ॥६१॥

آہو و زاہد و ماہی صفت ذاتی و الیشان است
ولے بیوجہہ دادن رنج خود ای زحق داد

بگاہ وصبر آب اندر جہان رزق ایشان است
بہ جلاد و بد و صیاد کو ناریج بہ ایشان است

वाञ्छासज्जनसंगमे परगुणे प्रीतिर्गु
रौ नम्रता विद्यायां व्यसनं स्वयोषिति
रतिर्लोकापवादाद्भयम् ॥ भक्तिः शू
लिनि शक्तिरात्मदमने संसर्गमुक्तिः
खले येष्वेते वसन्ति निर्मलगुणास्ते
भ्यो नरेभ्यो नमः ॥६२॥

بدل خواہش صحبت لائقان
زدل سجدہ مرشد تصرف بعلم
بتر سد زبد گفتن روزگار
گرفتن نفس را کند خو بدبیر
باین خو شود ہر کہ در روزگار

بدل حظ از دیدن فائقان
بہ صحبت زن خود با داب و حلم
عبادت خدا را بیارد بکار
ز صحبت بدان دور باید گریز
کنم سجدہ او را زدل بی شمار

विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा सद
सि वाक्पटुता युधि विक्रमः यशसि

رسد نزدیک بے ادبی چو ماند دور بے سوده
بود ہر وقت حاضر حکم را فوراً بجا آرد
بجا آرد نجب آرد بجا آرد بجا آرد

उद्भासिताखिलखलस्यविशृंखल
स्यप्राग्जातविस्तृतनिजाधमकर्मवृ
त्ते: दैवादवाप्तविभवस्यगुणाद्विषो
स्यनीचस्यगोचरगतै: सुखमास्य
तेकै:॥५९॥

صحبت دون ست بیشک رنج زا
مے نماید اصل ہاے خویش را
سیکند خیرات ہم جو دو سخا

گرچہ باشد صاحب گنج و ذکا
مثل اشتر بے مہار و روزه خا
لیکہ دشمن ہست بہر خوش لقا

आरंभगुर्वीक्षयिणीक्रमेण लघ्वी
पुरा वृद्धिमती च पश्चात्॥ दिनस्य
पूर्वार्द्धपरार्द्धभिन्ना छायेव मैत्रीख
लसज्जनानाम्॥६०॥

دونان دوستی سازد انجام قلق
چو سایہ روز اول کم شود او
دونان دوستی اولین میشود
بہ نیکان بہ اول چو کمتر بود

چنان بہ بہ نیکان سہ انجام خلق
چو سایہ روز آخر مے فزداو
بہ تفضیح آخر قطع مے شود
فزون از فزون روز افزون بود

خلد خارم بدل زین هفت تشویش که کامل ماه بی انوار گردد برود خشک نیلوفر نماند تونگر در فقرا اسم کردن مال بدان در صحبت شاهان نشینند	بگو این نشانیم از که تفتیش زن خویش روز پیری زار گردد به حسن یوسفی این فخر نماند به زرگ از مفلسی متغیر احوال ز خون خویش نیکان لقمه چینند

नकश्चि चण्डकोपानामात्मीयोना
मभूभुजाम्॥होतारमपिजुह्वानं
स्पृष्टो दहतिपावकः॥५७॥

تعجب ز شاهان بود انجنان کنند گر صد سال سجده ز دور	نه دارند الفت به کس در جهان چو آتش به گیرد بسوزد ضرور

मौनान्मूकः प्रवचनपटुर्वातुलो
जल्पकोवा धृष्टः पार्श्वे वसतिचसदा
दूरतश्चाप्रगल्भःक्षान्त्याभीरुर्य
दिनसहिते प्रायशो नाभजातः
सेवाधर्मः परमगहनोयोगिनाम
प्यगम्यः॥५८॥

حقی خدمتگذاری را بدان ایجان زحد مشکل
نه ممکن از فقر و نے مرید و از غلام اشکل
چو خاموشی گزیند بکم گوید بهست بیهوده

به اهل فقه مسنگویند مکار
به صاحب حکم مسنگویند مغرور
به گویا مرد مسنگویند جاهل

شکیب را همی نامند فجار
به اهل صبر مسگویند کم زور
همه را از بدان رنجیدست صایل

लोभश्चेदगुणेन किंपिशुनता यद्यस्ति
किं पातकैः सत्यंचेत्तपसा च किं शुचि
मनो यद्यस्ति तीर्थेन किं सौजन्यं यदि
किं गुणैः स्वमहिमा यद्यस्ति किं मंडनैः
सद्विद्या यदि किं जनैरपयशो यद्यस्ति
किं मृत्युना ॥५५॥

به طامع حاجتی عیب دگر نیست
چه حاجت راستان را با فقیری
به نیکان نیکوئی کافی همان ست
به عالم حاجت دیگر کسان نیست

ز نمامی گناهی بیشتر نیست
دل شان طاهرست اندر امیری
بزرگان را بزرگی گنج شان ست
خباثت لائق مرد زبان نیست

शशी दिवस धूसरो गलित यौव
ना कामिनी सरो विगत वारिजं मु
ख मनक्षरं स्वाकृतेः प्रभुर्धन प
रायणः सततं दुर्गतः सज्जनो नृपा
गण गतः खलो मनसि सप्त शल्या
नि मे ॥
॥५६॥

वंधुजनेष्वसहिस्नुता प्रकृतिसिद्ध
मिदं हि दुरात्मनाम् ॥५२॥

بدان راہست اینک قدرتی خوی
زر و زن و دیگران مرغوب باشد

آنظلم بے سبب با دشمنی خوی
ز بہبودی دیگران شاق باشد

दुर्ज्जनः परिहर्त्तव्यो विद्यया भूषि
तोपि सन् ॥ मणिनालंकृतः सर्प्पः
किमसौन भयंकरः ॥५३॥

چو بد با علم شد یا صاحب زر
چہ مار ار یکہ باشد صاحب زین

خطر باشد ز قرب بس با تونگر
بترسد صحبتش را صاحب فن

जाड्यं ह्रीमति गण्यते व्रतरुचौ दंभः
शुचौ कैतवं शूरे निर्घृणता मुनौ वि
मानिता दैन्यं प्रियालापिनि तेजस्वि
न्यवलिप्तता मुखरता वक्तर्यशक्तिः
स्थिरे तत्को नाम गुणो भवेत्स गुणि
नां यो दुर्ज्जनैर्नांकितः ॥५४॥

بدان راجہ بدی کاری دگر نیست
بصاحب شرم گویند از عبادات
بہادر شخص را گویند قاتل

کدام است آن کہ زیشان بی خطر نیست
بروزہ دار از فاسد خیالات
بصاحب نفس میگویند باطل

त्वमेव चातका धारो सीति केषां नगो
चर : ॥ किम भोद वरा स्माकं काप
ण्यो क्ति: प्रती क्ष्यते ॥ ५० ॥

تو ئی جان بخش موسیچه بهرآن به عاجز باید ت قطره بدادن	چرا در انتظاری عاجزان که میبارد بهر جا ابر نیسان

रे रे चातक साव धान मन सा मित्र क्ष
णं श्रूयतां मंभो दा वहवो वसंति ग
गने सर्वे पि नैता दृशा : ॥ केचिद् वृष्टि
भिरार्द्रयंति वसु धां गर्जंति केचि
द्वृथा यंयं पश्यसि तस्य तस्य पुर
तो माब्रूहि दीनं वच : ॥ ५१ ॥

بگفت موسیچه این پند مرا گوش نباشد ابر نیسان در همه جا بسا ابرسی که بارد بر زمین آب یکی بارد یکی خالی کند رعد مکن اظهار عجز خود بهر ابر	نباشد در همه ابر آسمان جوش که پر هم باشد و خالی بجا ها بسا ابرے که نآرد بر زمین آب یکی را می برد خالی ز جا باد مکن بر نغمه سنجیهاے خود صبر

॥ अथ दुर्जन निंदा ॥

अकरुणत्व मकारण विग्रह : पर
धने पर योषिति च स्पृहा ॥ सुजन

گهی در زر رو گهی به تدبیر زر — گهی صرف گاهی به تسخیر زر

विद्या कीर्तिः पालनं ब्राह्मणानां ॥
दानं भोगो मित्र संरक्षणं च ॥
येषामेते षड्गुणा न प्रवृत्ताः ॥
कोर्थस्तेषां पार्थिवोपाश्रयेण ४८॥

به شاهان نشستن نه شاید باو — نه دارد ازین شش که درخوی او
بفرمان حاضر مخیر بال — محافظ بخویشان هم نیک حال
به حفظ برهمن کند جان صرف — به شهوت چنان کز وی گیرد نه حرف

यद्धात्रा निजभालपट्टलिखितं स्तो
कं महद्वा धनं तत्प्राप्नोति मरुस्थ
लेपि नितरां मेरौ ततो नाधिकम् ॥
तद्धीरो भव वित्तवत्सु कृपणां वृत्तिं
वृथा मा कृथाः कूपे पश्य पयोनि
धावपि घटो गृह्णाति तुल्यं जल
म् ॥४९॥

چو خالق به کلک قضا نقش بست — نه گردد کم و بیش از هر چه هست
اگر او به هر ملک پیدا شود — وگر کوه زر بر وی پیدا شود
پس ای دل چرا مستقل نیستی — که از بهر زر پیش دونان ایستی
ز دریا سبو چه که آب آورد — همان قدر را از چاه آب آورد

स्यावस्तूनि प्रथयति च सङ्कोचयति
च ॥४५॥

چو مفلس که سرمایه یابد بسی	بداند همه خلق را چون خسی
نه یکسان شود شکل در روزگار	که دنیا است فانی و ناپایدار

राजन्दुधुक्षसि यदि क्षितिधेनुमेनां
तेनाद्य वत्समिव लोकममुं पुषाण ॥
तस्मिंश्च सम्यगनिशं परिपोष्यमाणे
नानाफलैः फलति कल्पलतेव भूमिः
॥४६॥

نصیحت بکن گوشش ای نامدار	زمین را چو خواهی گرفتن بکار
بکن پرورشش بر جهان همچو پور	زمین بر دهد حسب خواهش ضرور

सत्यानृता च परुषा प्रियवादिनी
च हिंस्रा दयालुरपि चार्थपरा व
दान्या ॥ नित्यव्यया प्रचुरनित्य
धनागमा च वेश्याङ्गनेव नृपनी
तिरनेकरूपा ॥४७॥

به شاهان سزد خاصیت همچو حور	گهی نرم گاهی شود ترش و شور
گهی لغو گاهی ره راستی	گهی قتل و گاهی رحم آشتی

दानं भोगो नाशस्तिस्रो गतयो भवन्ति
वित्तस्य ॥ यो न ददाति न भुंक्ते तस्य तृ
तीया गतिर्भवति ॥४३॥

زر زحالت سه باشد اندرین دار
نه در عشقی نه در خیرات از مال

یکی عشق زخوبان دیگر ایثار
فتد در عرصه نابود شان مال

मणिः शाणोल्लीढः समरविजयी हे
तिनिहतो मदक्षीणो नागः शरदि स
रितः श्यानपुलिनाः ॥ कलाशेष
श्चन्द्रः सुरतमृदिता बालललनाः
तनिम्ना शोभन्ते गलितविभवाश्चा
र्थिषु जनाः ॥४४॥

جواہر که بسان خورده باشد اگر
فتحیاب جنگی که افتد لغار
نه زیبد لب رہا سیه رود چو
چو بے زر نه زیبد به زر دارها

نه زیبد چو فیلے که آید بسر
نه زیبد چو ماہے دو نیم در شمار
چو کم سن زن کو شود مرد خو
گدائی نه زیبد بزر دارها

परिक्षीणः कश्चित्स्पृहयति यवानां
प्रसृतये स पश्चात्संपूर्णः कलयति
धरित्रीं तृणसमाम् ॥ अतश्चानैका
न्त्याद्गुरुलघुतयार्थेषु धनिनाम् अव

ز زر خوش گلو و ز زر خوش لقا
چو بی زر شود شخص در روزگار

ز زر در جهان باشد از وی بقا
نه پرسد بجز چهره او را بکار

यस्यास्तिवित्तंसनरःकुलीनःसप
ण्डितःसश्रुतवान्गुणज्ञः॥सए
ववक्तासचदर्शनीयःसर्वेगुणाः
काञ्चनमाश्रयन्ति॥४१॥

ز زر حسن و صورت بزرگی ز زر
ز زر صرف نخوست و گویا ز زر

ز زر عقل و دانش هنر هم ز زر
که باشد همه فعل در شکل زر

दौर्मन्त्र्यान्नृपतिर्विनश्यतियतिःसं
गात्सुतोलालनात् विप्रोऽनध्यय
नात्कुलंकुतनयाच्छीलंखलोपास
नात्॥ह्रीर्मद्यादनवेक्षणादपिकृषिः
स्नेहःप्रवासाश्रयान्मैत्रीचाप्रणया
त्समृद्धिरनयात्त्यागात्प्रमादाद्धनम् ४२

نریسی که بد عقل سازد زوال
مروت کند پور را بی ادب
به بی علم برهمن ضایع شود
ترد د ز غفلت حیا از خمار
تکبر و بی احتیاطی مدام

به شاهی فقیری ز صحبت بمال
کند قطع نسل چو باشد کذب
ز صحبت بد ان نسیم ضایع شود
ز غربت مروت مروت ز عار
زنار کس کند دولت او حرام

वयस्तेजसो हेतुः ॥३८॥

چو گردد شیر با سیلی که بر فیل نباشد علم و جسم تیزی او	بلا خطره کند حمله به تعجیل که حق ذاتی صفت داده بتن او

जातिर्यातु रसातलं गुणगणस्तस्या
प्यधो गच्छतां शीलं शैलतटात्पत
त्वभिजनः सन्दह्यतां वह्निना ॥ शौर्ये
वैरिणि वज्रमाशु निपतत्वर्थोऽस्तु नः
केवलं येनैकेन विना गुणास्तृणलव
प्रायाः समस्ता इमे ३९

رود ذات در پرده زیر زمین ز خویشان اقارب بآتش فتند وسلے ز زبا ید بستم ضرور	رود علم و هم خوی خوش در زمین تهور نشود زیر گل در کند که بی زر نشود تهمتن اهیچو مور

तानीन्द्रियाणि सकलानि तदेव क
र्म्म सा बुद्धिरप्रतिहता वचनं त दे
व ॥ अर्थोष्मणा विरहितः पुरुषः
स एव त्वन्यः क्षणेन भवतीति वि
चित्रमेतत् ॥४०॥

زر ز دست و پا باشد و هم سبیل	ز رعقل و همت نه زر خجیل

زمین را شیمش بر سر خویش دارد زبیر همی دهد سجر او نه خنزیر	وفا باخته به نفیست خود گذارد ندانند برادر اصلی را کسی پیر

चुरं पक्षच्छेदः समदमघवन्मुक्तकु
लिशप्रहारैरुद्गच्छद्बहलदहनोद्गा
रिगुरुभिः ॥ तुषाराद्रेः सूनोरहह पि
तरि क्लेशविवशे नचासौ संपातः
पयसि पयसां पत्युरुचितः ॥२६॥

چو پور هاله به پرواز شد بگیرد ز چو او پرهاله پرید خوش بود بر لندن بال او	به اندر آروی این حرکت مشتاق شد همان گرز بر پیرا او هم کشید که با بجنبر شیرین هنر خود است او

यदचेतनोऽपि पादैः स्पृष्टः प्रज्वल
ति सवितुरिनकान्तः ॥ तत्तेजस्वी पु
रुषः परकृतविकृतिं कथं सहते ॥२७

نهادی قسم باشد نشیمن را همینک صاحب زر و عز و اقبال	ز فیض بهر گردد آتشش را نه بیند کس نقصان افعال

सिंहः शिशुरपि निपताति ॥
मदमलिनकपोलभित्तिषु गजेषु ॥
प्रकृतिरियं सत्ववतां नखलु

कुसुमस्तवकस्येवद्वेगतीस्तोमन
स्विनाम्॥मूर्ध्निवासर्वलोकस्यवि
शीर्येतवनेऽथवा॥३३॥

بود ہر دو شق حال پاکان تمام
چو گل در بیابان کہ بر فرق عام

सन्त्यन्येपिबृहस्पतिप्रभृतयःसंभा
विताःपंचषाःस्तान्प्रत्येषविशेषवि
क्रमरुचीराहुर्नवैरायते द्वावेवग्रस
ते दिनेश्वरनिशाप्राणेश्वरौभासुरौ
भ्रातःपर्वणिपश्यदानवपतिःशी
र्षावशेषीकृतः॥३४॥

بہ جنت مشتری وارند بسیار
ولے راہو نسازد دشمن کار
کہ او سردار از دیوان باشد
بماہ و مہر جنگ او شان باشد
بہ جنگ ہر کس کہ ماند نیم جان خاک
سزد او را نشانیدن تہ خاک

वहतिभुवनश्रेणींशेषःफणा फ
णाकस्थितां कमठपतिनामध्ये
पृष्ठंसदासविधार्यते॥तमपिकुरु
तेक्रोडाधीनंपयोधिरनादरा दहह
महतांनिःसीमानश्चारित्रविभूतयः
॥३५॥

तये ॥ सिंहोजंबुकमङ्कमागतमपि
स्यक्त्वा निहंति द्विपं सर्वः कृच्छ्रगतो
ऽपि वाञ्छतिजनः सत्वानुरूपं फलं ३०

به‌بین کلب خشک استخوانے خورد	همه عمر خود را بسر مے برد
وسے شیر هرگز شغالان را	نگردد پئے لقمهٔ خوان را
چو پنجه زندان شجاعت شعار	ز پیل دهان هم دراز دو ار
همین طور نیکان بوقتِ زبون	ندارند پا را ز جاده برون

लांगूलचालनमधश्चरणावपातं
भूमौ निपत्य वदनोदर दर्शनं च ॥
श्वा पिण्डदस्य कुरुते गजपुङ्गव
स्तु धीरं विलोकयति चाटुशतैश्च
भुंक्ते ॥३१॥

سگے عاجزی خویش ظاهر کند	رخ و بطن خود را نمایان کند
وسے پیل خود را نه سازد ذلیل	خوردنان هم از خوشامد قلیل

परिवर्तिन संसारे मृतः को वान
जायते ॥ सजातो येन जातेन याति
वंशः समुन्नतिम् ॥३२॥

کدامست آن کو نه مرد و نزاد	همان ماند کز نسل او شد زیاد

प्रियान्याय्यावृत्तिर्मलिनमसुभङ्गेप्य
सुकरंत्वसंतोनाभ्यर्थ्याः सुहृदपि
नयाच्यः कृशधनः ॥ विपद्युच्चैः स्थ
यंपदमनुविधेयंचमहतांसतांकेनो
द्दिष्टंविषममसिधाराव्रतमिदम् २८

کند علم را روزی خود کسے بخویشان مفلس ندارد سوال رسیے راستی را نخواہد گذاشت	ز دونان نخواہد گرفتن کسے بوقت زبونی نگردد زحال کہ این خوئے خوش ہست شرست او نگہداشت

क्षुत्क्षामोऽपिजराकृशोऽपिशिथिल
प्रायोऽपिकष्टांदशामापन्नोऽपिविप
न्नदीधितिरपिप्राणेषुनश्यत्स्वपि
॥ मत्तेभेन्द्रविभिन्नकुम्भकवलग्रा
सैकबद्धस्पृहः किंजीर्णंतृणम
त्तिमानमहतामग्रेसरः केसरी॥२९

اسد گر گرسنہ پیر گردد اگر زکاہ کہن او نہ سازد بسر	شود لاغر و جان بلب ہم مگر کہ خواہد ز پیل دمان لقمہ سر

स्वल्पस्नायुवसावशेषमलिनंनि
र्मांसमप्यस्थिगोः ॥श्वालब्ध्वा
परितोषमेतिनतुतत्तस्यक्षुधाशां

नैषुर्वार्त्तिर्जनकथामूकभाव:परेषाम्
न्दषासतोविभङ्गोगुरुष्चाविन्
य:सर्वभूतानुकम्पासामान्य:सर्व
शास्त्रेष्वनुपहृतावीधि:श्रेयसामेष
पंथा॥२६॥

خدر و زید ر بار ز دیگران
به دیگر زبان نیز از حرص آز
ز خدمات مرشد شود بهره یاب
ترحم بر وجانیان های دیر
بدل باش مشغول علم عمل

نباید خدا دوستی را عیان
نه دوزد نظر صاحب اختیار
کند بذل زر حسب مقدور باب
همه علم دان کند کار خیر
که در کار توره نباید خلل

प्रारभ्यतेनखलुविघ्नभयेननीचै:
प्रारभ्यविघ्नविहिताविरमन्ति म
ध्या॥ विघ्नै:पुन:पुनरपि प्रति
हन्यमाना: प्रारभ्यचोत्तमजना:
न परित्यजन्ति॥२७॥

کمینه پست همت از پئے کار
شروع سازد چو شخصے درمیانی
اگر افضل میان بند و پئے کار
بود آسان و یا مشکل نماید

نیی بند و میان تا زیست زنهار
گریزد بیند از کار گرانی
نه تا مرو از و تا زیست زنهار
که مشکل پیش او آسان تر آید

ز صحبت نیک باشد صیقل عقل — ز صحبت نیک باشد داستان نقل
ز صحبت نیک در دارین آرام — ز صحبت نیک باشد حاصل کام

जयन्ति ते सुकृतिनो रस सिद्धाः कवी
श्वराः ॥ नास्ति येषां यशः काये जरा
मरणजं भयम् ॥२४॥

مقدس جسم کو از پیری و مرگ — نه ترسد و اندرین راهم چو یک برگ

सुतः सच्चरितः सती प्रियतमा स्वामी
प्रसादोन्मुखः स्निग्धं मित्रमवञ्चकः
परिजनो निःक्लेश लेशं मनः ॥ आका
रो रुचिरः स्थिरश्च विभवो विद्यावदा
तं मुखं तुष्टे विष्टपहारिणीष्टदहरौ
संप्राप्यते देहिना ॥२५॥

چو رازق رضامند گردد ز کس — بسی نعمت او را دهد در نفس
زن نیک و فرزند صاحب تمیز — هم آقا رضامند و مشفق عزیز
بجو یشان خوش حسب بے عیب پاک — نباشند زر درد و الم هولناک
ز علم و هنر نور چهره منیر — چنین کس ز شاهان بود بے نظیر

प्राणाघातान्निवृत्तिः प्रधन हरणे-
संयमः सत्य वाक्यं काले शक्त्या प्रदा

خلیقان را ضرورت ترکشی نیست	به بدخلقان ضرورت دشمنان نیست
به جنس خود اگر داری تو صحبت	نخواهد شد ترا آتش ضرورت نیست
اگر بیهوده داری با مروت	نیفتد با دو آیت هیچ حاجت
به بد صحبت چه خوف از مارها زیاد	غنی ترکیست در گیهان اسواد
ز زیور رونق شرم و حیا نیست	بگو یا حاجت مالک مکان نیست
به همجنسان ضرورت آشتی نیست	به بیهوده‌دان ضرورت داردی نیست

दाक्षिण्यं स्वजने दया परजने शाठ्यं
सदा दुर्ज्जने प्रीतिः साधुजने नयो नृ
पजने विद्वज्जनेष्वार्ज्जवम् ॥ शौ
र्यं शत्रुजने क्षमा गुरुजने नारीजने
धूर्त्तता ये चैवं पुरुषाः कलासु कु
शलास्तेष्वेव लोकस्थितिः ॥२२॥

بخویشان خود و با دیگر کسان مهر	به نیکان نیکوئی و با بدان قهر
به شاهان عجز با علمان رهی راست	تهور با عدو با زن مدارا ست
بکن خدمات مرشد با دل شاد	هر روی دهر ماند از تو این یاد

जाड्यं धियो हरति सिंचति वाचि स
त्यं मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरो
ति ॥ चेतः प्रसादयति दिक्षु तनो
ति कीर्तिं सत्संगतिः कथय किं न क
रोति पुंसाम् ॥२३॥

هنر هست گنجینهٔ لا تزول
هنر رونق جسم و جان میکند

هنر پیش شاهان رساند کمال
هنر شهرت در جهان می کند

विद्यानाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छ
न्नगुप्तं धनं विद्या भोगकरी यशः सु
खकरी विद्या गुरूणां गुरुः ॥ विद्या
बंधुजनो विदेशगमने विद्या परं दै
वतं विद्या राजसु पूजिता नहि धनं
विद्याविहीनः पशुः २०॥

هنر حسن مردم عیان میکند
هنر عیش و آرام ها می دهد
هنر هست پرستد هنر با ز خویش
قدر میکند پیش سلطان هنر
بود قدر مردم ز علم و هنر

زر نقد خود را نهان میکند
هنر وصف انسان نشان میدهد
نگهبان هنر باشد از دور و پیش
بغیر از هنر هست فاسخ مجبر
بشر بے هنر هست چون جانور

क्षान्तिश्चेत्कवचेन किं किमरिभिः क्रो
धोऽस्ति चेद्देहिनां ज्ञातिश्चेदनलेन
किं यदि सुहृद्दिव्यौषधैः किं फल
म् ॥ किं सर्पैर्यदि दुर्जनाः किमु धनैर्वि
द्याऽनवद्या यदि व्रीडा चेत्किमु भूष
णैः सुकविता यद्यस्ति राज्येन कि
म् ॥२१॥

خدا دوست را با نگاہے حقیر
نہ دیدہ خوبرویان نہ از سیم و زر
چو پیلِ دہان کو بہ گردد بہشت

ببین گوش و رہ از دارد فقیر
نہ بیند دو دل خویش سا آن بشیر
نہ استد ز شاخِ کنون او ز گشت

अम्भोजिनी वन निवास विलास मेव
हंसस्य हान्ति नितरां कुपितो विधा
ता ॥ नत्वस्य दग्ध जलभेद विधौ
प्रसिद्धां वैदग्ध कीर्तिमप हर्तुमसौ
समर्थः ॥१८॥

چو بر ہما شود خشمگین ہنس را
وے خوئے ذاتی کہ دارد ببر
عجب جوہری داد او را خدا

کند خشک ہم چشمۂ خلزار درا
نبوعی ز طبعش نہ گردد بدر
کند آب از شیر فوراً جدا

केयूरा न विभूषयन्ति पुरुषं हारा न
चन्द्रोज्ज्वला न स्नानं न विलेपनं
न कुसुमं नालंकृता मूर्धजाः ॥ वा
ण्येका समलंकरोति पुरुषं या सं
स्कृता धार्यते क्षीयन्ते खलु भूषणा
नि सततं वाग्भूषणं भूषणम् ॥१९॥

نہ بازو کند زینت مرد را
ضیا از صندل نہ تسبیح دُر

نہ غسل کہ شوید رہ گرد را
نہ گلہاے خوشرنگ زلفین جعد

قیامم بر حبا کند عالم همه دان نشود ظاهر ز علم و دانشش و عقل ز افلاسش نه گردد هیچ کم علم فروشد جوهری ارزان چو نادان	و بد تعلیم طفلان سبق خوان بماند گر حشمت او گرچه بی نقل نزیبد شاه را افلاسش از علم نه گردد اصل آن کم مطلقا زان

हर्तुर्याति न गोचरं किमपि शं पुष्णा
ति यत्सर्वदा ह्यर्थिभ्य प्रतिपाद्यमा
नमनिशं प्राप्नोति वृद्धिं परां ॥कल्पां
तेष्वपि न प्रयाति निधनं विद्याख्य
मंतर्द्धनं येषां तान्प्रतिमानमुज्झत नृ
पाः कस्तैः सह स्पर्द्धते १६

برهمن که دارد بدل یاد رب نزیبد ز شاهان تکبر باد بطلبا کند وقف علم و هنر بافزایش علم مصروف کار	پی علم باشد با دتاب و تب که آگاه حق هست و هم نیک خو نه دزدی نگیرد از وی یک شر ازین به نباشد درین روزگار

अधिगत परमा र्थान्पण्डितान्माव
मंस्था स्तृणमिव लघुलक्ष्मीर्नैव ता
न्संरुणद्धि ॥ अभिनवमदलेखा-
श्याम गण्डस्थलानां न भवति बिस
तन्तुर्वारणवारणानाम् ॥१७॥

بستانِ خرد دم شود فرقِ ز حیوان | بہ شکل مردمان باشند نادان

येषां न विद्या न तपो न दानम् ज्ञा
नं न शीलं न गुणो न धर्मः ॥ ते मर्त्य
लोके भुवि भारभूता मनुष्यरूपेण
मृगाश्चरन्ति ॥१३॥

نہ اہلِ حقیقت نہ دانائے علم
نہ تعلیم مرشد نہ جود و سخا
اگرچہ کشندہ ستان در مردمان

ریاضت نہ خیرات نے طبع حلم
چو بار زمین آمد آن بے حیا
ولے خوئے شان ہست شکلِ ددان

वरं पर्वत दुर्गेषु भ्रांतं वनचरैः सह ॥
न मूर्खजन संपर्कः सुरेन्द्र भवनेष्वपि १४

بکوہ بیابان بہ ہمراہ دد | بہ است از بہشت کہ باب بے خرد

शास्त्रोपस्कृत शब्द सुन्दर गिरः शि
ष्य प्रदेयागमा विख्याताः कवयो
वसन्ति विषये यस्य प्रभोर्निर्धनाः ॥
तज्जाड्यं वसुधाधिपस्य कवयो
ह्यर्थं विनापीश्वराः कुत्साः स्युः कु
परीक्षका हि मणयो यैर्घतः पाति
ता ॥१५॥

چو گنگا ز جنت بہ آورد سر — بہ فرق مہادیو شد جلوہ گر
وز آنجا بکوہ ہمالہ رسید — زمین پاک کردہ بدریا رسید
چو شد نزل او از فلک بر زمین — ز دریا فرو شد بزیر زمین
کسی کو نہ معبود دارد نہ یاد — فنا میشود زود در حدص باد

शक्योवारयितुंजलेनहुतभुक्छत्रे
णसूर्यातपो नागेन्द्रोनिशितांकुशे
नसमदो दण्डेनगोगर्दभौ ॥ व्याधिर्भे
षजसंग्रहैश्चविविधैर्मन्त्रप्रयोगैर्वि
षम् सर्वस्यौषधमास्तिशास्त्रविहि
तंमूर्खस्यनास्त्यौषधं ॥११॥

ز آب آتش گرم گردد فرو — بود پرتو مہر در ظل گرد
شود فیل مست از کمچک چون غلام — خر و گاؤ از چوب گردد بہ رام
پئے درد درمان بود پر اثر — بماران کثردم فسون کارگر
ولے بہر جہلا ز پروردگار — نہ شد دارو سے نافع سازگار

साहित्यसंगीतकलाविहीनः सा
क्षात्पशुःपुच्छविषाणहीनः ॥ तृ
णंनखादन्नपिजीवमानः तद्भाग
धेयंपरमंपशूनाम ॥१२॥

نداند معنی و منطق نہ آن کس — نہ نظم و نثر بس لعنت بر آن کس

مرا چون شد گمان بر دانشِ خویش
بفهمیدم که من هستم همه دان
چو بنشستم بنزد عارفان باز
همان دم دور شد از من غرورم

تکبر دیدم چو فیل مست دل ریش
بشیر طبعم جهالت خو بمیدان
بدانستم ز حمق خویشتن راز
چو آمد هوش کل حاصل شد مرورم

कृमिकुलचितंलालाक्लिन्नंविगंधि
जुगुप्सितम् निरुपमरसंप्रीत्याखा
दन्नरास्थिनिरामिषम् ॥ सुरपति
मपिश्वापार्श्वस्थंविलोक्यनशङ्क
ते नहिगणयतिक्षुद्रोजन्तुःपरिग्र
हफल्गुताम्॥९॥

سگی کو خورد استخوان کہن
بیابد ز لذت مفت خوان
ہمین طور شخصِ حماقت شعار

چو او تر شود از لعاب دہن
نداند وسیلے ز راز اصلی نشان
نہ تابد ز شہوت پئے یادگار

शिरः शार्वंस्वर्गात्पतति शिरसस्त
क्षितधरं महीध्रादुत्तुङ्गादवनिम
वनेश्चापिजलधिम् ॥ अथोगङ्गासे
यं पदमुपगतास्तोकमथवा विवे
कभ्रष्टानांभवतिविनिपातःशतमु
खः॥१०॥

मधुविन्दुनारचयितुंक्षाराम्बुधेरीह
ते नेतुंवाञ्छतियःखलान्पथिसतां
सूक्तैःसुधास्यंदिभिः॥

زنیلوفرے بار گیرد ظہور
کند چاک خارا گلِ برگ نور
وسلے از دوا ہیچ در روزگار

کہ پیل دمان مید سازد بشور
شود شیرین از قطرہ بحر شور
نہ بخشد نفع از پئے عقل خوار

स्वायत्तमेकांतगुणंविधात्रा विनि
र्मितंछादनमज्ञतायाः॥विशेषतः
सर्वविदांसमाजेविभूषणंमौनमप
ण्डितानाम्॥७॥

تنہا نشیند اگر بے شعور
گزیند خموشی بہ پیش وقار

کہ آگاہ گردد ز حال ہمہ
نگردد بمجلس حال او آشکار

यदाकिंचिज्ज्ञोऽहं द्विपइवमदांधः
समभवंतदासर्वज्ञोऽस्मीत्यभवद
वलिप्तंममममनः॥यदाकिंचित्किं
चिद्बुधजनसकाशादवगततदामू
र्खोऽस्मीतिज्वरइवमदोमेव्यपग
तः॥८॥

نه دانا فهمد از ایشان گفتن
چو دانا هیچ باشد از دان کار

که دانا واند از راز نهفتن
ز نیه هم نفهمد کار

प्रसह्यमणिमुद्धरेन्मकरवक्त्रदंष्ट्राङ्कु
रात् समुद्रमपिसंतरेत्प्रचलदूर्मिमा
लाकुलम् ॥ भुजङ्गमपिकोपितं शिर
सि पुष्पवद्धारयेत् नतु प्रतिनिविष्ट
मूर्खजनचित्तमाराधयेत् ॥४॥

توان از نهنگان برآورد دُر
توان مار را داشتن هم بسر

توان کرد بر بحر پیاده گذر
نه فهمد وسلے بیچدان از خبر

लभेत सिकतासु तैलमपि यत्नतः पी
डयन् पिबेच्च मृगतृष्णिकासु सलि
लं पिपासार्दितः ॥ कदाचिदपि पर्य
टञ्छशविषाणमासादयेत् नतु प्र
ति निविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत् ५

توان از زمین روغن در کشید
توان یافت شاخ از بت از کوه و دشت

ز ریگ روان آب آید پدید
نه فهمد وسلے ہیچدان سرگذشت

व्यालं बालमृणालतन्तुभिरसौ रोद्धुं
समुज्जृम्भते छेत्तुं वज्रमणीञ्छिरी
षकुसुमप्रान्तेन सन्नह्यते ॥ माधुर्यं

॥श्रीगणेशायनमः॥

नीतशतकंप्रारभ्यते

दिक्कालाद्यनवच्छिन्नानन्तचिन्मात्र
मूर्तये॥ स्वानुभूत्येकसारायनमः शा
न्तायतेजसे॥१॥

کنم سجدہ ذوالجلال وحلیم
نیارد کسی وصف او در شمار

کہ او را نہ پیوستہ حیات گلیم
ہویدا ست از صنعت روزگار

यांचिन्तयामिसततंमयिसाविरक्तासा
प्यन्यमिच्छतिजनंसजनोऽन्यसक्तः॥
अस्मत्कृतेचपरितुष्यतिकाचिदन्या
धिक्तांचतंचमदनंचइमांचमांच॥२॥

زنے را کہ میخواستم چو جان
ہمون ربط دارد بہ دیگر زنے
تبرا بر زنہا بما نیز ہم

ہمے دارد او انس با دیگران
ہمان زن بخواہد مرا از ہمہ
تبرا بہ عشق زنان نیز ہم

अज्ञःसुखमाराध्यःसुखतरमाराध्य
तेविशेषज्ञः॥ज्ञानलवदुर्विदग्धंब्रह्मा
पितंनरंनरंजयति॥३॥

॥ श्रीगोपालोजयतितराम ॥

بھرتری ستک

مول معہ ترجمہ فارسی نظم

مترجمہ جناب راجہ گھنشیام سنگھ صاحب بہادر رئیس مرسان ضلع علیگڈھ

भर्तृहरिशतक

फारसी अनुवाद सहित

श्री युत राजा घनश्याम सिंह साहिब बहादुर
रईस मुर्सानकृत

مطبوعہ مطبع شیام کاشی متھرا باہتمام لالہ شیام لال مالک مطبع

मतबए श्याम काशीमथुरा में लाला
श्यामलाल के प्रबंध से
छपा.